ढूण्ढकमतसमीक्षानामपुस्तक

श्री न्यायांभोनिधि श्री महामुनि
श्रीमत्आत्मारामजी आनंदविजय
जी के आज्ञानुसार श्रावक
लाला जयदियाल विरचित ।

देश पञ्जाब गुजरावाला मां ।

लाला काहनचंद नानकचंद

नामाख्य श्रावके ज्ञानवृद्धार्थे
आपुस्तक छपावी प्रसिद्धकर्यु छे ।

——c——

सन्न १८८० संबत् १९४७
श्रावणवदि १३ जुलाई १४

ऐङ्गलो संस्कृत यन्त्रालय अनारकली लाहौर में
लाला नारामचन्द मैनेजरके प्रबन्ध से छपा ५०० ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

॥ (६०) श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ विज्ञापन ॥

समस्त जैनी भाइयों को ग्रन्थकर्ता नमी भूति पूर्वक यह प्रार्थना करता है कि शीघ्रता लिखने से वा दृष्टिदोष से जरूर लिपिदोष रहजाताहै यह नियम है। और इस ग्रन्थ में जो कोई लिपि दोष रह गया हो, सो मुझ पर कृपा नज़र से वाचनार सज्जन पुरुषो! यह सुधार कर वाचना, और इस ग्रन्थ में जो २ सूत्रों के पाठ लिखे हैं सो सभी सूत्रों के अक्षरानुसार लिखे हैं, पर शीघ्रता के लिये दूसरी दफा सूत्रों से मुकाबला नहीं किया गया, इस लिये कोई अक्षर बिन्दु ह्रस्व, दीर्घ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लग मात्रादिक जो कोई फर्क रहगया होगा सो सूत्र से मुकावला करके सज्जन पुरुषो ! सुधारकर वाचना, यह ग्रन्थकर्ता की आज्ञा है। और उन भाइयों का उपकार माना जावेगा, और ग्रन्थ की रचना जो बुद्धिमान करते हैं, सो खल लोकों के लिये नहीं करते किन्तु आत्मार्थी भवभीरु और जिनेन्द्रदेवजी की आज्ञा के रसिक प्राणी है, उन ही को सत्यधर्म्म में लाने के लिये ग्रन्थकर्ता परिश्रम करतेहैं, और इस ग्रन्थकर्ता का आशय प्रगट किसी की निन्दा करके किसीको आत्माक्लेश देनेका नहींहै। और जगत में पण्डिताई की मशाहूरीका आशय भी नहींहै, सिर्फ आत्मार्थी पुरुष जो भूलसे बनावटी जैनमतको सचा जैन मत जान रहे हैं उन के उद्धारके लिये अर्थात् उन ही को सचा जैनमत दरसाने के लिये

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रन्थकर्ता ने इतनी मेहनत करी है जो इस ग्रन्थ को वाच कर कोई जीव श्रीजिनेन्द्रजी भाषित सत्यमार्ग पर आजावेगा, वा अन्तर से सुद्ध सरधान कर लेवेगा तो ग्रन्थकर्ता की मेहनत सफलता को प्राप्त होगी, क्योंकि यह मनुष्य जन्म पाना हरेक प्राणी को वारंवार बहुत दुष्कर है, ऐसा चिन्तामणि यह मनुष्य जन्म पायकर जो प्राणी सत्यधर्म की खोजना नहीं करता, सो मूर्ख से मूर्ख और अपनी आत्मा का परम शत्रुभूत है। इस लिये चाहिये कि प्रथम हरेक भाई सत्यधर्म की पहचान जैन शास्त्रद्वारा करे, पीछे साधु वा श्रावक वा सम्यक् दृष्टि ये तीन प्रकार के धर्म में से जिस धर्म के योग्य अपनी आत्मा को जाने, उसी धर्म में स्थित होकर श्रीजिनेन्द्रदेव की आज्ञानुसार क्रिया करने से वह पुरुष शीघ्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हो भव रूप अटवी से पार हो कर, अपनी आत्माको शाश्वत सुखरूप सागर में आनन्द को प्राप्त करता है।

॥ चौपई ॥

ढूण्ढकमत समीक्षा एह पठन करे गुण पावे तेह। जिन सिद्धान्त अनुसार श्रद्धाण तुरत होए जिनमतको जाण ॥ १ ॥ एह ग्रन्थ अति उत्तम कह्यो सूत्र साक्षथकीगह गह्यो। जन्म सफल जग तेहनो जाण शास्त्र नाम जे करे प्रमाण ॥ २ ॥ जैनसिद्धान्त सो नहीं जिसप्रीत योरे कहे जिन वचन अलीक। एह सम अवर पाप नहीं जगमें समभव्देष जिन पुस्तक दिल में ॥ ३ ॥ जिन सिद्धान्त अनुसार विचारा जिन को श्रवण प्रीत अतिप्यारा। तेही

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जीव जग उत्तम कहीए सम्यक्त मूल दूनोपर लहीए ॥ ४ ॥ प्रथम करीभविशुद्धश्रद्धान पाछे कर किरिया मंडाण । अंक कैमतो टिपसही दसवै कालिक सूत्रे लही ॥ ५ ॥ ज्ञान बिना किरिया निकाम बिनसरद्धान ज्ञाननहीं काम तिस कारण भवी दिल में लषो, सूत्र मांहि मत दूषण कडो ॥ ६ ॥ गुजरवाल श्रावक जयदियाल श्रीगुरुवृद्धि विजेपगदास । सुभपर प्रभू की किरिपा बड़ी जन्मसफल प्रभू भगतें करी ॥ ७ ॥ तास शिष्य जग मांहि विष्यात श्रीआनन्दविजे गुरुराज । तस राजे एहग्रन्थ बनाय तिन गुरू को एह लीयो दिषाय ८ ॥ तिनके ढूंढकमतखंडणे अनुसार छपाण एह ग्रन्थ उदार । तिनका भगत जगत विष्यात नानक चन्दनामउसवाल ॥ ९ ॥ संवत विक्रमउनीसमैं छे चाली उपरते गिणे । सुकल पञ्चमी फा-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

गुण मास पूरण ग्रन्थ कियो हुलास ॥ १० ॥
गुजरवाल मांहि विख्यात श्रावक कर्मचन्द
गुणपात्र । आदि अन्त लौ सोधयो सही शा-
स्त्रानुसारे विरचित करी ।

—o—

इस ढूण्ढकमतसमीक्षा नाम पुस्तक में ५१
प्रश्नोत्तर हैं, तिस को स्थूल अनुक्रमिणिका प्र-
श्नोत्तर के अङ्कोंपर संक्षेपमात्र इसतरों से है।

प्रश्न १ २ में—सूधर्मा स्वामी के बड़ा ग्यारा
अंगसूत्र थे वो यही है जो वर्तमान देखने में
आते हैं ऐसे कहने वाले पूर्व पक्षी को सूत्र
की साथ से ऐसे सिद्धकर दिषलाया है कि वो
ग्यारां अंगसूत्र अब के समय में नहीं हैं ।

प्रश्न ३ में—वर्तमान समय में यारां अंगसूत्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आचार्यों को छत हैं तो फिर पूर्वपक्षीयों मे इनको गणधर रचित क्योंकर माने ऐसे पूछनेवालेको यथार्थ रीति से उत्तर दिया है।

प्रश्न ४ में—अब के समे के सूत्रादि आचार्यों के करे हैं ऐसा किसी सूत्रके लेखसे साबत नहीं है ऐसा कहने वाले पूर्व पक्षी को महा नसीत सूत्रके पाठ में प्रगट कथन दिषलाया है।

प्रश्न ५ में—बत्तीस सूत्र में जिन प्रतिमा और उसकी पूजा का पाठ कोई नही ऐसे कहनेवाले पूर्वपक्षी को बत्तीस सूत्र में बहुत पाठ हैं ऐसी कथन किया है।

प्रश्न ६ ७ में—बत्तीस सूत्र का कथन आपस में मिलता है ऐसे कहनेवाले पूर्वपक्षी को बत्तीस सूत्रका कथन आपस में नही मिलता ऐसे दिषाया है।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न८ में—सूत्र और ग्रन्थ और पयन्ने में जो पूर्व पक्षी भेद समझते हैं उन को सूत्र का पाठ दिषाय कर इन तीनों में अभेदता है ऐसी हित शिक्षा करी है।

प्र० ९ में—पूर्वाचार्यों ने टीकादि जो रची है सो अपनी मतिकल्पना से नहीं रची ऐसा दरसाया है।

प्र० १० में—सूत्रों का अर्थ टीकादि से मानना परं अक्षरार्थ नहीं करना, ऐसी श्री अनुयोग द्वारादि सूत्रों के पाठ से दिखाया है।

प्र० ११ में—टीकाके अनुसार वाला बोध रूप भाषार्थ श्रीपासचन्दजीने वनाया है

प्र० १२ में—पूर्व पक्षियों के सूत्रों का भाषा रूप अर्थ पासचन्दकृत अर्थ से न मिलनेका मतलब दिखाया है।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न १३ में—बत्तीस सूत्र आपस में बहुत विरोध रखते हैं अर्थात् एक दूसरे से नहीं मिलते ऐसे दरसाया है ।

प्रश्न १४ में—जो पूर्वपक्षी स्याद्वाद को जहिर कहते हैं उन को जैन सिद्धान्तों का और ढूण्ढकमत का भी अज्ञात दरसाया है।

प्रश्न १५ १६ में—जो पूर्वपक्षी व्याकर्ण को व्याधीकर्ण कहते हैं उनको सूत्र की साख से व्याकर्ण शास्त्र जैन मत की एक जड़ है ऐसे दरसाया है ।

प्रश्न १७ १८ १९ २० में— दया और हिंसा का स्वरूप अच्छी तरह से दरसाया है ।

प्रश्न २१ में—तुम श्रावक होकर सूत्र क्यों पढ़ते हो ऐसे कहने वाले को यथार्थ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उत्तर दिया है और यह भी दरसाया है कि सूत्रका पढ़ना और है और देषना और है।

प्रश्न२२ में—ढूण्टकलोक भी टीकादि मानते हैं ढूण्टकोंके करे ग्रन्थों में दिखाया है।

प्रश्न २३ में—साधवी बज़ार तथा चुरस्तादि में न उतरे न रहे सूत्रानुसार ऐसा दिखाया है।

प्रश्न २४ में—साधवी चौकी पाट पाटले पर न बैठे और साधु बैठे ऐसे दरसाया है।

प्रश्न २५ में—साधवी को नवीन ग्रन्थ बनाना और पुरुषों की सभा में व्याख्यान करना इन दोनों बातकी मन्हाई दिखाई है।

प्रश्न २६ में—श्रावक को ग्रन्थ रचने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

की जैन मतमें मन्हाई नहीं ऐसे दिखाया है

प्रश्न २७ में—यती लोगों ने जैन के पुस्तक नहीं बिगाड़े ऐसे दिखाया है ।

प्रश्न २८ में—द्रव्य पूजा श्रावक को तारणे वाली है तो साधु क्यों नहीं करता ऐसे करने वाले को सूत्र के साथ से उत्तर दिया है ।

प्रश्न २९ में—सूत्रों में जहां २ पाठांतर आते हैं उनका मतलब दिखाया है ।

प्रश्न ३० में—जैन तत्वादर्श में बारा योजन की धजा फड़ाई कही उस पर शंका करनेवाले को अच्छी तरह से उत्तर दिया है

प्रश्न ३१ में—धर्म कार्यके लिये लब्धी फोड़ने में कोई प्रबल दूषण नहीं है ऐसे दरसाया है ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ३२ में—जैन ग्रन्थों में पूर्वा पर बिरोध बतलाने वाले को हित मिथ्या कथन करी है।

प्रश्न ३३ में—दिशा फिरकर पानी से सुचि न करनेवाले साधु को दण्ड बतलाया है

प्रश्न ३४ में—मुखपत्ती मुखपर बांधने में बज्जत दूषनहै और साधुके मुखपर मुखपत्ती बंधी ज़ई नहीं ऐसे साबत किया है।

प्रश्न ३५ में—धर्म का स्वरूप संक्षेप मात्र बज्जत अच्छी तरह से कथन करा है।

प्रश्न ३६ में—पूर्वपक्षीयों को साधुका कलेवर फूकदेना अयुक्त है, क्योंकि व्यवहार सूत्र में परठना लिखा है।

प्रश्न ३७ में—वृहत्कल्प सूत्रके अनु-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सार ढूंढक साधुओं को उपाश्रय से बाहिर रात को वा संध्या को जंगल अर्थात् दिशा जाना चाहिये पर उपाश्रय में न फिरना चाहिये ।

प्रश्न ३८ में—हेमचन्द्र सूरी के साढे तीन करोड़ श्लोक रचने में जो पूर्वपक्षी शंका करते हैं उन को उत्तर देकर उनकी शंकाओं का निवारण किया है ।

प्रश्न ३९ में—महानसीत सूत्र नया जुड़ा है ऐसी कहनेवाले पूर्वपक्षी को उत्तर देकर महानसीत सूत्र पुराणा साबत किया है

प्रश्न ४० ४१ में—चार निक्षेपे का स्वरूप दृष्टांत सहित सुन्दर रीति से कथन करा है ।

प्रश्न ४२ में—ढूंढक लोकोंने जोण से

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

३२ बत्तीस सूत्र माने हैं उन का नाम कथन किया है।

प्रश्न ४३ में—नंदी सूत्र में जितने सूत्र पयन्ने मानने लिखे हैं उनकी संख्या सूत्र के पाठ सहित कथन करी है।

प्रश्न ४४ में—धर्मोपदेश करना किस मुनिको आज्ञा है उस का स्वरूप महानसीत सूत्रानुसार कथन किया है।

प्रश्न ४५ में—उत्सर्गापवाद का स्वरूप अच्छी तरह से कथन किया है।

प्रश्न ४६ में—पूर्व पच्छी नो धर्म दया में कहतेहैं उनको सूत्रके न्यायसे धर्म आज्ञा में दिखाया है।

प्रश्न ४७ में—जिन प्रतिमा का अधि-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कार सर्वे श्रावकोंके अधिकार में था ऐसा नंदी सूत्र के पाठ में दिखाया है।

प्रश्न ४८ में—महानिसीत सूत्र में जिन प्रतिमा की पूजा का पाठ दिखलाया है

प्रश्न ४९ में—यथा योग्य धर्मोपदेश करने की रीति का कथन दशा श्रुतस्कंध सूत्रानुसारे।

प्रश्न५० में—पूजेरिउं के साथ चर्चा करने से ढूंढक लोक इस प्रकार ला जवाब होते हैं ऐसा दिखाने के लिये ग्रन्थ करताने खुद अपनाही उदाहरण लिख दिखलाया है।

प्रश्न ५१ में—ज्ञानदीपिका ग्रन्थ का थोड़ासा रहस्य प्रगट करके आगे ग्रन्थ बनाने का मतलब और ग्रन्थकी समाप्ती करी है।

——o——

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

॥ ६० ॥ श्रीवीतरागाय नमः ।

॥ चौपई ॥

श्रीगुरु बुद्धि विजयमनधरी श्रीआनंदविजय अनुसरी । श्रीजिन वचन अनुसार विचारा प्रश्नोत्तर कुछ कहूं अधिकारा ॥ १ ॥

प्रश्न १—ढूंढक साधु कहते हैं कि यारां अंगसूत्र आचारंगादि जो सुधर्मास्वामी के वक्त थे वो यही हैं जो वर्त्तमान समय में है यह बात ठीक है जां नही । उत्तर—यह उन का कथन शास्त्रानुसार न होने से ठीक नही है ।

प्रश्न २—वह सूत्रका प्रमाण कौनसा है जिनसे ढूंढक साधुओं का कहना ठीक नही । उत्तर—वह सूत्र का प्रमाण यह है श्री नंदी सूत्र में गाथा ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जेसिइमो अनुउगो पयरइयजोवि अढ्ढभरहंमिबहुनयरनिगायजसे ते वंदे स्कंदिलायरिए ॥ ३६ ॥

इस गाथा का भावार्थ यह है उसस्कंध-लाचार्य को बंदना करताहूं जिस भगवंतका किया सूत्रार्थरूप अनुयोग भरताई में एतले आधे भरतक्षेत्र में प्रवृत्त होरहा है, आगे को इक्कीस हजार वर्ष तक यही सूत्रार्थरूप अनु-योग चलेगा। इससे साफ जाहिर है जो विद्यमान सूत्रार्थरूप आगम है वो श्रीस्कंधला-चार्यके किये हुए हैं और देखिये श्रीसमवा-यांग सूत्र तथा नंदी सूत्रके मूलपाठ में ऐसा कथन है द्वादशांग सूत्र कितने २ हैं आचा-रंगसूत्र का १८००० पद है सूयगडांग सूत्र का ३६००० पद है इसी तरह ग्यारां अंग

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्रों में पदोंकी संख्या दुगुणी दुगुणी वधाय
लेनी और एक पद संखग्राते अक्षरों का है
ऐसा मूल पाठ में ही कथन है और एक पद
के अक्षरों की जितनी संखग्रा है वो श्री अनु-
योग द्वार की टीका में श्री हेमचन्द्र सूरीजी
लिखते हैं उस मुजब तो अब का आचारंग
सूत्र शयत १० वा १५ पदका होयगा तो फिर
अबकी समय में जो आचारंगादि ग्यारां अंग
सूत्र विद्यमान है वो सुधर्मास्वामी के करे
मानने कैसे सिद्ध होए और जो अब के समय
के ग्यारांअङ्गसूत्र हैं वो बत्तीस अक्षरा श्लोकके
प्रमाणसे जितने २ हैसो हेठले यन्त्रसे जान लेने
वो भी ठास दुगुने नही है किन्तु कम बेश है
और जो नंदी सूत्र में ग्यारां अङ्ग सूत्रों के
पदों की संखग्रा जितनी २ कही है वो पहिले
से दूसरा दुगुना दूसरे से तीसरा दुगुना दूस

तरह से ठाम दुगुनी कही है सो भी हेठले यन्त्र से जान लेना। तर्क—संख्यात गिनती किसको कहते हैं। उत्तर—प्रथम ५४ अङ्क लिखने उसके आगे१४०बिन्दीआं लिखनीआं उस की जितनी संख्या होती है, उस को उत्कृष्ट संख्यात गिनती प्रहेलिका नाम से श्रीअनुयोगद्वार में लिखा है इस लिखने का हमारा मतलब यह है संख्याते अक्षर का एक पद सूत्र में कथन करा है तो एक पद के कितनेक अक्षर होते हैं विचारकर देखो।

१८००० पद आचारंगका आगे था जिस का अब २५०० श्लोक प्रमाण है।

३६००० पद सूयगडांग सूत्र का आगे था जिस का अब २१०० श्लोक प्रमाण है।

७२००० पद गणांग सूत्र का आगे था, जिस का अब ३७७० श्लोक प्रमाण हैं।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१४४००० पद समवायांग सूत्र का आगे था जिस का अब १६६७ श्लोक प्रमाण है।

२८८००० पद भगवती सूत्र का आगे था जिस का अब १५७७२ श्लोक प्रमाण है।

५७६००० पद ज्ञाता सूत्र का आगे था जिस का अब ५५०० श्लोक प्रमाण है।

११५२००० पद उपाशक दशा सूत्र आगे था जिस का अब ८१२ शलोक प्रमाण है।

२३०४००० पद अन्तगढदशा सूत्र आगेथा जिस का अब ९०० शलोक प्रमाण है।

४६०८००० पद अणुत्तरोववाई सूत्र आगे था जिस का अब १९२ शलोक प्रमाण है।

९२१६००० पद प्रश्नव्याकरण सूत्र आगेथा जिस का अब १२५० शलोक प्रमाण है।

१८४३२००० पद विपाक सूत्र आगे था जिस का अब १२१६ शलोक प्रमाण है।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जोड़ ३६८४६००० पद प्रमाण ११ अङ्ग आगे थे जिस के अब जोड़ ३५६७८ श्लोक प्रमाण है, अब बुद्धिमान को सोचना चाहिये कि पक्षपात छोड़ कर इस सूत्र के लेख से वो लेख मिला कर देखे जो पार्वतीजी ने ज्ञानदीपिका पृष्ट २८६ पर ऐसा लिखा ११ अङ्गसूत्र वोही अबहै जोनन्दीसूत्र समवायांग सूत्र में जिनों का कथन है, हे मित्र वह सूत्र अब नहीं है अबके सूत्र जो है सो आचार्यों की कृत है इति ॥ २ ॥

प्रश्न ३—उपरले लेख से तो साफ मालूम होता है जो विद्यमान अब के यारां अङ्गसूत्र हैं वे सुधर्मा स्वामी की कृत नहीं, किंतु नये आचार्यों की कृत है तो फिर ढूंढक लोकोंने सुधर्मा स्वामी के करे क्यों माने इस का हेतु क्या है। उत्तर—मेरे को इस मानने में २

हेतु मालूम होते हैं, एक सूत्रों के न मानने से सूत्रों की आशातना होती है, और सूत्रों की आशातना के प्रभाव से सूत्रों में कहा मतलब उन की दृष्टि में नहीं आता, दूसरा नन्दी सूत्र में लाखों जैन ग्रन्थ जो यारां अङ्गों की तरह भगवानकी बाणीरूप मान ने कहे हैं, उन को न माननेके लिये यारांअङ्ग सूत्र गणधर रचित ठहराय कर बाकी के आचार्यों को कृत ठहराय कर उथाप दिये, असली मतलब यह है कि उन बहुत सूत्रों में खुलासा खुलासा पाठ जिन प्रतिमा मानने के हैं और इन लोकों को जिन प्रतिमा जाने अपने देव की मूर्ति के साथ बड़ा भारी द्वेष है, इसलिये करोड़ा जैन पुस्तक जो पूर्वाचार्यों के करे विद्यमान भंडारियो में मजूद हैं, उन का मानना छोड़ दिया। इति ३ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ४—किसी सूत्र में खुलासा पाठ भी है जो सुधर्मा स्वामी कृत १२ बारां अङ्ग से न्यारां अङ्ग सूत्र हैं वे नये रचे गये।

उत्तर—श्रीमहानिसीत सूत्र के तीसरे अध्ययन में तेरे प्रश्न का उत्तर है ॥ यतः ॥

तछबहूएहिंसुयहरोहिं समिलिउए संगोवग दुवालसंगाउसूयसमुद्दाउं अन्नमन्नअंगाउवंगासूय स्कंधअशयणु देसगाणं सुमुञ्चिणिउणं किंचि किंचि संवछभाएं एछिंलिहियं तिणिउणसक वकयति ॥

अस्यार्थः—बहुत आचार्यों ने मिल कर पूर्वले बारा अङ्गसूत्ररूप सागर में से थोड़े २ अङ्ग उपगादि सूत्र नये लिखने लायक पु-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्तकों में लिखे हैं एतले अब के समय में जो श्रुत ज्ञानरूप सूत्र विद्यमान हैं वे पूर्वले १२ अङ्गसूत्र के अनुसार ही रचना होने से कुछ जैन वर्ग में एतले कुछ जैन मत में प्रमाणिक माने जाते हैं ॥ इति ४ ॥

प्रश्न ५—क्या ढूंढक लोगों ने बत्तीस सूत्र माने हैं, उन में जिन प्रतिमा का अधिकार नहीं है। उत्तर—बत्तीस सूत्र मानने से बत्तीयों में नन्दीसूत्र माना गया तो लाखों जैन पुस्तकें जो नन्दीसूत्र में मानने कहे हैं वे सब ही माने गये, पर ढूंढक भाई नन्दीसूत्र तो मानते हैं, और उस नन्दी सूत्र में टीका निर्युक्ति और बहुत सूत्र परकर्णादि मानने कहे है, उनको नहीं मानते तो फिर नन्दी सूत्र कैसे माना गया, यही मर्म समझना मुशकल है, असली बात तो यह है कि इन

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढूंढक लोकोंने सोचा, बड़त सूत्रों के मानने से जिन प्रतिमा की चर्चा में हमारे को जवाबदेना मुशकल होजावेगा और जोबत्तीस सूत्र में जिन प्रतिमामानने के पाठ हैं उनका अर्थ तो हम फेर फार करके भोलि२श्रावकों को अपने फन्दे में फसाय लेवेंगे परंजो आत्मार्थी हो वह मत का पक्ष छोड़कर देखेगा तो बत्तीस सूत्रों में बड़त पाठ है, जिन से साबत है जैन मत में जिन प्रतिमा का पूजन मोक्ष के वास्ते श्रावक को है सो पाठ देखने की इच्छा हो तो श्रीजसविजयजी उपाध्याय कृत कुण्डीतवण तथा श्रीमत आत्मारामजी कृत सम्यक्तसल्योद्धार पुस्तक में देखलेना सूत्रों के पाठ और ढूंढकोंकी करी कुतर्कों का समाधान अच्छी तरहों से किया है ॥ ५ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ६—हमने सुना है बत्तीस सूत्र अवि-रोध एतले माहो मांहि मिलते हैं और जो बाकी के सूत्रादि हैं वे बत्तीस सूत्रों से नहीं मिलते इसलिये ढूंढकलोक बत्तीस सूत्र मानते है। उत्तर—उनका यह कथन ढूंढक लोकों को अपने फंदे में कैम रखने के लिये है पर असली मतलब उनका जिन प्रतिमा के उथापने का है ॥ इति ॥ ६ ॥

प्रश्न ७—बिना प्रमाण यह तुमरा कहना कैसे माना जावे क्योंकि जां तुम बत्तीस सूत्रों के साथ बाकी के सूत्रों का अविरोधपना सिद्ध करो जां जैसे और सूत्रों में विरोध है ऐसे बत्तीस सूत्रों में विरोध दिखलावो तब हम जानेंगे, जैसे बत्तीस सूत्रों में विरोध है ऐसे औरों में भी है तो जां तो सर्व सूत्र गन्थ पयन्ने टीका भाष्य निर्युक्ति चूर्णादि मानने योग्य है

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जां परस्पर विरोधी होने से सर्व ही त्यागने योग्य है, उत्तर—सूत्रोंमें और पयन्ने ग्रन्थों में कोई विरोध नही है, सिरफ अपेक्षा न समभने से तुझे विरोध फरक मालूम होता है क्योंकि कोई उत्सगसूत्र कोई अपवाद सूत्र कोई विधिवाद सूत्र कोई उद्दम सूत्र कोई भयानक सूत्र इत्यादि बहुत भेद सूत्रों के हैं सो समुद्र सरिषी वुद्धीकेधनी पूर्वाचार्य टीका निर्युक्ति भाष्यकार महाराज सूत्र की अपेक्षा के जान कार थे वो बहुत फर्कों का स्वाधान कर गये हैं अगर किसी फरक का स्वाधान उनसे भी नही हुआ तो फेर आज ऐसा कौन है जो उन फरकों को निकाले दूर करे और जो तुमने कहा कि बत्तीस सूत्रों में जो जो फरक है सो दिखावो सो फरक बहुत है पर वनगीमात्र थोड़े से फरक तुमको दिखाते

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

के लिये लिखदेताहूं परं हे मित्र तैने यह फरक न समझने फरक तो अल्प बुद्धि सूत्रों की अपेक्षाके अनजान है उन को भासन होते हैं ज्ञाता सूत्रमां मल्लीनाथजी का ८०० मनपर्यवज्ञानी कहा है और समवायांगमां मल्लीनाथजीना ५७०० मणपर्यवज्ञानी कहा है १ समवायांग सूत्रमां मल्लीनाथजीना५७०० अवधिज्ञानी और ज्ञाता सूत्रमां २००० अवधिज्ञानी २ ज्ञाता सूत्रमां श्रीकृष्णजीकी ३२००० स्त्री कही अन्तगढ दशामां १६००० कही ३ रायप्रसेणीमां केशीकुमारजीको चार ज्ञान कह्या श्रीउत्तराध्ययनमां अवधिज्ञानी कह्या ४ भगवतीसूत्रमां विराधिक संयमी जघन्यथीभवनपतीमांजाय उतकृष्ट सौधर्मेजा- य तो ज्ञाता मां सूकमालिका विरोधिक संयमी इशानदेव लोके गई कही ५ उववाई

मांतापस उतकष्टा ज्योतिषी लगे जाय तो
भगवती मांतामलीतापस ईशाने इथयो ६
उववाईमां चौद पूर्विलांतके जाय तो भगवती
मां कार्तिक सेठ चौद पूर्वि सौधर्मेइथया ७
बेदनी कर्मनी जघिन्यस्थिति पन्नवणामां १२
मुहूर्तनी कही उत्तराध्ययनमां अन्तर मुहू-
र्तनी कही १०।८ भगवतीमां महांबल चौद
पूर्वि ब्रह्म देवलोके गया कह्या उववाईमांला
तक थी हेठा जाय नही ६ भगवतीमां भात
पाणी नां पच्चखाणकरीनेई अहार करे
सिद्धांत में ब्रतभंगे महा दोष लागे १६ । १०
ठाणांगसूत्रे साधुने राजपिंडन लेवो कह्यो
अन्तगढ दशामा गोतम जीए श्रीदेवीने घरे
आहार लीधो कह्यो २१ । ११ ज्ञाता मा
मल्लीनाथे ३००स्त्री३०० पुरुष ८ ज्ञातकुमार
एतले ६०८ से दीक्षा लीधी कही ठाणांगे

आप सातवां एतलेक्रपुरुष साथ दीक्षा लीधी कह्यो ३७।१२ ठाणांगमा कह्यो जेक्रमिवसाथइ दीक्षा लीधी ज्ञाता मां केवल ज्ञान उपना पच्छीक्रमिचा दीक्षा लीधी कह्यो३८।१३जंबू-द्वीप पन्नत्ती मां रिषभकूट मूले आठ योजन विस्तार कह्यो आगले यह मां पाठ तरेबारा १२ योजन कह्यो सर्वज्ञनी भाषा मां पाठां तरस्यो ४३।१४ उत्तराध्ययन १९ अध्ययने कह्यो जे मांस पोतानांज शरीर मांथी नरक माघवराव्या जीवाभिग में असंघयणी कह्या तो संवयन विना मांस कि हाथी आव्या ८७ १५ इतयादि बहुत फरक हैं कितनेक लिखे और जियादा फरक देखने की इच्छा होय तो करीब इकसौ १०० फरक के मेरे पास लिखा मौजूद है ॥ इति ॥ ७ ॥

प्रश्न ८—ढूंढकलोक कहते हैं हम सूत्र की बात मानते हैं पर ग्रन्थों की कही बात नही मानते इसका क्याउत्तर है, उत्तर—हे मित्र सूत्र और ग्रन्थ और पियन्नेमें जो लोक फरक समझते है उनको जैन सिद्धान्तों का बोध नही है देखो श्रीअनुयोगद्दार सूत्र में सिद्धान्तों के दशनाम कहे हैं ।

यत्तः सुय १ सुत्र २ गंथ ३ सिंद्धत ४ सासणे५आणयं६वयण७उवएसे८ पन्नवणे ९ आगमया १० एगट्ठापट्ठवा सूत्रेसेतंसुय ।

तथा श्रीउत्तराध्ययन मां अट्ठावीस में अध्ययनकी २३ मी गाथा मां सो होइ ।

अभिगमरुई सुयनाणंजेणअछउ-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दिठ्ठइक्कारसअंगाइं पइन्नगादिठ्ठिवाउय

२३—इसका भावार्थ यह है प्रकर्णों थी लेकर जावतदृष्टीवादपर्यंत जो सूत्र हैं उनके पढने से अभिग्रहण रुची होती है अब देखो जो ढूंढकलोक प्रकरण और ग्रन्थ और सूत्र में भेद मानते हैं यह उनकी कैसी मूर्षता है इति ॥ ८ ॥

प्रश्न ९—जिस वक्त खंदला चार्यादि युग प्रधानों ने ग्यारा अङ्ग सूत्र नये बनाये थे उनोंने टीका नही बनाई थी जो बनाई थी तो देवढीगणी खिमाश्रवणजीने सूत्र तो लिखे और टीका क्यों नही लिखी थी अगर लिखी थी तो फिर श्रीअभयदेवसूरी श्रीशीलंका-चार्यादि आचार्यों ने नवीन टीका रचने का प्रयास क्योंकिया उत्तर—हे मित्र जब पिछली

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बहुत विद्या बारा वर्षों काल में भूल गये थे जो रहेहो विद्या थी सो रखे भूल न जाये इस भयसे लिखकर ज्ञान एतले पुस्तकोंके भंडारे स्थापनकरे जो सूत्रोंका अर्थरूप टीका थी वो कंठाग्र याद रखते२कैई पाटों तक यह रीति चलती रही तो फिर जैसे दिवढोगणिजी ने विचारा था रखे सूत्ररूप ज्ञान भूलन जाय इस भयसे लिखे थे वैसे ही श्रीशीलंकाचार्य श्रीअभयदेवसूरी श्रीहरीभद्रसूरी आदि आ-चार्योंने भी यही खराल करा कि आगे को सुनीयां की बुद्धी निर्बल हो जायगी और हमारे वत् अर्थ याद रखनेकी शक्ति न रहेगी तो और का और अर्थ उलट पुलट परूपणे से रखे संसार में रुलजावे इस हेतुसे जो अर्थ गुरुपरंपराय से सुधर्मास्वामी से लेकर उस वक्त तक धारते और परूपदे चले आये थे

वोही अर्थ टीका रचकर प्रकाशित किया परंमत कदाग्रह से कोई अर्थ टीका में नही किया इति ॥ ६ ॥

प्रश्न१०—सूत्रोंकाअर्थ सूत्रोंके अक्षरोंसे साफ जाहिर था तो फिर परम्परासे चला आया अर्थ मानना यहठीक नहीं। उत्तर—हेमित्र जो मूल सूत्र के अक्षर हैं वही हुकम देते हैं अक्षरों का अर्थ नहीं करना, किन्तु जो परम्परासे अर्थ चलाआया है और अर्थ करने की जो रीति है उसी से अर्थकरना। तर्क—वह कौनसे सूत्र के पाठ से सूत्रों का अर्थ परम्परा से करना कहा है। उत्तर—श्री अनुयोग द्वार के मूल पाठ से ॥ यतः ॥

आगमेतिविहेपन्नत्ता सुत्तागमे १ अछागमे २ तदुभयागमे३ ॥ अस्यार्थः

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्रों के अक्षरों में जो अर्थ है और सूत्र के अक्षर यह सुत्तागमे प्रथम भेद हुआ, और जो दूसरा भेद है, अर्थ रूप आगम उस में टीका निर्युक्ति आदि, अर्थरूप आगम दूसरा भेद हुआ, और तीसरे भेदमे सूत्र और अर्थ यह दोनों आये ऐसे ही श्रीगणांग सूत्र में।

सुयं पडुच तउ पडिणिया पन्नत्ता सुत्त पडिणीए अछपडिणीए तदुभयपडिणीए ॥ इस में भी उसी प्रकार अर्थ है परं इतना विशेष है कि यह तीन भेद से सूत्रकी आशातना कथन करी है, और देखिये श्री अनुयोग द्वारे ॥

अहवा आगमेतिविहे पन्नत्तं अत्तागमे १ अणंतरागमे २ परंपरागमे ३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिछगराणं अछस्सअत्तागमेगणहराणं सुत्तस्सअत्तागमे अछस्सअणंतरागमे गणहरसीसाणं सुत्तस्सअणंतरागमे अछस्सपरंपरागमे तेणपरं सुत्तस्सवि अछस्साविनो अत्तागमे नोअनंतरागमे परंपरागमे ॥

अस्यार्थ—गुरूपदेश बिना आत्माथी जे आगमते अत्तागमे१ गणधर ने अर्थ थी अने जम्बूस्वामी ने पाठ थी अणंतरागम २ जंबूस्वामी ने अर्थ थी प्रभवस्वामी ने सूत्र थी परंपरायगम ३ तीर्थं करने अर्थनो आत्मागम गणधर ने सूत्रनो आत्मागम अने अर्थनो अणंतरागम गणधरना शिष्य ने सूत्रनो अणंत रागम अर्थनो परंपरायगम तेण परं कहतां

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गणधर ना शिष्य थी आगे आत्मागमनही, तथा अणंतरागमनही किन्तु सूत्र का तथा अर्थ का परंपरागम है इस पाठ में गणधर देव एह हुकम देते हैं जो परंपाराय में सूत्र और उन का अर्थ टीकादि अर्थ रूप आगम है उसको ही मानना । तथा श्रीभगवतीसूत्रे

सुत्तछोखलुपढमो बीउनिजुत्तिमी सिउ भणिउ तइउयनिरविसेसो एस विहिहोइअनुउगो १ ॥

यहगाथा नन्दी सूत्र मां पणि छइ । अस्यार्थः—पहिला सूत्रार्थ निश्चय देवो बीजोनिर्युक्ति मिश्रतेसहित देवो कह्यो छै तीजो निर्विशेष संपूर्ण कहिवो एह विधि अर्थ कहवानो जाण वो तथा श्री अनुयोग द्वारे।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

अनुगमे दुविहे पन्नत्ता सुत्ताणुगमेअ णिजुत्ति अणुगमे ॥ इस का भावार्थ यह है सूत्र का व्याख्यान एतले सूत्र का अर्थ करना निर्युक्ति के हाथ है और मूल पाठ में अनुयोग द्वारे । निर्युक्ति किस को कहते हैं, तिस का विशेषण जिताने के लिये दो गाथा कथन करी हैं सो सूत्र से देख लेनी, हे मित्र जे तेरे को जिन आज्ञा की रुचि है और जिन वचन खण्डन के पाप से जो तूं डरता हैं तो इस पाठमें दीर्घ दृष्टि देकर देख जिनगणधरों ने आप सूत्र रचे थे उन को भी सूत्र के अक्षरों पर अर्थ करने का अखत्यार नहीं था, जो अखत्यार होता तो ऐसा पाठ होता—

गणधराणं सुत्तस्सविअत्तागमे अछस्स विअत्तागमेय ॥ हे मित्र ऐसा पाठतो

सूत्र में नहीं, सूत्र में तो साफ कहता है ॥

गणहराणंसुत्तस्सअत्तागमे अछस्स अणंतरागमे ॥ कहता गणधरों को सूत्र आप रचने से सूत्रों का आत्मागम है, और सूत्रों की तरह अर्थ का आत्मागम नही है किन्तु अथ्थस्स अणंतरागमेक० । जो अर्थ श्री युत भगवान ने कहा था कथन करा था उस अर्थ के धारण करने में कोई अन्तर नहीं, पडा था अर्थात भगवान के कहे अर्थ को अन्तररहित गणधरों ने धारण करा था इसी लिये गणधरोंको अथ्थस्स अणंतरागमे कथन किया है और गणधरों के शिष्यानुशिष्यां को जैसे सूत्र तैसे तिन का अर्थ यह दोनों परंपरायगम कथन करे हैं इति ॥ १० ॥

प्रश्न ११—टीका से टबा किसने बनाया है

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

और टीका के अनुसार टबा है वा कम बेश है उत्तर टीका से बालाबोधरूप भाषा श्री पासचंदजीने टीकाके अनुसार बनाया है वो श्रीपासचन्दजी हरएक बालाबोधके आदि में लिखतेहैं अमुक आचार्यकी करी टीका के अनुसार बालाबोधरूप अर्थ करताहूं और अन्त में भी ऐसा लिखतेहैं अमुकआचार्य की करी टीकासे कोई विरुद्ध अर्थ भूलकर मेरे से लिखागया हो तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥इति॥ ११

प्रश्न १२—जो ढूण्ढक साधोंके पास सूत्रों पर भाषा रूप टबा लिखा हुआ है वो टीका से क्यों नहीं मिलता उत्तर हे मित्र उनढूण्ढकों ने जिन प्रतिमाके उथापने के लिये पासचन्द कृत बालाबोध में जहां २ जिन प्रतिमा का अर्थ था उसको हटायकर उसके इवज साधु तथा ज्ञान ऐसा अर्थ लिख धरा और तिस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बालावोध के आदि अन्तमें पासचन्दजी का नाम तथा बालाबोध बनाने का साल सम्वत् तरीख तथा जिस आचार्यकी करी टीका के अनुसार बालाबोध करा उसका नाम कुल्ल निकालडारा,मनकल्पित टबाकरलेने से और लिखलेने से ढूंढकों का टबारूप अर्थ टीका से नहीं मिलता ॥ इति ॥ १२ ॥

प्रश्न १३ ढूंढक लोग कहते हैं वत्तीससूत्र आदि मध्य अन्त में एक जैसे हैं यह उनका कथनठीकहै । उत्तर हे मित्र यह उनकाकथन उनके सेवक मानेंगे परंतु कोई बुद्धिवान नहि मानेगा क्योंकि ऊपर सातमें प्रश्नोत्तर में कितनेक पूर्वापर विरोध वत्तीस सूत्रों में दिखलाये हैं और श्रीभगवती सूत्र में प्रथम शतक तृतीयउदेसे ऐसा पाठ है ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

॥ यतः ॥ अछिणंभंते समणाविणि
ग्गथाकंखामोहाणिज्जं कम्मंवेदेति हंता
अछिकहणंभंते समणाविनिग्गंथाकंखा
मोहाणिज्जंकम्मंवेदेतिगोयमातेहिं तेहिंना
णंतेरहिंदसंणतरेहिंचरित्तंतरेहिंलिगतं
रेहिंपवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिंकप्पंत
रेहिंमथंतरेहिंमतंतरेहिंभगंतरेहिंणयंत
रेहिंणियमंतरेहिं पमाहिणंतरेहिंसंकि-
त्ता कंखित्ता वितिगिछित्ताभेय समाव-
न्ना कलुसमावन्ना एवं खलु समणानि
ग्गंथा कंखामोहाणिज्जं कम्मंवेदेति ॥
इसका भावार्थ यह है सूत्र तो विविध आशय

ना होय ते आशयनो जिवारे मालम न पड़े तिवारे मनमां शङ्का उपजेके आखरु के आखरु एहवी शङ्का थाय अनेजे शङ्का ते मिथ्या मोहनी थाय। इस को रहस्य विचार कर देखो जैन सिद्धान्तों में एक जैसा कथन होता तो सुनो कांखा मोहनी कर्मकैसे वेधतेकथनकरे, इससे साफ जाहिर है जेन सिद्धान्तों में किसी अपेक्षा से किसी जगह जिस चीजका निषेध है और दूसरी जगह दूसरी अपेक्षा से उसी निषेधी हुई चीजका थापन है, यही तो स्याद्वाद रूप जैन वाणी की महमां है जैसे श्रीरामचन्द्रजी एक नाम है पर अपेक्षा संयुक्त लिखने में बोही रामचन्द बहुत तरहों से लिखे जाते हैं, सीता की अपेक्षा से पति है, लव और कुश की अपेक्षा से बाप है दशरथ की अपेक्षा से पुत्र है लछमण की अपेक्षा से

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

भाई है प्रजा की अपेक्षा से वोही रामचन्द्र जी राजा है। इस लिये सूत्र तथा अर्थ जैसे परम्परायसे धारते चले आये हैं वोही मानना सूत्र में कहा है क्योंकि सूत्र के अक्षर थोड़े और तिन थोड़े अक्षरों में बहुत अर्थ और जो २ अपेक्षा रहीहुईवो परम्परायकेअर्थ से मालूम होती है जैसे अनुयोग द्वार के मूल पाठ में तीन दृष्टान्त हैं जहा—ढोढणिगाणि या अमच्चे अब यह कुछ ९ अक्षर हैं इनका भावार्थ कोई भी पण्डित नहीं बतला सकता ढोढणी कौन थी गणिया नाम वेश्या कौन थी और अमात्य मन्त्री कौन था क्या उनका सम्बन्ध था किस तरहोंसे हुआ था, यहमूल सूत्रके ९ अक्षरोंसे कभी नहीं निकलेगा परंतु परम्पराय से जोअर्थ टीकाचूर्णभाष्य निर्युक्ति

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्र की तरह अर्थरूप आगम चले आते हैं, उनही के वाचने से मतलब मालूम होगा। और श्रीनन्दी सूत्र में सुशिष्य कुशिष्य पर १४ दृष्टान्त हैं ॥ यतः ॥ सेल १ घण २ कुडग ३ चालणीपरिपुनगे ४ हंस ५ महिस्स ६ मेसेय ७ मसंग ८ जलुग ९ विलावटो १० जाहाग ११ गौय १२ भेरी १३ आहिरी १४ ॥ अब ये चौदा दृष्टान्तों के कुल अक्षर ४३ हैं इन का मतलब बिगैर टीका कभी मालूम नहीं होसक्ता तथा इसी नन्दी सूत्र में चार प्रकार बुद्धि के अधिकार में अनुमान ५० तथा ६० दृष्टान्त मूल पाठ में कहे हैं उनका भी मतलब बिना टीका नहीं समझा जायगा और बहुत जगह

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्रों में दृष्टान्तों का नाम मात्र है परं उस का भावार्थ अर्थरूप आगम जो टीकादिक है उनही के बाचने से मालूम होता है क्योंकि वह टीकाकार महाराज सूत्र की अपेक्षा के जानकार थे ॥ जैसे ॥ सुयंमे आनुसंतेणं भगवया एवमक्खायं ॥ एह गणधरों का कथन है ऐसे ही टीकाकार महाराजोंने जो अर्थ अपने गुरोंसे धारण कराथा औरटीका कारों के गुरों ने अपने गुरोंसे धारण करा था इसी तरह पश्चानुपूर्वी चलते २ अखीर भगवन्त महावीर स्वामी इस टीकादि अर्थ के कहनेवाले हैं और भगवानसे पूर्वानुपूर्वी चलते हुए यही टीकादि अर्थ भगवान महावीर स्वामी का कथन करा हुआ सिद्ध होता है। जो पूर्वाचार्यों ने टीकादि रचकरप्रकाशित किया है, नतु अन्यथा। इति १३ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न १४—कोई कोई ढूंढकलोग कहते हैं जैनकेअमोलक पुस्तकोंमें आचार्यों ने स्याद्वाद रूप जहर विषमिलायदी,उत्तर—यह कथन मूरखों का और जैन पुस्तक रूप तत्व के अज्ञात जनों का है। जैन शास्त्र तो स्याद्वादरूप चिन्ह से ही जाना जाता है जिस में स्याद्वादरूप कथन नही है सोई मिथ्यासूत्र है इसमें प्रमाण बहुत सूत्रों का है अनुयोग द्वार नंदी उत्तराध्ययन भगवती सूगडांगादि सूत्रों में ठाम २ स्याद्वादका कथन है जैसे

लोय सासयावि असासयावि दव्वट्ठयासासया पज्जवट्ठया असासया।

तथा श्री अनुयोग द्वारे—सेकिंतंणएस त्तमूलनयापन्नत्ताणेगमे संगहेववहारे उज्जुसुए सद्दसमभिरूढेएवंभूए॥

यहजो नयोंका कथन है सोई स्याद्वाद है जो स्याद्वादास्ति आदि सात भांगे हैं वोसात नय से बाहिर नहीं हैं और रत्नचन्द ढूंढक जो इन ढूंढकों में बड़ा नामी परिडत हो चुका है वो भी आपने बनाये तत्वानुबोध नाम ग्रन्थ में ऐसा लिखता है ग्रन्थ की आदि में ।

॥ दोहा ॥ १५ मा

वेद्रसम्यक्ज्ञानदलहे समभोनवनत्वज्ञान ।
नयनिषेपपरमाणसू स्याद्वादपरिमाण ॥

तथा इसी ग्रन्थ के अन्त में भी ऐसा लेख है ।

जिनबाणीनास्वादनो मत कर जो कोई हास्य ।
स्याद्वादनय सुद्धकरोयह मेरी अरदास ॥ २ ॥
गुरुकारीगरसम कह्या गुणनिधिउपमाजोय ।
श्रीहरजीमलजोदीपिता तासक्रपासुभहोय ३
रत्नचन्द शिष्य तेहनो शुद्धो जस अरदास ।
ये अनेकांत पढ़ने बुद्धि जन होये विकास ॥ ४ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऊपर के लेख से साफ जाहिर है कि ढूंढक लोग भी स्याद्वादरूप जैन पुस्तक मानते हैं, परं कोई अतिसे मूर्ष ढूंढक तुमारे कहने मूजब कहता होगा ॥ इति ॥ १४ ॥

प्रश्न १५—कैई ढूंढक लोग व्याकरण को व्याधी करण कहते हैं इस का क्या हेतु है।

उत्तर—कोई ज्वरवाला रोगी आदमी था वो दूध और घी के पीनेसे मरगया तदानंतर उसका कुटंब इकठ्ठा होकर यह सलाह करीकि दूध घी के पीने से अपना आदमी मर गया है तुम कोई किसी वक्तभी दूध और घी मत पीना तैसे ही दूध घी रूप जो व्याकरण शास्त्र है जो ढूंढक पढ़ताहै वो ढूंढकमतको जिन आज्ञा से घोर जैन सिद्धान्तों से विरुद्ध जानकर शीघ्रही ढूंढकमतको छोड़कर संवेग परंपराय जैन मत को अङ्गीकार करता है तो उन

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढूंढकोंने सोचा जोव्याकरण पढ़ेगा तो हमारे स्वकपोल कल्पित अर्थों को झूंठ जानकर हमारे से चला जावेगा तो हमारी संप्रदाय विछेद हो जावेगी इस भय से व्याकरण का नाम व्याधि करण कहते हैं ॥ इति ॥१५॥

प्रश्न १६—क्या जैन पुस्तका में व्याकरण पढ़ने की मनाही है उत्तर—हे भित्र जैन पुस्तकोंमें व्याकरण पढ़े विना दूसरा महाव्रत शुद्ध नही होता ऐसा कथन श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्र में है ।

॥ यतः ॥ नामरकाय निवायउवसगातद्धिय समास संधिपयंहेऊ जोगियउणाइकिरिया विहाण धातु सर विभत्तिवन्नजुत्तांति कल्लंदसविहंपिस-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

च्चंजहभणियं तहकम्मुणाहोइ दुवाल-
सविहाविहोइ भासावयणं पियहोइ
सोलसाविहं एवं अरिहंत मणुन्नायंसम-
रिकये सजएणं कालंमि वत्तव्वं ॥

इसका अर्थ नामते देवघट इत्त इत्यादिक शब्द विभक्ति रहित नाम कहिये आख्यातते क्रिया पद जिम भवति करोति तनोति पचति पठति इत्यादिक निपातते अनेक अर्थ नें विषे पड़े यथा चावा खलु अहो एव एवं नूनं बिना इत्यादि उपसर्ग ते उपसमीपे धातुने करिहूंते उपसर्ग प्र परा अप सं अव नि दुर वि आङ अधि अभि इत्यादि तद्धितते तेहनइं हितते तद्धित ॥

॥ यथा ॥ नाभेरपत्यंनाभेय तवइदं तावकं ममइदं मामकं—इत्यादि समासते

अव्ययीभाव १ तत्पुरुष २ द्वंद्व ३ बहुव्रीहि ४
कर्मधारय ५ द्विगु ६ एक शेष एसाते समास-
जाणवा उवनगरं ग्रामं ए अव्ययीभाव १
अरहंत चैत्यानि अरिहंत चेईयाणि ए तत्पु-
रुष २ गामागरनगर खेड कब्बड इत्यादि द्वंद्व
३बहुधनंयस्यस:बहुधन: बहुधणो ए बहुव्रीही
४ नीलं च तदुत्पलं च नीलोत्पलं नीलुप्पलं ए
कर्मधारय ५ दशानां पुराणां समाहारो दश-
पुरं एद्विगुई माताचपिताचपितरौ ए एकशेष:
इमसमास जाणवा संधिक० वे पद एकठां मे
लीइं ते संधि यथा दधि इदं दधीदं गुणाकर
इत्यादि पदक०विभक्तिअन्त आवेते पदकहिइ
तथा हेतु यंचा वयव अनुमाननो अङ्ग तर्क
शास्त्र प्रसिद्ध यो ए गकाते बिहुं पदने योगे
निष्पन्न हरिषेण श्रीषेण पद्मनाभ इत्यादि
उणादि अनेक प्रत्ययकहइं यथा अत सातत्या-

गमने इति धातुः अतीति गच्छति इति आत्मा इत्या उणादिकमत प्रत्ययछैइणिपरें उणादिक प्रत्ययथ को अनेक शब्दनीपजे छइ किरिया विहाणाक॰। क्रिया विधि क्रिया इंकरी पदनी पमइं यथा पठतीति पाठकः पचतीति पाचक इत्यादिधातुते भूसत्तायां पापाने घ्रागंधोपादाने ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः इत्यादि अनेक धातु छै स्वर अकारादिक अआ इई उऊ ऋॠ लृ लॄ एऐ ओऔ इत्यादि विभक्तिक॰। स्यादि त्यादि वर्ण ते अक्षर कखगघङ चछजझञ इतरादि व्यंजनते वर्ण कहेवाय एतलें करी युक्त सहित तथा तिकल्लंक॰। त्रिकालविषय अतीत अनागत वर्तमान काल विषइंउ वचन यथा विधि बोलवं,—दसविहंपिसच्चंजहभणियंक॰ दस प्रकार नं, सतत्र पूर्वं जणवयसम्मयठवणा

इत्यादि कह्या छइं जिम तिम करुणा छोड़ी का० अक्षर लिखनादिक क्रिया करें तेपणि सत्य-जाणवं, एतले ए भाव जिम वचन सत्य बोलवं तिमवीजो इत्यादिक कर्म पणि सत्य इक्करवं कोई इम जाणस्यें मैं झूंठ बोलवानं, नियम कीधोछे पणि लिखवानं, तथा मस्तक नयनादिक संज्ञानं, नियम नथी कीधं इम जाणवं, जिम वचन सत्य तिम कर्म पणि सत्यजकरनं,

इत्यर्थ—दुवाल सविहाहोइभासाक०

भाषा ना बारे भेद जाणवो ते केहा संस्कृत१ प्राकृत २ सौरशेनी ३ मागधी ४ पैशाचिकी ५ अपभ्रंस ६ ए भाषा गद्य पद्य बिहुं भेदे करता भाषानां बारा भेदथाय तथा—

वयणं पियहोइ सोलस विहं—वचनपणि सोल प्रकार जाणवो ते सोल भेद केहा ते ग्रन्था तरथी कहिइंछइं ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वयणतियं ३ लिंगतियं ३ कालतियं३तहपरोरकपच्चरकंउवणीयाइचउक्कं १५ अशथ्थंचेवसोलसमं ।

अस्यार्थः । एक वचन द्वि वचन बहु वचन इत्य घट पट एक वचन, इत्यौ घटौ पटौ ये द्वि वचन, इत्याः घटाः पटाः ये बहु वचन । यह वचन त्रिक पुरुष स्त्री नपुंसक लिङ्ग । देवः नरः ये पुलिङ्ग । कुमारी नदी नगरी गङ्गा यमुना ये स्त्रीलिङ्ग । कमलंसुरकंनयनंयेनपुंसक ये लिङ्ग त्रिक । ६ अतीति अनागत वर्तमान यह काल त्रिक । ८ अकरोत अभूत् अपठत् यह अतीत काल । परिष्यति भविष्यति अनागत काल । करोति भवति,पठति वर्तमान काल । एवं ८ परोक्ष वचन यह कार्य्य तिने कीधो इत्यादि १० । प्रत्यक्ष वचन ते एहंमकरे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छइं इत्यादि ११ उपनीत अपनीतते पहिलो गुण पछें अव गुण जिम ए स्त्री सुशील छें पर कालो छइ१२ अपनीत उपनीतते पहलो अव गुण पछे गुण यथा जिम ए पुरुष कुशील छइ पर पण्डित छइ १३ उपनीत उपनीतते पहिलो गुण कहेवो पछे पणि गुण कहिवा यथा ए स्त्री रूपवन्ती छइ अनें सुशील छें १४ अपनीत अपनीत् वचनते बषोडोनइं बषोडवो यथा ए स्त्री कुरूपी छें अनें कुशीला छइ १५ अध्यातम वचनते हिया मां गोपवो मे कोई इकरूं कुं होय अने हैया मां होयतेहज कहवाय यथा कोइकरूं बाणीउरूं महर्घ्यजाणी कोइकगा में रूं लेवागयो एहवे टषा लागी मनमां जाणें छे रूं नीवात कोईनैकहेवीनही हिवें पाणी पीवा कोईक घरें स्त्रीने कह्यौं जे रूंपा स्त्री विचक्षण छें तेणे जाणं्य जे एह

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ने पाणी पीधुं छइ अनइ इम कह्युं हुं पा ते माटें हूं महर्षीय दीसे छै पछइ पोतानां भरतार मे कहीने हूं पोते लेवराव्युं, तिहांलगे खोइं हूं बाणी यानी घणी आगति भागति करी भोजन करावीने विसर्ज्यौ ए अधरातम वचन कहिये १६ एहवा सर्व पूर्वोक्त प्रकार समझीने बोले तो सत्य भाषा अनइ कांयने ठामें काय कहें तो श्रीवीतरागनी आज्ञाभंग करे एवंक० । इणी रीतें अरिहंतमणुन्नायंक० अरिहंते आज्ञा कीधी छइ इमजाणीपूर्वकह्युं ते प्रमाणे सत्य बोल वु, समक्खियंक० । सम्यग प्रकारे बुद्धिं आलोची विमासी संजएण काले वत्तव्वंक०। संयतीइं चारित्रिइं अवसरे बोल वुं, इति श्रीर श्रीअनुयोग द्वार मां गाथा ।

॥ यतः ॥ सक्कयापायकाचेव भाणि

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इउहोतिदोन्निविसरमंडले विगज्ञते
पसथ्थाइसिभासिया ॥ २९ ॥

अस्यार्थः । तीर्थंकरे दो प्रकार की भाषा कही संस्कृत प्राकृत षड्जादि सातखरनेसमूहे गा ताने विषे प्रसस्त हुडो महारिषीश्वरों की भाषा कही और देखिए अनुयोग द्वारे अठ्ठ विहावयण विभत्तिपन्नत्ता निदेसे पढमा होइ बीइयाउवएसणं तइया करणंमिकयाचउत्थी संपयावणे पंचमीअवायणेछठ्ठीसस्सा मिवायणे सत्तमीसन्निहाणत्थे अठ्ठमी मंतणीभवे ।

आगे इस का बहुत विस्तारमूल सूत्र में है तथा समास १ तद्धित २ धातु ३ निरुक्ति ४ यह चार प्रकारे भाव पमाणे नामे अनुयोग द्वार में और मूल पाठ भी कितनाक अनु-
वं

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

योग द्वार का संस्कृत है ऐसी लेखसे अनजान आदमी भी कह सकता है कि व्याकरणशास्त्र तो जैनमत की एक जड़ है अगर विचारकर देखो जो व्याकरण पढ़ने की मनाही जैनमत में होती तो गणधरोंने संस्कृत प्राकृतमें काहे को सूत्र रचने थे सिक्का बावे नानक की तरह एक ही भाषारूप जैन्य ग्रन्थ बना देना था, यह तो मूर्ख से मूर्ख भी जान सकता है जो संस्कृत प्राकृत सूत्र हैं उन का अर्थ विनाव्याकरण शास्त्र पढ़े कभी यथार्थ भाषण नहीं हो सकता जैसे अङ्गरेजी हरफों की किताब का मतलब अङ्गरेजी पढ़े बिना मालूम नहीं हो सकता किंतु अङ्गरेजी पढ़ने से यथार्थमतलब को प्राप्त हो सकता है इसलिये चाहिये सब ढूंढक साधु और श्रावक व्याकरण पढ़ें व्याकरण पढ़ों को पूछें जो ढूंढक लोक अथु

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहते हैं वो व्याकरण के ढ़ंसे ठीक है जो मनकल्पित हैं इति ॥ १६ ॥

प्रश्न १७—सूत्रों में ठाम २ दया का अधिकार है।

सव्वेपाणासव्वेभूया सव्वेजीवासव्वे सत्तानहणेतव्वातथाअहिंसापरमोधर्म

इस प्रकार कथन होने से साधुपणा लेकर साठोमास रोक कर पादोपगमन संथारे कितरां एक जगहँपरपड़ा रहे तो भी शास्त्रोक्त दया नहीं पल सकती तो फेर साधु बन कर देशानुदेश विहार और क्रिया कलापादि करने में प्रतयक्ष हिंसा होती है, अनन्त जीव मरते हैं तो फिर कहिना हम सुनी हैं अहिंसक हैं सर्वहत्ती हैं यह प्रतयक्ष विरोध है। उत्तर—हे मित्र तुझे स्याद्वादरूप जैनशास्त्रों

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

की शैली की खबर नहीं तब ही तुझे यह शंका उत्पन्न होती है संपूर्ण दया चौद में गुणठाणे के अन्त में सयलेशी करण के पिछे होती है अर्थात् सिद्धां की होती है उस सिद्ध अवस्था का बैरी भूत अठारह पाप स्थानक हैं जो इस प्राणी को सिद्ध अवस्था में प्राप्त नहीं होनेदेते इस लिये अठारह पापों का नाम हिंसा है, तिन अठारह पापों का निग्रह अर्थात् अठारह पापों के हटाने का जो २ उपाय जैन ग्रन्थों में कथन किया है, सो सब का नाम दया जानना, क्यों कि जितना चिर क्रोधादि अष्टादश पापों का निग्रह नहीं होगा, तब तक वह सिद्ध अवस्था रूप निरहिंसक पद की प्राप्ति न होगी जैसे शास्त्रों में कथन है ।

जसठा किरइनग्गभावे जसठाकिरइ मूंडभावे जावतं अठ्ठं अराहेई ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इस का भावार्थ यह है, जिस सिद्धि सुख के लिये द्रव्य भावें मुण्डत हुआ था तिससिद्धि सुख को प्राप्त होते भये, जे कर यह अर्थ न माने तो तेरवें गुण ठाणे भी हिंसा लगती है क्योंकि दो समय की स्थिति का कर्म बन्ध वां भी है जेकर संपूर्ण दया तेरवें गुणठाणे होए तो फेर कर्म बन्ध काहे का होता, एक और भी बात है पाप है सोही हिंसा है यह अर्थ आप नहीं मानेंगे तो पांचो ही महाव्रत का धरणा निष्फल होगा सोई दिखाते हैं जहां तक मन वचन काया का योग है, तहां तक हिंसा है इस कारण मुनि को हिंसा लगतीहै यह बात सिद्धहुई जब हिंसकहोकर अहिंसक माना तब दूसरा महाव्रत भी गया और सम्यक्त भी गई जब उन जीवों ने अपने मारने की आज्ञा नहीं दी, और मुनि ने उन को

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मार दिया, तब तीसरा महाव्रत भी गया, और सीलक० । मर्यादा सो जो गुरों से यह अङ्गीकार कराया किसी जीवको न मारूंगा और झूठ नहीं बोलूंगा, और चोरी नहीं करूंगा यह मर्यादा अङ्गीकार करके इस से भ्रष्ट हो गया, तब तो सील भी गया, और भण्डोपगरण वस्त्र पात्रादि रखने से पांचमा महाव्रत गया है मित्र अब बताओ पांच महाव्रत मुनि के कैसे साबत रहे इस लिये पूर्व आचार्यों के वाक्य प्रमाणे जो ऊपर हिंसा, और दया का स्वरूप लिख आये हैं उसी के मानने से क्षेम कल्याण होगी अन्यथा तो सूक्षम एकेन्द्री जीव किसी जीव की हिंसा नहीं करते उन को भी सिद्धि सुख की प्राप्ति तुझे माननी पड़ेगी इति ॥ १७ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न १८—जो हिंसा और दया का स्वरूप आपने सतारवें प्रश्नोत्तर में कह्या है सूत्र में उसतरों से कथन क्यों नही उत्तर—हे मित्र सूत्र में जहां जहां संपूर्ण दया का वरणन है वहां बहुत अपेक्षा रही हुई है प्रथम तो दूक २ नये के मत से जो जो मत निकले हैं उनको कुछ दया और हिंसा की खबर नहीं है परंतु उनके ग्रन्थों में भी मुख्य पणे दया कथन करी है उस अपेक्षा से जैन ग्रन्थों में भी लौकिक रीति से दया का बहुत कथन है दूसरा जो यज्ञादि में पंचेन्द्री जीवों को होम कर धर्म मानते हैं उनके निषेध करने के लिये जैनग्रन्थोंमें ठाम २ दया का विस्तार है इसी हेतु से संपूर्ण दया सिद्धांको होती है अलबत्ता यह तो माना जावेगा कारण में कार्योपचार जैसे अनुयोग द्वारसूत्रमें पत्थे के

व

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लिये काष्ट लेणेगया तिसकों पत्थों लेणे गया, कह्या है ऐसे ही संपूर्ण दया रूप जो सिद्ध अवस्था है तिसका साधन श्रावकवा साधुका धर्म है तिस साधन में सिद्ध अवस्थाका अरोप कर्णे से एतले कारण में कार्योपचार करणे से श्रावक वा साधु का धर्म संपूर्ण दया रूप कथन करा जाता है ॥ इति ॥ १८ ॥

प्रश्न १९—मुनी जानकर हिंसानही करता इससे मुनीको संपूर्ण दया है तुमने ऐसा क्यों नही माना । उत्तर—हे मित्र मुनी अनजान पणे कभी हिंसा नही करता मुनी तो जानता है यह मेरा स्थूल शरीर जराशा इधर उधर होता है तो असंख वायुकायके जीव मारे जाते हैं और सासो सास के लेनेसे वायुकाय के जीव निरंतर मारेजातेहैं और नवकल्पी

विहार में छहों काया के जीव मारे जांयगे और रोटी खाणे से पेट में विष्टा बन जावेगा और वो विष्टा जब शरीरसे आलादाहोयगा तव असंख असन्नी मनुष्य उपजेंगे और मरेंगे यह व्यवस्था जानकर फिर हार निहारादि मुनी करता है यह सब क्रिया अनजानता नही होती किंतु सब क्रिया जानकर मुनी करता है और भगवत देव की आज्ञा है इससे अखीर यही मानना पड़ेगा काम क्रोधादि इन्द्रियों के विषय निमित्त जो कार्य मुनी करता है वोही हिंसा है और शुद्धात-साधु याई यतन से सब क्रिया करता चाहे हिंसा होती है परंपाप कर्म का बंध नही होता।

॥ यतः ॥ जयंचरे जयंचिठ्ठे जयंमासे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जयंसए जयंभुंजंतोभासतो पावकम्मं-
नबंधइ ॥ १ ॥

इति दसवै कालिकाचतुर्थाध्ययमे इति ॥१८॥

प्रश्न २०—जैन ग्रन्थों में दया के और हिंसाके कितने२ भेद कथन करे हैं। उत्तर—जैन ग्रन्थों में दयाके तीन भेद और तैसे ही हिंसा के तीन भेद कथन करे हैं और कैई ग्रन्थोंमें आठ भेद भी कथन करे है सो इन तीनों के अन्तर भूत है प्रथम हेतु दया सो जैन ग्रन्थानुसार सब क्रिया यतन से करणी सो हेतु दया है दूसरी स्वरूप दया सो प्रत्यक्षजीव को देखकर न मारणा सो स्वरूप दया दूसरी है तीसरी अनुबंध दया सो देखने में चाहे हिंसा हो परंतु फल दया का जिस करणीसे हो बोही अनुबंध दया है तीसरी ३ हेतु हिंसा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जो अयतन से काम करणा बिन उपयोग तिसको हेतु हिंसा कहते हैं दूसरी स्वरूप हिंसा सुभा सुभ हरेक कार्य करता हिंसाथाय ते स्वरूप हिंसा तथा प्रतग्रक्ष जीव को मार देणा तिसको स्वरूप हिंसा कहते हैं तीसरी अनुबंध हिंसा जो निन्हव परसुख की क्रिया देखने में दया रूप है परंपरलोक में फल हिंसा का अनन्त संसार रुलने रूप मिलता है तिनको अनुबंध हिंसा कहते हैं इतग्रादि। और भी भेद बड़त हैं सो ग्रन्थातरों से देख लेणे ॥ इति ॥ २० ॥

प्रश्न २१—श्रावकको सूत्र पढ़नेको मनाही क्यों है जो मनाही है तो तुम सूत्र क्यों पढ़ते हो। उत्तर—जब सूत्र कंठाग्र थे तब वो गुरुगीतार्थ होनेसे योग्य को वाचणी देतेथे इस

वास्ते दीक्षा प्रमायकी कोई मर्यादि नही थी और अब इस दूषमकालकी अपेक्षा औअव-श्यार सूत्र में तीन वर्ष के दीक्षित मुनी को आचारंग पढने की आज्ञा है इस मूजब श्रावक कों सूत्र पढना बिलकुल मनाही है और सूत्र पढना उसकी कहते हैं जो उपधान योग वहकार रीति से गुरूकी मुखारबिन्द से वाचनी लेखी उसीकी सूत्रका पढना कहतेहैं और हम तो सूत्र देखतेहैं सो कारण से देखते हैं परं पण्डितताई के लिये नही देखते सो कारण यह है इस काल में मत मन्तातर बहुत हैं और सब ही में जिनसे पूछो वो यही जबाब देता है मैं तो जैनी सुधर्मास्वामी की गद्दी पर हों और बाकी के सब निन्हवहै और यही सूच ढूंढकों के पास है वो अपना

मत सिद्व करलेतेहैं और यही सूत्रों से तेरा पंथी अपना मत सिद्व कर लेते हैं और इनही सूत्रों से अजीव पंथी अपना मत सिद्व करलेतेहैं और इन्हीसूत्रोंसे पुजेरे अपना मत सिद्व करलेते हैं तो बताओ हे मित्र सब तो जैनी नही बन सकते परं जैन मत तो एकही होयगा सो विगैर सूत्र के देखे जो जैन मत है वो कैसे पिछाना जावे यह जैन मत है और बाकी के सब ही निन्हव हैं इस कारण जैन मतके पिछाननेके लिये सूत्र हम देखतेहैं अगर हमारे सूत्र देखने में तूं दूषण निकालेगा तो गृहस्थोंसे सूत्र लिखवाणा भी प्रथम बन्ध करणा चाहिये और हमको सूत्र देखने से जैन धर्म की प्राप्तिरूप बहुत लाभ हुआ है हम सूत्र न देखते तो हमारा मनुष्य जन्म चिन्तामणी रत्नसमान कुगुरोंने योंही खो देना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

था और श्री उपदेश माला सूत्र में भी ऐसा कथन है जिन मतमें किसी चीज की आज्ञा नही तैसे किसी चीज का निषेध भी नही बणिये की तरह जैसे फायदा जाने तैसे करें यही हुकम श्री जिनेंद्रदेवका है इति ॥ २१ ॥

प्रश्न २२—सूत्रों में टीका निर्युक्ति आदि अर्थरूप आगम मानने कहे हैं तो ढूंढकलोगों में किसी ढूंढीयेने टीकादि मानी है वा नही

उत्तर—कन्हीरामजी ढूंढीये साधू ने तेरां पंथीयों पर चर्चा बनाई है उसमें कनहीराम जी तेरा पंथीयों को ऐसा उपदेश किया है टीका में इस पाठ का ऐसा अर्थ किया है तुम नही मानते इस लिये निन्हव और बहुल संसारी हो और रत्नचन्द ढूंढक साधु का बनाया मोक्षमारग प्रकाशनाम ग्रन्थ सो मेरे पास है उसके ३९ पत्रे हैं उसके दूसरे पत्रे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पर तीन करण के अधिकार में आवश्यक निर्युक्ति मानी है आगे पत्ते छीमे पर—

सच्चित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए

एहना—अर्थ टीकाकारे पुष्फर्त बोल कह्या आगे पत्ते तेरमे पर तत्वार्थ सूत्रको माना है आगे पत्ते उनीसमे पर ठाणांगनी टीकाकार एम कहे छे आगे पत्ते बीसमे पर अभयदेव सूरीना कह्या प्रमाणे ४ जीव ५ अजीव ए परूपणा करीये छे आगे पत्ते तेवीसमे पर अथागमेक० सूत्रविना अर्थरूप आगम माना है आगे पत्ते २५ पर वो रत्नचन्द जी कहते हैं जिने सिद्धान्त वचन उथाप्या षोटा अर्थ कीधा ते कमल प्रभानी परे रुले यह उपरले लेखसे मतलब जाहिर है सब ढूंढक टीकादि से अपणा संदेह दूर करते हैं और मानते

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भी हैं जब कोई उन ढूंढकों को पूछे टीका में इस पाठ के अर्थ में जिन प्रतिमा मानणी कही है तब वो ढूंढक यह जवाब देवेंगे हम तो मूल सूत्र मानते हैं टीका नही मानते जैसे कपूत जिस बाप की कमाई खाता है और ऐश बहार करता है उसी बाप को गाली और निन्दा अवर्णवाद बोलता है ऐसे ढूंढक भी अवनीत पुत्र की तरह टीकादि अर्थ रूप आगम की अवज्ञा करते हैं जैसे हाथी के दांत खानेको और होतेहैं और दिखलावेको औरहोतेहैं परन्तु हेमित्र इत्यादि छलोंसे कहां तक निन्दा रहेगा अखीरपरलोक में अपणा छत जरूर भोगना पड़ेगा इति ॥ २२ ॥

प्रश्न २३ साध्वीबजार में चौंकमेक० चुरस्तादि मेंरहें जां न रहै। उत्तर—ऐसी जगा साध्वी न रहै यो हहत्कल्प सूत्र में मनाही करी है

॥ यतः ॥ नोकप्पइ निग्गंथीणं अव-णंगिहंसिवा रथ्था मुहंसिवा सिंघाडगं-सिवा तियंसिवा चउक्कंसिवा चचरंसि-वा अंतरावणंसिवा वथ्थए ॥ १२ ॥

प्रथमाध्ययन मां। अस्यार्थः—न कल्पइ साध्वी नई हाट चुहटाने विषे सेरीरस्ता मांहि बेवाट मिले तिहां त्रिकतीन वाट मिले तिहां चौंक चुरस्ताने विषे वणीवाट एकठी मिले तिहां विहाट विचाले एतली जगां साधवीने रहवा न कल्पई अनइ लागताज १३ सूत्र में पूर्वोक्त ठिकाने साधुको रहवाकल्पे इति ॥२३॥

प्रश्न २४—साधु की तरह साध्वी चौंकी पाटिया पर बैठे कि नहीं। उत्तर—नहीं बैठे औहहत्कल्प पञ्चमाध्ययन मां मनाही छइ ॥ यतः—

नोकप्पईनिग्गंथीणं सविसाणयंसि फलयंसिवा पीढंसिवा चिठित्तएवा निसित्तएवा ३८ कप्पईनिग्गंथाणंसि विसाणयंसि फलयंसिवा पीढंसिवा चिठित्तएवा निसिइत्तएवा ॥ ३९ ॥

अस्यार्थः—न कल्पे साधवी नइं पाया सहित चौंकी तथा बाजोठ तथा पाटिया ऊपर ऊभा रहिवउं बइसउं न कल्पइ अने साधुने पूर्वक चौंकी आदि पर बैठना कल्पइ इस अड़तीसमें सूत्र में साध्वी को चौंकी आदि पर बैठना न कल्पे और उनतालीसमें सूत्रमें साध को चौंकी आदि पर बैठना कल्पइ इति २४ ॥

प्रश्न२५—साधुकीतरह साध्वी नवीन ग्रन्थ रच कर प्रसिद्ध करनेमें कोई दोषहै या नहीं

उत्तर—इस मे दूषण मालूम होता है, क्यों कि श्रीजैनमत में पुरुषधर्म मुख्य कथन करा है पर स्त्रीधर्म मुख्य नहीं कथन करा, ग्रन्थ का रचना और व्याख्यान का करना, और चर्चादि करके जैनमतकी थिरता का जमाना येह गीतार्थमुनियों का अधिकारहै सामान्य मुनिका भी अखतयार नहीं तो साध्वीजी का अखित्यार कैसे बन सकता है,तथा जैनमत में लाखों वलकी करोडों जैनपुस्तक मजूदहैं ऐसा कोई ग्रन्थादि देखने सुनने में आया नहीं कि अमुक आर्या का करा यह ग्रन्थ है और श्री नन्दीसूत्र में कहा है ऋषभदेवजी के मुनियों का रचा ८४००० पयन्ना है, और बा वीस तीर्थंकरो कि मुनियों का रचा संखगातेहजार प्रकरण ग्रन्थ है और श्रीमहावीरजी के मुनियों का रचा १४००० हजार पयन्ना ग्रन्थ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है, यह सब ही द्वादशांग बाणी की तरह मानने कहेहैं यह लेखतो नन्दी सूत्रमें हैपर इतने ग्रन्थ पयन्ने साध्वीयोंके रचेहैं यह लेख नन्दी सूत्र में नही इस से यही मालूम होता है जैनमत में साध्वीको ग्रन्थ रचनेकी आज्ञा नही दूसरा साध्वीयें के ग्रन्थ रचने से साधुओं की महतता का निरादर होता है इसी लिये जैनमत में पुरुषधर्म प्रधान है, सो भगवान महावीर स्वामी के हस्त दीक्षित श्री धर्मदास गणी अपनी बनाई उपदेश माला नाम सूत्र में ऐसा कहते हैं ॥ यतः—

अणुगम्मई भगवई रायसुअज्जा सहस्सविंदेहिं तहविनकरेइमाणं परिं यछइ तंतहातूणं १३ वरिससय दि

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खिअज्जाएअज्जदिखिउसाहु अभिग
मण वंदननमंसणेण विणएणसोपुज्जो
१५दिणदिक्खि अस्सदमगस्स अभि
मुहा अज्ज चंदणा अज्जा निछइआस
णगहणंसोविविणउसव्वअज्जाणं १४
धम्मोपुरिसप्पभवो पुरिसवर देसिउं
पुरिस जिट्ठो लोएविपहूपुरसो किंपुण
लोगुत्तमेधम्मे १६ सबाहणस्सरन्नो
तइयाबणारसीएइ नयरीए कन्नासह
स्समहिअं आसीकिररूववंतीणं १७
तहवि आसारायसिरि उल्लूटंतीनता
इयाताहिं उअरट्ठिएण इक्केण ताइया

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अंगवीरेण १८ महिलाणसुबहुआणवि अझाउइहसमत्तघरसारो रायपुरसेहिं निज्जइजणेविपुरिसोजहिंनाथ्थि ।

छि—१९ अणुगम्मईक०। केड़े लागा हिंडइ भगवईक०। रूप सौ भाग्य ज्ञानादि गुणवती रायक०। राजा दधिवाहनगुनीसुअक०। बेटी अज्जाक०। साध्वी सहस्सक०। हजारे गमे विदेहिंक०। लोक तहवीक०। न करइमाणंक० अहङ्कार परियछइक०। जाणइछइ स्युं जाणइछे जे एतलो लोकना समूह केडइ फिर छइ ते ज्ञान दर्शन चारित्रना गुणेंकरी तुणं निश्चइ १३ दिणदिखियस्सक०। ते दिहाडानों दीष्यो तेह दिहाडइज दीष्या दीधीछइ एह वो दमगस्सक०। भिख्यारी गुरेवंदाववा साध्वी

नई उपासरई मोकल्यो अभिमुखाक०। तेहनई साम्हइ आवइ अज्जक०। सरल चंदनाक०। चंदण वाला अज्जाक०। साध्वीते निरूद्दक० नवांछइ आसणगहणांक०। आसणनं ग्रहवं, वेसवं, ते भिखारी साधु ऊभा आप चन्दन बालाजी बैठो नही ए भाव सो जिणउक० । विनयते हवो सत्रक० । सवलीए अज्जाणंक० । आर्यासाध्वीयें करवो १४ वरिस क० । वरस सयक०। सौनोदीखिअ्आएक०। दीखया लीधो छुई एहवी अज्जाएक०। साध्वीई अज्जक०। आजनो दिखिअउक० । दीचोसाहूक० । साधु छुई तेहनें अभिगमन क० । ते साध आवतइ साहमो जाइं वंदणक०। द्वादशावर्त वंदणाइं वांदइं नमंसणेणंक०। सामान्यप्रकारें नमस्कार करई विणएणक० । आसनदेवं, ऊभो थावं, इत्यादिक विनयकरीसोक० । ते साध आजनो

दीक्षो सौ वरसनो दीक्षित साधीनइं पुज्ञोक० पूज्यजाणवो तेस्थांमाटइं १५ धम्मोक०। धर्म सिद्धान्त चारित्र रूपते पुरिसक०। पुरुष स्त्री गण धरादिक ते हथी पभवोक०। ऊपनो पुरिसक०। पुरुष मांहि वरक०। प्रधान जेतीर्थंकर देव तेणे देसिउक०। देखा ड्योते माटेधर्म मांहि पुरिसक०। पुरुष जिट्ठोक०। बड़ो लोए- विक०। लोकमांहिपणि पजूक०। ठाकुर पुरि- सोक०। पुरुषजङ्इं झिंक०। स्युं पुणक०। बलो कहवं लोगुत्तमेधम्मेक०। सर्वलोकमांहि उत्तम सर्वज्ञान धर्म मांहि तिहां विशेषइं पुरुष प्रधानऊइं एभाव १६ संवाहणस्सक०। संबाधन एहवइनामइं रन्नोक०। राजा तइयाक०। तदा- कालइं वाणारसी एहवईनामइं नयरीएक०। नगरी तेहनइं विषइंथयो तेहनइं कन्नाक०। कन्यानुं सहसक०। हजारथकी महि भंक०।

अधिकी आसीक०। थयुं किरक०। साचु रूप-
वंतीणांक०। रूपवंत १७ तहविक०। तोहिपणि
असाक०। तेरायक०। राजानो सिरीक०।
लच्छी उवट्टंतीक०। विणसतो नताइयाक०।
नराषीतेराज लच्छी ताहिंक०। ते कन्याई
उअरक०। उदरनई विषई ठिएणक०। रह-
इथकई इक्के णक०। एकलई पुवे ताइयाक०।
तेराज लच्छी विणसतिराषी कुणि अङ्कवीरे-
णक०। अङ्कबीर्य एहवई नामई बेटई तिणई
१८ महिलाणक०। स्त्री सुबङ्क आणविक०।
घणुवणीई छतीछई तोहि पणि मशाउक०।
मांडईयको इहक०। एघरमांहो समस्तक०।
सघलं एघरसारोक०। घरनं सारङईतेरायक०
राजा ना पुरिसेहिंक० पुरुषे निज्जइक०। लेइ-
जाई जेणेवक०। लोकमांहि पुण एरीतछइ
पुरिसोक०। पुरुष जहिंक०। जिहां नत्थि क०।

जे घर मांहि पुरुष नथी ते घरनो लच्छी राजा लीई १९ ॥ इति ॥ २५ ॥

प्रश्न २६—साधु तो ग्यारां अङ्ग सूत्र पढ़ने की अधिकारी है उनको नवीन ग्रन्थ रचने को आपने मनाहीकही तो श्रावक सूत्र पढने का अधिकारी नही उसको नवीन ग्रन्थ रचने की आज्ञा कैसे हुई जद श्रावक को नवीन ग्रन्थ रचने की आज्ञा न हुई तो तुमारा यह ग्रन्थ रचने का प्रयास उद्यम निषफल हुआ

उत्तर—हे मित्र स्त्रीत्व होणेसे साधुको ग्रन्थ रचना और पुरुषों की सभा में धर्मोपदेश देना मनाही मालूम होता है पर श्रावक को पुरुषत्वपणासे आज्ञा मालूम होती है सोई दिखातेहैं रुषभदासजी नाम श्रावक का करा ग्रन्थ छपकर प्रसिद्ध हुआ है और मैंने वाचा भी है और उसी रिषभदासकृत चैत्यवंदन और थूईआ है जो कि बड़े बड़े गीतार्थ सुनीयों के पढ़ने में आते हैं रिषभदास गुण गावता ए

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सफल थयो अवतार तो इत्यादि और देखीये प्रकर्णरत्नाकर भाग दूसरे में ग्रन्थ ६१ षष्टी-शतक नामा सज्जन भंडारी नो पुच अने जिने श्वर सूरीनो पिता प्रसिद्ध एवोजे भंडारीअने मिचंद एतले भंडारिक गोत्री ने मिचन्द श्रावक तेणेरइया आउ रचिउ जे केइवि केटली गाहाउ गाथा १ एक सौ ने एक सठ ते गाथाउने विहिमगारया श्री वीतराग भाषित विधि मार्ग एतले मोक्ष मार्गने विषे-रत एतले तत्पर एहवाजे भव्वा भव्यजीवते पढंतु सूत्र थकी भणो जाणंतु अर्थ परिज्ञाने करी जानो सूत्रार्थबेज्ञ सम्यक्प्रकारे अभ्यासी ने सिवं शिवप्रते एतले निरूपद्रव मोक्षनेजाउ पामो तथा इसी प्राकृत ग्रन्थ की भाषा के करने वाला भी श्रावक मोहनलाल जक्ष गोत्री है और इसी ग्रंथ की टीका तपोरत्न

सुनो गुण सुन्द्र उपाध्याय क्रत है यह लेख प्रकरण रत्नाकर भाग दूसरा पृष्ठ६६० पर है सो देख लेना इस मूजब श्रावक नवीन ग्रंथ बनाने का अधिकारी है सो तुझे बतायदिया परंतु हे मित्र साधी को नवीनग्रंथ रचना तू बतला और उसमें कौनसा प्रमाण है जिस बात में प्रमाण नही होगा सो कोई बुद्धिवान नही मानेगा ॥ इति ॥ २६ ॥

प्रश्न २७—कोईक ढूंढक साधु कहते हैं, जैनमत के पुस्तक बहुत अच्छे थे परंतु जती लोकों ने बत्तीस सूत्र विना सब पुस्तक बिगाड़ दिये यह उन का कहना कैसाक है। उत्तर यह उन का कथन केवल झूठा है, भोले जीवों को ठगने के लिये, सोई दिखाते हैं प्रथम तो जो कोई लोभ के वश ठगी करनी चाहिता हैं वो किसी के लेख में नामके पासे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्थात् अपने लहने की तरफ झूठी रकम लिख लेता है परंतु जिस झूठी रकम लिखने से गिरा से उलटा देना पड़े ऐसी जमा के पासी नही लिखता तैसे ही इन जैन ग्रन्थों में ठाम २ कुकरम करने वाले जतीयों की निन्दा है बलके पासत्था उसन्ना सच्छन्दा संसत्थादि पांचोंकी महत विस्तारसे ठामठाम निन्दा कथन करी है और इनपाचों का सुख देखने से महा पाप कथन करा है, इन को सङ्गति नित्यही वर्जनी कहीहै और जो साधु सर्वदृत्ति होय कर फूलादि दर्व पूजा करे उस को महानिसीथ सूत्र में बहुत दूषणकथन करा हैं इतयादि लेख जैनग्रन्थोंमेंप्रगट है तो फिर कहना कि उना ढीले पसत्थे यतीयों ने सर्व सूत्र विगाड़ दिये यह कैसे सिद्ध होए सूत्रविगाड़ दिये तब जाणते जो उन की निन्दारूप

वाक्य जैनपुस्तकों में थे उन कुछ लेखों को
हटाय कर याने निकाल कर उस के इवज
ऐसा लेख लिख देते हैं गोतम पांचमें आरे में मेरी
सम्प्रदाय के मुनि इन चिन्हों लक्षणों से जाने
जांयगे अपने उपाश्रय आप बनवाय कर
नित्य ही वहां रहेंगे धन रखेंगे कच्चा पानी
पीवेंगे फूलादि से प्रतिमा की द्रव्य पूजा करेंगे
इत्यादि लक्षण द्वारा उन को जो गुरु करके
मानेगें वोही मेरी आज्ञा के आराधिक होंगे
ऐसा लेख लिख देते तो हम जानते उन ज-
तीयों ने कुछ जैनपुस्तक विगाड़ दिये। सो हे
भाई ऐसा लेख तो किसी जैनपुस्तक में नहीं
है तो सूत्रों का और पुस्तकों का विगाड़देना
कैसे माना जावे। दूसरा आप देखो प्राचीन
भण्डारियों में जो पुस्तक ताड़पत्रों पर संवत
विक्रमादित्य के छीमें सैंकड़े वा सातमें सैंकड़े के

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बखत के लिखेहुए जिन को देखने से अत्याश्चर्य्य उत्पन्न होता है उनपुस्तकों में और अब के नये पुस्तकों में कुछ भी लगारेक फरक नहीं है तो फिर जैनपुस्तक सूत्र कैसे विगाड़े सही हुए बल-के उन यतीयों का हम बहुत उपकार मानते हैं,आपती चाहे वो सिथलाचारी होगये होंगे परंतु सूत्रों का एक अक्षर मात्रा विन्द, उन महाराजों ने कमबेश नहीक्रिया अर्थात्नहीं विगाड़ा अगर वो यती जैन पुस्तक विगाड़ ने वाले होते तो जैनमत काहे को रहना था क्यौंकि धर्म का मूल पुस्तकें हैं परन्तु हेमित्र उन यतियों के अन्तःकरण खोटे नही थे वो जानते थे हंमारे से साधु धर्म नहीं पलता, परन्तु शास्त्रों का एक अक्षर हम विगाड़े गें तो अनन्तसंसारी होजावेंगे इस भय से उन यती लोकों ने कोई जैनपुस्तक नहीं विगाड़ा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तब ही तो गणधरोपदिष्ट धर्म शास्त्र द्वारा ठीक २ अबकी समय सुना जाता है और ये जो ढूंढक साधु हैं अनन्तसंसार परिभ्रमणसे भी नहीं डरते तबही पासचन्द कृत टबा में जहां २जिन प्रतिमा ऐसा अर्थ था उस को हरताल से हटाय कर उस जगह साधु तथा ज्ञान ऐसा अर्थ भोले जीवोंको भ्रमाणेके लिए लिख धरा परन्तु बुद्धिवाला कोई आदमी है जो टीका को देख कर शुद्ध अर्थ का निश्चय करे क्योंकि कुल्ल भाषारूप अर्थ टीका से बना है और टीका ही सर्व टबे और भाषा रूप अर्थ का मूल जड़ याने खजाना है टीका से विरुद्ध भाषा रूप अर्थ कोई बुद्धिमान नहीं मान सकता इति ॥ २७ ॥

प्रश्न २८—जो चहिर होती है वो साधु खाये चाहे श्रावक खाय सब को मारनेवाली

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

होती है तैसेही श्रीमहानिसीथ सूत्र में साधु को तीन चीजे अनन्त संसार परिभ्रमण का कारण कथन करा है तो श्रावक को अनन्त संसार परिभ्रमनका कारण क्यों नही होता अग्निका जलाना १ कच्चा पाणी पीणा २ स्त्री का भोगना ३ यह तीन चीजे है उत्तर—हे मित्र यह तेरा करा प्रश्न और इसका उत्तर श्रीमहांनसीथ सूत्र में है गोतमजीने भगवान को पूछा हे पूज्य यह तीनो कर्मों से मुनी अनन्त संसारी होता है तो श्रावक का गुण व्रत और शिक्षा व्रत का धरणा भी निषफल होना चाहिये इसके उत्तर में भगवान कहते हैं हे गोतम में दो प्रकार का धर्म परूप्या है एक श्रावक धर्म १ दूसरा साधु का धर्म इस वास्ते श्रावक को तीनो कारण अनन्त संसार का कारण नही है इसी तरों से हे मित्र फूल

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चन्द नादि द्रव्य पूजा श्रावक को मुक्ति का कारणहै परंतु मुनीको नही और जोढूंढक भाई कहते हैं कि द्रव्य पूजा मुनीको दुखदाई है तो श्रावकको सुखदाई कैसे ऊई यह कथन अणजाणों का है क्योंकि द्रव्य पूजा रोगी को औषध तुल्य है और मुनी ग्रहस्त रूप रोगसे रहित है एतले अरम्भ से रहित होचुका है इस कारण से भगवानने दो प्रकार का धर्म जुदा जुदा कथन करा है हे मित्र ऐसे जो तूं नही माने तो हम तेरेको पूछते हैं बंधे होय त्रसजीव को मुनी छोड़ देवे तो नसीत सूत्र में मुनी को दंड कथन किया है तो क्या तुम श्रावक को त्रसजीव छोड़ने छुड़ाने में पाप मानते हो तथा भूखे आदमी गृहस्थीको मुनि अन्न पाणी खाने को देवे तो मुनी को दंड कथन करा है तो श्रावक अनुकंपा से किसी

को खाने पीने को अन्नादि देता है उसमें भी आप पाप समझते होगे और तुमारे साधुने ब्रत क्रिया है वो आपने खानेमें पाप समझता है तैसेही और मुनीयों के खाने में भी पाप जाणता होगा ऐसे बहुत दृष्टांत है सो जान लेने और यह भी जानलेना मुनीयोंका कल्प अलादा है जाने जुदाहै और श्रावकका कल्प जुदा है अब वो महा निसीत का यह पाठ है

॥ यतः ॥ मेहुण आउकायं तेउ-कायं तहे वय तम्हातउ विवजंतेणं विजिज्जासजइंदिए से भयवंगारछीणं सव्वमे वंपव तेई तो जई अबोहि भविज्जेसु तउ सिरकाणु वयधरणंतु-

निफलं णोदुविहे अरकाएसुसमणेय सुसावए महव्वयं गायमा ।

इति द्वितीयअध्ययने ॥ २८ ॥

प्रश्न २९—सूत्रों में बहुत जगा पाठांतर आते हैं उसका क्या कारण है उत्तर—नन्दी सूत्र में समवायांग सूत्र में जोण से द्वादशांग सूत्र कथन करे है उसमें कोई पाठांतर नही था और कोई भूलामण भी नही थी यह देवर्द्धीगणीक्षिमा श्रमणजी आदि आचार्योंने जिसवक्त सूत्र लिखे थे उस वक्त एक आचार्यने कह्या इस सूत्र में इस जगा मेरे ऐसा पाठ याद है तब दूसरे आचार्यने कह्या इसी सूत्र में इसी जगा मेरे ऐसा पाठ याद है तब देवर्द्धीगणि क्षिमा श्रमणादि आचार्यों ने विचारा कि दो आचार्यों के कथन को एक

कथन तो हम नही कर सकते क्योंकि हमको खबर नही किसका कथन गणधरोंके कथणानुसार है रखे गणधरों का वचन खंडणे से हमको महत आशातनालगे इस भय से उन महा राजो ने जिस आचार्य का कथन प्रबल जांणा वो तो लिखने के तौरपर लिखा और दूसरे आचार्य का कथन पाठांतर में लिख दिया जैसे जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र में रिषभ कूट आठजोजन मूलमें कथनकरके आगे पाठांतर में वोही रिषभकूट मूलमें बारा योजन कथन करा ऐसेही जहां जहां पाठांतर एतलेसूत्रों में बहुत जगे पाठांतर आते हैं तहां तहां ऐसाही मतलब समझ लेना और मुलामणा जैसे जहां दीक्षा का अधिकार तहां कहणा जहां । जम्मालि तहां भाणियव्वं यह भी इन

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ढूंढकसं० पाश्रयनो

हीं सूत्रों में लिखत के अक्षर संक्षेपिने के लिये है ॥ इति ॥ २९ ॥

प्रश्न ३०—जैनतत्वादर्शपृष्ट ५७७में बारां जोजनकी धजाभडाईकही हैयह कथन समझ में न आने से गप्प मालूम होती है उत्तर जैन सिद्धांत में बारां जोजन की धजा झड़ाई नही कही हुई कों जो आत्मारामजी ने मणाकल्पत झड़ाई लिखी है तो जैन पुस्तकसे विरुद्ध लेख होणेसे हम इस जैन तत्वा दर्श के लेख को गप्प ही मानेंगे परन्तु जेकर जैन सिद्धान्तानुसार ही लेख है तो वो गप्प नही बन सकती किन्तु सच्च ही मानना चाहिये अगर सिद्धांतो में कही बात को कुयुक्ती से गप्प ठहरायेगा तो ऐसीयां बहुत बातां है जो तेरे को हम गप्प ठहराय दिखाते हैं परंतु हे मित्र हमारे लोकों की बुद्धि तुच्छ है

और शास्त्रों का कथन गंभीर आशय है हमारी समझ में नहो आता तो हमारी समझका दोष है परंतु शास्त्र का कथन झूठ नही अगर तूं झूठ हो कहेगा तो हम तेरे को पूछते हैं सूत्रों में ऐसा कथन है एक बूंद भर पाणी में असंख्य जीव है और लोटेभर पाणी में भी असंख्य जीव है और एक कूवे के पाणी में भी असंख्य जीव है और असंख्य समुद्र असंख्य नदी प्रमुख कुल्ल पाणी में भी असंख्य जीव है यह कथन को साच बुद्धीवान क्योंकर मानेंगे और जंबूद्वीप पन्नत्ती प्रमुख सूत्रों में देवताकी शीघ्रगतीके विषय में ऐसा कथन है एकचुटकी वजाने में देवता जंबूद्वीप की प्रदक्षणा तीन दफा ले आता है यह कथन बुद्धी में न आने से बुद्धिमान क्योंकर सच मानेगे और देखिये एक महीने में तीन

लेप पाणी के लगाये और तीन थानक माया के सेवे तो सबला दोष कथन करा है तो इस हिसाब एक वर्ष में छत्तीस लेपपाणी के और छत्तीस माया के थानिक सेवे तो सबला दोष होणा चाहिये था परंतु सूत्रम दसलेप पाणी के और दस थानिक दगेबाजी अर्थात् माया के एक वर्ष में सेवे तो सबला दोष कथन करा है तो क्या गणधरजी महाराज को ऐसा सीधा हिसाब भी नहीं आता था अरे मित्र बुद्धी का माना प्रमाण कबी सिद्ध नही होगा क्योंकि बुद्धी सब की इक जैसी नही होती सोई दिखाते हैं जैसे तुमने व्यवहार सूत्र दस्स भगवान की वाणी रूपमाना है और तुमारा बड़ा ढूंढक ऋषि श्री जीवजी ने व्यवहार सूत्रको खोटा जानकर नही माना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एतले ३१ सूत्र माने हैं और तुम बत्तीस मानतेहो यह वुद्धिका माना प्रमाणएक जैसा कैसे मिला और अच्छी आपकीगुरूपरंपराय है जिसमें प्रत्यक्ष विरोध हैं और देखिये शास्त्रों में कह्या कि समयसे सूक्ष्म काल नही होता और हम समयसे सूक्ष्म काल होता दिखाते हैं इस गुजरावाले से ३०० वा ढाई सौ २५० कोस अनुमान दिल्ली है तो कोई जीव गुज-रावाले से काल करके एक समय में दिल्ली शहर में उत्पन्न होया अब हम तेरेको पूछते हैं जब वो जीव लाहौर के करीब गया था तब समयका बारवां हिस्सा हुआ था और जब वो जीव अम्बाले के करीब गया था तब आधा समय हुआ था और जैन शास्त्रों में समय का विभाग याने टुकड़ा होता नही

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

और हमारीबुद्धी कहतीहै प्रत्यक्ष इक समय के हजारां टुकड़े हो सकते हैं तो क्या हम इस निकारी बुद्धी के सिद्ध करे प्रमाण को मानकर अमोलक जिन बचन का खंडन कर सकते हैं कदापि खंडननहीकर सकते इत्यादि बहुत बातें जैन शास्त्रों में हैं सो खयालकर देख लेनी ॥ ३० ॥

प्रश्न ३१—लब्धिफोडने में क्या दूषण है।
उत्तर—संघ वा गुरूवासुधर्मी वातीर्थयाचादि कारण से लब्धी फोडनेमें कोई परबल दूषण नही है और काम क्रोध प्रमाद अहङ्कार इन्द्रियोंको विषय आदि दुष्ट कारणोंके लिये जो लब्धिका फोड़णाहै वोही जैनमत में दुष्ट महा पापी गिणा जाता है । तर्क—जो ऐसे था तो यात्राके लिये जंघाचारण विद्याचारण

मुनीयोंने लब्धी फोडी तिनको बिना आलोयां विराधिक क्यों कथन करा। उत्तर—हे मित्र जैसे मुनी गोचरी लियाकर इरिया वही पडिकमता है वो गोचरी की नही परंतु गोचरी करतां जो प्रमाद हुआ उसकी इरिया वही है ऐसे ही जो मुनी जिनेंद्रदेवके दर्शनको समवसरण में जावे तहां भी इरिया वही पडिकमता है वो इरिया वही रस्ते में प्रमादकी है परंतु जिनेंद्रदेवके दर्शणकी नही ऐसेही जंघाचारण विद्याचारण मुनीयों की तीर के वेगकी तरह शीघ्रगती है उस शीघ्र गती की इरिया वही रूप आलोयणा है परंतु तीर्थयात्रा की आलोयणा नही और गुजरावाले के भंडारे में समवायांग सूत्र टबे का है सो मलूकचन्द ढूंढक की शिष्यनी आर्या विसनाजी ढूंढनी के हाथ का लिखा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुआ है उसमें साफलिखा है कि जंघाचारण
विद्याचारण मुनी जिन प्रतिमा के दर्शन को
जाते हैं और उसमें गुरू की थापना करी
डेढ हाथ वेगलारही घडिक में यह भी लेख
है और चेइयरूरका क०। जिन प्रतिमाकी पीछे
रूखते चेइयरूरका इत्यादि लेखोंको वाचकर
मालूम होता है अमरसिंह की तरह सभ
ढूंढक जिन प्रतिमाके उथापक नही थे इति
और जेठमल्ल ढूंढक ने जो तेरां पंथीयों पर
चर्चा बनाई है वो मेरे पास है उसके तेतीस
पत्रे हैं उन्हां इसमें पत्रे पर वो जेठमल्ल लिखता
है माटे सर्वलब्धिनोप्रायछित्त नही इन्द्रिविषय
सुखप्रमाद रागद्वेष इत्यादि कारणे करे तो
दोष लागे अनेरा निर्विकार भावे दूषण किसी
सूत्रमां होवे तो कहो यह लेख तुमारा
जेठमल्लनी चर्चा मां छे ॥ ३१ ॥

प्रश्न३२ — तुम कहते हो जैनग्रन्थों में पूर्वापर विरोध नहीं है तो पहिला जिस चीज का निषेध करना फिर उसी चीज को अङ्गीकार करना यह पूर्वापर विरोध नहीं तो क्या है। उत्तर— जिस अपेक्षा से जहां निषेध है उसी अपेक्षा अङ्गीकार करना किसी जैन ग्रन्थ में नहीं है। परन्तु निषेध में तो अपर अपेक्षा और अङ्गीकार करनेमें अपर अपेक्षा यही स्याद्वाद रूप शैली जैनग्रन्थोंको समझनी मुशकल है बिना समझाहो तेरे को पूर्वापर बिरोध मालूम होता है, तैंने किसी जैनग्रन्थवेता गीतार्थ गुरू की सङ्गति नहीं करी इति ॥ ३२ ॥

प्रश्न३३—ढूंढक साधु रातको सुची निमित्त पानी नही रखते और सम्यक्त्व सल्लोद्धार ग्रन्थ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट १९ में मुनि आत्मारामजी ढूंढक साधुओं को कहते हैं हे ढूंढक रिषो तुम लघुनीत से गुदा धोते हो और लोच करके माचासे सिर धोते हो और लघुनीत से मुह पत्ती धोतेहो इति । अब इस लेख से मालूम होताहै ढूंढक साधु पाणी की तरह निशङ्कपणे लघुनीतको वर्तते हैं और बत्तीस सूत्र मानते हैं तो क्या बत्तीससूत्रों में मात्रासे सुची करणी कही है । उत्तर— हे मित्र बत्तीस सूत्र में क्या बलके किसी जैनपुस्तक में माचासे सुची करनीनही लिखी और बत्तीस सूत्रों के बीच निसीतसूत्र है उस में लिखते हैं कि जिस कारण से गृहस्थी के मन में शङ्क जावे यह जैन के मुनी नहाते नही हैं और शयत लघुनीतमात्रा से हाथ एतलेसुची कर लेते होंगे ऐसेशकवाला कारण भी मुनि नही करे अगर करेतोउस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　　Jin Gun Aaradhak Trust

मुनि को प्राश्चित्त कथन किया है तो अपने दिल में सोचो लघुनीत बरतने का शक्क रूप कारण से जब प्राश्चित्त हुआ तो लघुनीत के वरतने की आज्ञा कैसे हुई पक्षपातको छोड़ कर सूत्र की तरफ खयाल करोगे तो यथार्थ भाषण होगा ॥ यतः—

निसीतचतुर्थाउद्देशके जेभिक्खुउच्चार पासवणं परिठविताणायमइणायंमंतं वासाइज्जई ॥ १४० ॥

अस्यार्थः—जे कोई साधु साधवी दिशा मात्रा फिर कर पाणी से सुच न करे तो प्राश्चित्त ॥

जेभिक्खूउच्चार पासवणं परिठवित्ता तथ्येवआयमइ आयमंतंवा साइज्जइ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अस्यार्थः—जे कोई साधु साधवी जहां दिशा फिरे तहां ही सुच करे, तो प्रायश्चित्त इस का कारण एह है किसी गृहस्थीने देखा एह साधु दिशा बैठा है और पात्रभी इस के नजीक पड़ा है एह देख कर उसगृहस्थी के मन में ऐसा शङ्क होगा एह जैन के साधु मलीन रहते हैं और दिशा फिरतग्रा अवश्य पिशाब आता है तो इस साधु ने शयत इस पात्र में ही पिशाब करके रखा हो ऐसी गृहस्थी को शङ्का दूर करने को पाणीका पात्र दिशा वैठिया नजीक न रखे जोरखे तो प्रायश्चित्त आवे ॥ १४१ ॥

जेभिख्खूउच्चार पासवणं परिठवित्ता अइदूरेआइमइआइमे तंवासाइज्जइ १४१

अस्यार्थः—साधु साध्वी जहां दिशाबैठें उस जगहसे बज्जतदूरपाणी रखेंतो साधु साध्वीको प्रायछित्त आवे इसका कारण यह है गृहस्थी ने देखा कि यह जैनका साधु दिशा बैठा है और पाणी इसके पास नहीहै यह जैनीसाधु दिशा फिरकर हाथ नही धोते क्योंकि पाणी दूर पड़ा है उस गृहस्तीने देखा नही तब जैनमार्ग की बज्जत निन्दा होय गलीच जान कर कोई दीक्षा न लें इत्यादि दूषण टालने के लिये सुनी पाणी का पात्र बज्जत दूर न रखे जो रखे तो प्रायछित्त आवे एतले ना तो बज्जत नजीक और ना बज्जत दूर पाणी का पात्र रखे परंतु मध्य में ऐसे ठिकाने साधु साध्वी पानी का पात्रा रखे कि जो साधु की दिशा बैठ्या देखे तब साधु के देखणे से साथ ही पाणीका पात्र देखे यह साधु दिशा बैठा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है और यह पाणी का पात्रा पड़ा है जिससे गृहस्थी के मनमें कोई शंका न जावे ऐसे ठिकाने साधु साध्वी पाणीका पात्र रखें और जो ढूंढक लोग कहते हैं पिशाबमें डर है तो व्यवहार सूत्र में मोय पडिमा दो प्रकार की कैसे कथन करी, उत्तर—वो तो गच्छसेबाहिर शहिरसे बाहिर बनमें जाकर वो पडिमाधारी मुनी रहते हैं जैसे अन्यमत में वानप्रस्थ मुनीयों का कथन है ऐसे जैन मतमें पडिमा-धारी मुनीका कथन है इसमें कोई दूषण नही और जो दृहत्कल्पमें कथन है वो ननथ गाडा गाडे सर्प्पादि को जहिर के दूर करणे के लिये औषधीवत है और जो कहतेहैं पडिमा-धारी मुनी उत्तम है उनका करा काम हम को करणे में क्या दोष है इसका उत्तर हम

आपको पूछते हैं कि श्री जिनेंद्रदेव तो सच्चा उत्तम हैं उनका छत तुमको करणा चाहिये सो कहते हैं तीर्थंकर देव किसी लिङ्ग में नहीं होते ऐसा समवायांग सूत्र में कथन है तो हे ढूंढको आपने लिङ्ग काहेको धारण किया नेकर लिङ्ग धारणे में कुछ गुण होता तो श्रीजिनेंद्रदेव उथा सुखवस्त्रपलिङ्ग क्यों न धारणकरते इसलिये प्रथम तो आप उथा जो जैन लिङ्ग है इसको त्यागो फिर तुमने पडिमाधारी सुनो की छत कर लेणी और श्री दशाश्रुतखंध में पडिमाधारी का कुछिक अधिकार है सो थोड़ा सा लिखता हूं।

॥ यतः ॥ मासियणंभिक्खु पडिमं पडिवन्नस्सअणगारस्स जत्थेवसूरिए अथमेज्जा तथेवजलंसिवा थलंसिवा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दुगंसिवा निणंसिवा पवयंसिवा विस-
मंसिवा गडाएवा दरीएवा कप्पइ से
तंरयणि तथ्थवउवायणावित्तए नोसे
कप्पई पयमविगमित्तए ।

इसका भावार्थ यह है पडिमाधारी मुनी
को जल में थल में जहां सूर्य अस्त होवे तहां
सारी रात गुजारे परंतु एक पग मात्र आवा
पाछा न होवे इति यह भी उत्तम मुनीयों
का कथन है तुम क्यों नहीं करते अरे मित्र
ऐसे मानणे से जैन मतकी कोई व्यवस्था ठीक
न रहेगी इस लिये जिस जिस मुनीको जो २
कर्णका हुकम है वोही उतके करणेसे कल्याण
है अन्यथा नहीं अगर ऐसे न होय तो श्री
उत्तराध्ययने छै प्रकारके मुनीयों का

छै प्रकार का कल्प जाने करतव्य जुदा जुदा किउं कथन करा।

॥ यतः ॥ छव्विहाकप्पठिई पंतं-समाइ संजयकप्पइठ्ठइ१ छेउवगाणिय संजयकप्पठ्ठिइए २ णिव्विसमाणक-प्पठ्ठिई ३ निव्विठ्ठकाईयकप्पठ्ठिई ४ जिणकप्पठ्ठिई५थेरेकप्पठ्ठिई ६त्तिवेमि

और श्री प्रवचण सारोद्धार ग्रन्थ जो कि पूर्वाचार्योंका किया सूत्रकी तरहमानणे जोग्य है उसमें रातको सूचीके लिये पाणी रखणा लिखा है इति ॥ ३३ ॥

प्रश्न ३४—ढूंढक लोक कहते है सूत्रा अनुसार हो हम मुख पत्ती मुहपर बांधते हैं और मुखपत्ती मुखपर बांधणेसे हो जैन का

मुनी मालूम होता है यह कथन कैसा है उत्तर—हे मित्र यह कथन जैन शास्त्रों से विरुद्ध है मुनी का चिन्ह श्रीउत्तराध्ययनसूत्र मां रजोहरण कथन किया है इसिक्षयं रजोहरण रिषीयों की धजा जाने जैनके मुनीयों का चिन्हरजोहरण कथन करा है और जो आपने कह्या सूत्र अनुसार मुखपत्ती बांधनी यह तो किसी जैन सूत्र से साबत नही होगा इस बात की चर्चा का बहुत सारा कथन है सो हम नही लिखते अगर तेरेको सच्च झूठ की परीक्षा करणी है तो हमारे गुरुमहाराज श्री श्री बुद्धि विजयजी कृत मुखपत्ती की चर्चा जो छपकर प्रसिद्ध हो चुकी है और उसमें बहुत सूत्रों के पाठ अर्थ संयुक्त दाखल किये है और ढूंढको की करी कुतर्कों का जबाब सूत्रानुसार अच्छी तरह से दिया है उसको

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

तूं देख उसके देखने से तुझे दरयप्त मालूम होगा जैन मुनी मुखपत्ती से मुख ढांक कर बोलते हैं परंतु मुखको बांधनी यह बड़ाभारी कुलिङ्ग और अनंत तीर्थंकरो की आज्ञा का उलंघण है और मुखपत्ती अर्थात् मुखवस्त्र जो है इस को और किसी काम में न वर्तने से ही इसकानाम मुखवस्त्र है और इक पाठ आपको दिखाने के लिये यहां लिख देता हों

जेभिक्खू विभूसा वडियाए अप्प-णोदंते आघसेज्जवा पघसेज्जवा आघ-संतंवा पघसंतंवा साइज्जई ॥अस्यार्थः

जे साधु साध्वी विभूषा जाने सिंगार के लिये अपने दांत घसकर दांतना दिसे वार वार घसकर सपेद करे उस मुनीको दण्ड है ऐसे बहुत पाठदांतो के और होठोंके नसीत

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्र में है अब बुद्धीमानको विचारना चाहिये कि मुखपत्ती मुखपर बांधी हुई होती तो दांत तथा होठ धोने से वा रंगने से क्या सिङ्गार होता था और सुनी के सुन्दर दांत और होठ कैसे देखकर स्त्री प्रसन्न होकर रागी होती इसमें साफ मालूम होताहै सुनी के मुखपर मुखपत्ती बंधी हुई नही है॥ ३४॥

प्रश्न ३५—जैन मतमें धर्म किस प्रकार कथन किया है। उत्तर—जैन मतमें धर्म दो प्रकार माना है एक आत्म स्वभाव रूप धर्म दूसरा बाहिज पदार्थों का त्याग रूप धर्म और आत्मा के स्वभाव में स्थित होने से बाहिज पदार्थों से निर्मोह एतले बाहिज पदार्थों की अरुचीरूप सो आत्मास्वभावानुयाई बाहिज पदार्थों का त्याग यह तो मोक्षका साधन है और आत्मस्वरूपानुयाई बिना जो बाहिज

पदार्थों का त्याग रूप धर्म है वो स्वर्गादि सुखों का कारण है परंतु कर्मों से निराला याने कर्मों से आत्मा जुदा होना तद्रूप मोक्ष तिसका कारण नही है और जो प्रथम धर्म है सो अर्द्ध पुद्गल प्रावृतकाल जिस जीव का रहता है वो उस धर्म के योग्य होता है उस धर्म के रहने के ग्यारा ११ स्थान कहे जैसे द्वितीया का चन्द्रमा वो पूनमके दिन सोला-काला संपूर्ण होता है तैसेही चतुर्थगुणस्थान के जो आत्म स्वभाव रूप धर्म प्रगट हुआ है वो संपूर्ण धर्म रूप चन्द्रमा की एक अंशरूप है द्वितीया के चन्द्रवत् वोही द्वितीयाके चन्द्र तुल्य जो सम्यग् दृष्टिहै सो अनुक्रमसे बढ़ता २ पूनम के चन्द्र तुल्य जो चौदमा गुण स्थानक है सो वहां प्राप्त होता है एतले संपूर्ण धर्म पदको प्राप्त होता है इत्यादि जैनमतोपदिष्ट

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धर्मशास्त्ररूप देखनाहो तो श्री अध्यातमसार तथाअजेसार नाटिकादि ग्रन्थों से देखलेना बिन से अनादि अशुद्धताहोयशुद्धता पोषता परनत को बुद्ध कहे ज्ञान क्रिया सो मोष१तथा अपु-नर्बंधक थी माडीने जावचर्म गुणठाणा भाव अपेक्षाए जिन आणा मार्ग भाषे जाण २ तथा जे २ अंशेरे निरूपादिकपणा तेतेजाणोरे धर्म सम्यग दृष्टीरे गुणठानाथ की जाव लहे शिव शर्म ॥ इति ॥ ३५ ॥

प्रश्न ३६—जैन का साधु जब मरजाता है तब तुमारे साधु उस मृतक साधुको अग्नि से दाह करने के लिये श्रावकों को क्यों देते हैं लेनकि साधु को अग्नि से दाह करणा अयुक्त मालूम होता है। उत्तर—हे मित्र जेकर तूं हमारे साधु आसरो पूछता है तो हम तुमें उत्तर देते हैं हम तो करोड़ा जैन पुस्तक

मानते हैं और हमारे पूर्वाचार्यों ने मृतक साधु को बाहिर परठणा बंद किया है क्योंकि जब मृतक साधु बाहिर परिठ्ठाजावे तो जिन मतकी बहुत निन्दा होती है सोई दिखाते हैं उस मृतक को बाहिर उजाड़ादि में पड़े को देखकर अन्यमतवाले कहेंगे कि देखो जो इन साधुओं के बहुत लखपती सेवक हैं परंतु अपने गुरोंके लियेइनसे खफण और काष्टादि भी नही सरता तबही इन के गुरों कोकुत्ते आदि खाते हैं यह स्रावक काहे के हैंएह तो चण्डालहैं जिनोंसे अपने गुरोंके लिए खफण नही सरता तो और धन इनकाकालों ने कहां लगाना है, इत्यादि जैन मत की निन्दा के भय से मृतक साधु को परिठ्ठणा बन्ध किया मालूम होता है और ढूंढक भाइयों से पूछो तो वो जवाब नही देसकते क्योंकि वो बत्तीस

सूत्र कुछ मानते हैं उन बत्तीयों में व्यवहार सूत्र में तथा हहत्कल्प सूत्र में साड़णे के भयसे एलखे रखे गृहस्थी इस मृतक साधुको साड़न देवे इस भयसे शीघ्रही उस मृतक साधु को बाहिर जाकर उजाड़ादि में परिठ देवे व्यवहार सात में उद्देसे।

॥ यतः ॥ गामाणु गामं दूइज्जमाणे भिक्खू आहच्चवीसंभेज्जा तंवसरीरगं केइसाहम्मियापासेज्जा कप्पई से त्तं सरीरयं मासा गारिय मिक्तिकट्टु तंस-रीरयं एगंते अचित्ते बहुफासुएथंडिल्ले पडिलेहित्ता पमाज्जित्तापरिठवेत्तए।

इसका भावार्थ ऊपर लिख आये हैं परंतु हे मित्र हम तेरे को हित शिक्षा देते हैं इन

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छेद ग्रन्थों का मतलब कुछ और ही होताहै और मूल अक्षर कुछ औरही दीखते हैं जो मूल पाठ पर अर्थ मानते हैं और करते हैं उनको जैन संप्रदाय रूप तत्व की प्राप्ती कहां से हो ॥ इति ॥ ३६ ॥

प्रश्न ३७—जब रात की साधु साध्वी को दिशा फिरने की हाजत होय तो गृहस्थी के मकान पर दिशा बैठ लेने में क्या भगवानकी आज्ञाहै । उत्तर—हे मित्रहमारे पूर्वाचार्योंने हमारे मुनीयोंके लिये जो जीत आचार क० मर्यादा बांधी है उसके अनुसार हमारे मुनी प्रवृत्ति होतेहैं परंतु ढूंढकोंके माने ३२ सूत्रों में जो बृहत्कल्प सूत्र है उसमें ऐसा कथन है रात को वा संध्या को उपाश्रय से बाहिर साधु साध्वी चलेजावें जङ्गल क०। दिशाफिरने

के लिये तथा सिझाय करने के लिये और ढूंढक साधु रात को उपाश्रय में बाहिर निकलते नहीं और निकलने में दोष गिनते हैं और सूत्रकार बाहिर जाने को आज्ञा देता है।

॥ यतः ॥ नोकप्पइ निग्गथस्स एगाणियस्स राउवा वियालेवा बहिया वियार भूमिंवा निख्खामित्तएवापवि-सित्तएवा ॥ ४९ ॥

अस्यार्थः—न कल्पे साधु एकलानेरावे तथा संध्याये उपाशरा थी बाहिर थंडिल क० दिशा फिरवा तथा सिझाय करवाने जाव वो आव वो

कप्पइ से अप्प वियस्स अप्पत तियस्स वाराउ वावियालेवा बहिया

वियारभूमिंवा विहार भूमिंवा निरक मित्तए पविसित्तएवा ॥ ५० ॥

अस्यार्थः—कल्पे दो तीन साधु इकट्ठा होय कर रात्रे तथा संधराये उपाश्रय थी बाहिर दिशा फिरवाने तथा सिझाय करवाने जावो आव वो १ प०। इसथी आगे सूत्र ५१ तथा ५२ साध्वी का साधु की तरह है सो जान लेना इत्यादि बहुत वार्त्ता जो बत्तीस सूत्र के मूल पाठ में करणी कही है वो तो ढूंढक साधु करते नही और जो बत्तीस सूत्रमें नही कही वो २४० चीजें हैं जो करते और मानते हैं इसकी तफसील याने विरवा२४०। चीजों का देखना होय तो हमारे गुरू महाराज का करा सम्यक्तसल्लोद्दार ग्रन्थ पृष्ट ३८ तथा पृष्ट ३९ में देखलेना है मिल नाम मात्र बत्तीस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्र मानने कहते हैं और कपट रहित जो बत्तीस सूत्र मानलेवें तो हमारा और उनका लगारेक भी फरक न रहे। तर्क—क्या यह व्यवहार सूत्रका पाठ तुम नही मानते,उत्तर इस मूल पाठको हम समान सूत्र मानते हैं। पूर्वपक्ष—समान सूत्र तुम किसको कहते हो उत्तरपक्ष—जैसे सराफों की खाता नाम वही होती है उसमें रुपईयों की रकम वा रोजनामचे का सफा सिरफ इतनाही लिख होता है परंतु उस खाते की वही में रुपयों की तबसील याने विरवा कुछ मालूम नही होता जां यह दस रुपैये नकद लिये थे वा सौदा लिया था वा किसी को दिलाये थे यह खाते की वही से मालूम नही होता इसको हम समान सूत्र मानते हैं यह जो दस रुपैयों का विरवा है सो रोजनामचे की वही से

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मालूम होताहै सो रोजनामचे सदृश टीका निर्युक्ति है तिसको हम विशेष सूत्र मानते हैं एतले मूल सूत्र में टीका निर्युक्ति को अधिक मानते हैं क्योंकि मूलसूत्र तो गणधर रचित है और टीकादि अर्थ जो हैं वो भगवान श्री महाबीर स्वामी का कथन करा हुआ है सो अनुयोगद्वार सूत्र के पाठ से ऊपर लिख आये हैं दृष्टांत जैसेसूत्रमें ऐसालिखहोय साधु दूध न पीवे अब इसको टीकाकार महाराज कहेंगे तप वाला मुनी दूध न पीवे तथा दूध पीने से जिस मुनी को काम विकार उत्पन्न होता हो वो मुनी दूध न पीवे अन्यथा संयम निरबाह के लिये दूध साधु पीवे इस तरों से हजारां दृष्टांत हैं हे मित्र इस तरां मूल सूत्र से टीका अधिक मानी जाती है और मूलको टीका ही पुष्टी करती है ॥ इति ॥ ३२ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ३८—हेमचन्द्रसूरीने साढे तीन क्रोड़ ग्रन्थ नवीन बनाया ऐसा जैनतत्वादर्शकी पृष्ट ५७४ का लेख हमारी समझ में नहीं आता क्यौंकि थोड़ी सी उमरमें इतने ग्रन्थों का रचना कभी सिद्ध नही हो सकता। उत्तर— हमारी समझ में तो साढे तीन करोड़ श्लोक हेमचन्द्रसूरीजी ने रचे थे क्यौंकि श्री आत्मारामजी महाराज ने जो पालणपुर प्रश्नोत्तर बनाए और छपाएकर प्रसिद्ध किये हैं उस के पृष्ट११३पर साढेतीन करोड़ नवीन श्लोकका कर्ता श्रीहेमचन्द्र सूरी कथन किया है, तथा एक श्लोक का नाम एक ग्रन्थ ऐसा भी गुरु महाराज से श्रवण किया मेरे याद है जैसे हरीभद्रसूरीजी ने १४४० ग्रन्थ और चार श्लोक प्रमाण चार थूई बनाई। और १४४४ ग्रन्थ कर्ता हरीभद्रसूरी जैनमत में प्रसिद्ध है

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

और जो आप ने कहा कि थोड़ी सी उमर में इतने ग्रन्थों का रचना सिद्ध नहीं होता एह तुमारी समझमें फरकहै सोई दिखातेहैं हम तेरे को पूछते हैं कि चौदांपूर्व और ११ अङ्ग एह द्वादशाङ्ग सूत्र कितनेक बड़े थे ।

पूर्वपक्ष—वो तो बहुत वड़े थे और उन बारां अङ्ग सूत्रों के असंख्य सूत्र बन सकते हैं उत्तर—वो बारां अङ्ग सूत्र गणधरों ने कितनेक चिर में रचे थे । पूर्वपक्ष—वो तो थोड़े से दिनों में वा महीनों में रचे मालूम होते हैं । उत्तरपक्ष—हे मित्र जब इतने बड़े द्वादशाङ्ग सूत्र थोड़े से काल में गणधरोंने रचेथे तो साढे तीन करोड़ ग्रन्थ वा श्लोक हेमचन्द्र सूरीके रचने में तुझे क्या शङ्का उत्पन्न होती है । पूर्वपक्ष—गणधरों को तो गणधरलब्धी थी । उत्तरपक्ष—हेमचन्द्रसूरी को भी देवता

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

की सानिध्य थी और पदानुसारिणीलब्धीथी इस लिए हेमचन्द्रसूरी के रचने में शङ्का मत कर एक औरभी बात है १ वर्ष में एक कोटि जैनपुस्तक देवर्द्धीगणीजीने जोलिखेथेसो ताड पत्रों पर अक्षर उक्कर कर शाही से भरे हैं ऐसा एक पुस्तक भी कैई वर्षों में तैयार हो सकता है उनों ने करोड़ पुस्तक१ वर्ष में कैसे लिख लिये थे। हे मित्र देवता की सानिध्य याने सहायता से लिखे थे तैसे देवताकी सा-निध्य से हेमचन्द्रसूरी के ग्रन्थ रचने पर भी तू शङ्का मत कर और मोक्ष मूलर साहिब अपनी बनाई किताब में लिखते हैं, कि जैन मत में महावीर स्वामी को सर्वज्ञ मानते हैं, सो तो अलाहदा ही रहा परन्तु हेमचन्द्र जैनाचार्य भी सर्वज्ञ से कमती नहीं था अपि तु सर्वज्ञ के सदृश ही था तो हे मित्र जिस

हेमचन्द्र सूरी को अन्यमतवालेभी ऐसीसाखी देते हैं तो उन के साढे तीनकरोड़ श्लोकका ग्रन्थ रचने में तुझे संदेह क्यों उत्पन्न होता है इति ॥ ३८ ॥

प्रश्न ३९—कै एक ढूंढक लोग एतले रत्नचन्द्जी ढूंढक अपने बनाए ग्रन्थ में कहते हैं कि महानिसीथ सूत्र हम मानते हैं परन्तु इतनी शङ्का है महानिसीथ सूत्र मूल का दीखता नही क्योंकि आठ आचार्यों ने इसमहा निसीथ सूत्र को फिर दुरस्त किया है, इसी महानिसीथ में कहा है कुलिहिदो सो न दायव्वो। उत्तर—हे मित्र यारां अङ्ग सूत्र भी अब मूल के नहीं हैं सो हम दूसरे प्रश्नोत्तर में लिख आए हैं परन्तु यारां अङ्ग सूत्र तो नये साबूत हो चुके हैं और महानिसीथ सूत्र उनयारांअङ्गों से प्राचीन साबत होताहै सोई

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दिखाते हैं इसी महानिसीथ सूत्र के तीसरे अध्ययन में ऐसा लिखहै वज्जखासीम्रुतकेवली थे उनों ने महानिसीथ सूत्र का मूल पाठ उधार करके लिखा था ए सबुहुसंपयाउक० इद्धों की परम्पराय से ऐसे कहते हैं सो महा निसीथ सूत्र पत्ते से पत्ता जुड़ गया कुछकपत्ते उदेहीने खाकर चालणीवतकरदिये सो उस महानिसीथ सूत्र को देख कर जैनाचार्य युग प्रधान उस वखत आठ थे सो सात आचार्यों के कहने से श्रीहरिभद्रजी ने उस पुराणी महानिसीथ सूत्र से नयीउतारणी शुद्धीकरी तो जहां२अक्षरों का पता न लगातो उसको छोड़ दिया परन्तु उसकी इवज नया पाठरच कर नही पाया और जिन अक्षरों का पता न लगनेसे छोड़ गयेउसीकोकुलिहीक०कुलि-खतका दोष समझणा, परन्तु और कोई कुलि

खत का दोष न समझणा सो तीसरे अध्ययन का पाठ देखने से आपको सही मालूम होगा जैसे कोई कपड़ा कट जाता है तो उस का कटा हुआ हिस्सा निकाल कर फिर उसी कपड़े से वह कपड़ा दुरुस्त किया जाता है तो उसको कोई बुद्धिमान नया नहीं कहतापरन्तु पुराणा तो जरूर साबत होता है। तैसे ही महानिसीथसूत्र पुराणा साबत होता है और महानिसीथसूत्र के तीसरे अध्ययन का एह पाठ है ॥ यत:—

जथ्थयजथ्थपयेपएणाणुलग्गंसुत्तालावगनसंपज्जई तथ्थतथ्थसुयहरेहिं कुलिहयदोसोनदायवुति ॥ इसकाभावार्थ

महानिसीथ सूत्र के पत्रे जहां २ अक्षरों

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

से अक्षर पत्रे से पत्रा जुड़ जाने से सूत्र का अलावा स्पष्ट मालूम न हुआ तहां २ सुयहरे हिं क० । गीतार्थ आचार्योंने प्रगट ऐसा लेख लिखा है कुलिहो दोसो न दायाव्वो क०) हम को कुलिखत का दोष न देना क्योंकि जोअ-क्षर जुड़ जाने से क०) स्पष्ट मालूम न होने से छोड़ गये हैं सो कमती होनेसे कम लिखे गये हैं। इस में हमारा कोई दोष नहीं ऐसे हरिभद्रादि आचार्यों का एह कथन है जो मूल पाठ में स्पष्ट मालूम पड़ता है ॥ ३८

प्रश्न४०—श्रीजिनेन्द्रदेवके चार निक्षेपे कैसे किये जाते हैं। उत्तर—श्रीआवश्यक निर्युक्ति में श्रीभद्रबाहु स्वामी ऐसे कथन करते हैं।

॥ यतः ॥ नामजिणाजिणनामा ठवणजिणाजिणंदपडिमाउदव्व जिणा-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जिणजीवा भवजिणासमवसरणथ्था१॥

इस का भावार्थ एहहै जिनेन्द्रदेव का नाम लेना जैसे ऋषभदेवजी इस को जिनेन्द्रदेव का नाम निषेपा कहते हैं जो जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा है, उस को जिनेन्द्र देव की थापना निषेपा कहते हैं जो जिनेन्द्रदेव का जीव जिनेन्द्र होने वाला है उस को जिनेन्द्र देव का द्रव्यनिषेपा कहते हैं और जो समवसरण में चौत्तीस अतिशय पैंतीस बानी कर विराजमान है उस को जिनेन्द्रदेव का भाव निषेपा कहते हैं और इतना और भी आपने समझ लेना जो निषेपा है वह भाव के साथ ही प्रतिबन्ध रखता है एतले तीनों निषेपे भाव के सूचक होते हैं जैसे एक ठग का नाम महावीर है और एक जैनमत का चौवीसमा जि

नेन्द्र उस का नाम भी महावीर है इन दोनों का नाम महावीर होने से दोनों का नाम निषेपा एक ही न मानना किन्तु अलादा २ मानना जैसेठग महावीरकी अपेक्षा उसका नाम महावीर ऐसा कहनेसे भी पापहै और उस की मूर्ति पूजने से भी पाप है और उस के द्रव्य निषेपे की विनय करने से भी पाप है और वह ठग महावीर विद्यमान जोजीवता है सोई उस का भावनिषेपा भी पाप रूप है ऐसे ही श्रीजिनेन्द्रदेव का नाम तथा थापना प्रतिमा और द्रव्य जिन क०) जिनेन्द्र पदवी पाने वाला जीव तथा जिनेन्द्र देव का शरीर इस को द्रव्यजिन कहते हैं और समवसरण में विराजमान सोभावजिनएह चारों निषेपों में से किसी निषेपे द्वारा सिमरण करे, वह

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

जीव पुन्नानुबन्धी पुन्य बान्धता है, और वह ठग महावीर के चारों ही निषेपों द्वारा पाप बान्धता है हे मित्र तेरे समझानेके लिये फेर हम कहते हैं जिस महावीर का भावनिषेपा बन्धने पूजने सत्कारने योग्य है उसी महावीर का नाम थापना द्रव्य भी भावनिषेपे की तरह पूजने बन्दने सत्कारने योग्य है। जिस महावीर ठग का भाव निषेपा निन्दने योग्य था उसी महावीर ठग का नाम थापना द्रव्य भी निन्दने योग्य है इननिषेपों में एक और भी बात है श्रीमहावीर भगवान के चार ही निषेपे शुद्ध हैं और इन्द्रों को भी पूजनीक हैं संसार से तरने का कारण है परन्तु, आपने भावों की शुद्धि बिना वो चारे निषेपे तारने वाले भी हैं परन्तु, तारनहीं सकते सोई दि-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खाते हैं समवसरण में भगवान के पास कोई आदमी बैठा है और भगवान के अनन्त गुणों की तरफ तो उस का ख्याल नही और भगवान के कहे धर्म में दूषण समझाता है, अब विचार करके देखो, ऐसे आदमी को भगवान कैसे तार सकते हैं अपितु नहीतार सकते, तैसे ही भगवान का शरीर तथा भगवान का जीव जो है उस के पास वोही आदमी बैठा है परन्तु भगति वन्दमानादि के न करने से वह द्रव्य जिन तार सकता है। कदापि नही तार सकता तैसे ही श्रीजिनेन्द्र देव की प्रतिमा के पास वोही आदमी बैठा है और जिन प्रतिमा द्वारा महाराजजी की भक्ति और गुण ग्रामादि के न करने से वह जिन प्रतिमा तार सकती है, कदापि नही तार सकती। ऐसे ही वही आदमी हाथ में

माला लेकर नमो अरिहंताणं इतयादि जाप करता है परन्तु मन उसका और जंजालों में फिर रहा है तो वह भगवान का नाम तार सकता है कदापि नही तार सकता। इस उपरले लेख से यह मतलब निकला कि श्रीजिनेन्द्र देव के चारों ही निषेपे अलादा२ तारने समर्थ भी हैं, परन्तु जिस पुरुष का अपना भाव शुद्ध नही उस को चारे निषेपे नही तार सकते और जिस का अपना मन शुद्ध है उस को चारे निषेपे तारने वाले हैं, शुद्धमन वाले पुरुष को जैसा नाम तैसा ही थापना और तैसा ही द्रव्य और तैसा ही भाव ये चारों में कोई कम बेश नही है, कम वेश फल देने वाले तो अपने भाव हैं अपने शुद्ध भाव थी बिना चारे निषेपे अवत्थु हैं अ-

र्थात् अविरथे हैं । एतले कारणभीशुद्ध और अपने भाव भी शुद्ध हों तवही फलकी प्राप्ति होती है नतु अन्यथा और श्रीअनुयोग द्वार में कहा है कि हे शिष्य हरेकवस्तु के बहुत निषेपे हैं एतले सववस्तु के बहुत निषेपे हैं जे कर तू बहुत निषेपे न कर सकेंतो हरेक वस्तु ना चार निषेपा अवश्य करवा नाम थापना द्रव्य भाव । हे मित्र जिनेन्द्रदेव के निषेपे इस तरह से बहुत होते हैं जैसे किस महावीर को तुम जिनेन्द्र कहते हो । उत्तर—जो सिद्धार्थ राजा का पुत्र था त्रिशला की कुक्ष से जन्मा था जो जमाली का सुसराथा और प्रियदर्शना का पिताथा और जिसका गौत्तम नाम पहिला शिष्य हुआ था जिस ने चण्ड-कोशीये सर्प को श्रावक करा था जिस की चन्दनवाला नाम बड़ी शिष्यणी हुई है जो

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्त के समय में मध्यपापा नगरी में मोक्ष गया है वह समण भगवन्त महावीर स्वामी जैनमत का चौवीसमा जिनेन्द्र है इतयादि बहुत निषेधे होते हैं सो अपनी निर्मल बुद्धि के अनुसार समझने इति ॥ ४० ॥

प्रश्न ४१—जिस प्रकारे नाम थापना का स्वरूप तुमने कह्या है उसप्रकारे श्रीअनुयोग द्वार मां तो नही वहां तो ऐसे है जीव वा अजीव का जो नाम रखा जावे सो नाम है और जीव वा अजीव पर जैसे थापना करे वो थापना है। उत्तर—हे मित्र जैसे श्री अनुयोग द्वार में कथन करा है ऐसे ही मैंने लिखा है जो पुरुष मतकदाग्रहसे अन्धा हुआ है उसको सूत्र का लेख यथार्थ कैसे मालूम होवे इसलिये मतकदाग्रह छोड़कर श्री अनुयोग द्वारमें देखो वहां लिखते हैं नाम थापना

एक जैसे हैं सिरफ इतना विशेषहै नाम या-वज्जीव तक रहिता है और थापना थोड़े काल की भी हो सकती है। अब नाम लेना एतले नामके जपनेमें तो लाभ गिनते है और थापना को नही मानते यह कैसीक मूर्खता का चिन्ह है और नाम थापना यह दोनो निखेपे एक जैसे हैं और जिसभावकी अपेक्षा नामका उचारण करता है और जिस भाव की अपेक्षा मूर्ति है यह दोनों उसी भाव से सम्बन्ध रखते हैं परंतु और जो नाम दुनियां में हैं उनके साथ सम्बन्ध नही रखते और न और भाव में अति प्राप्ति जाणे देते हैं इसको नाम से निखेपा कहते हैं। दृष्टांत—जैसे कोई आदमी था उसका नाम रामचन्द अरोडा है और वो आदमी श्री रामचन्दजी का भगत

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है नित्यही राम राम ऐसा जाप करता है और नित्यही श्री रामचन्द्रजी की मूर्ति का पूजण करता है तब उस रामचन्द अरोड़ेको किसीने पूछा तुम रामराम का नित्य सिमरण करते हो तुमारा नाम भी तो रामचन्द है तो क्या अपणे ही नाम का सिमरण करते हो तब वो रामचन्द अरोड़ा तिस पूछनेवाले को उत्तर देता है हे भाई जिस रामचन्द को हम संसार से तारने वाला समझते हैं वो रामचन्द वो है जो अयुधया नगरी में दशरथ राजा का पुत्र और लछमण का भाई और सीता राणी का पति जिसने रावण राजा को मारा था उसका नाम सिमरण करतेहैं परंतु और जो दुनिया में हजारा रामचन्द है तथा मेरा नाम रामचन्दहैइसका सिमरन नही करते ऐसे ही मूर्ति के पूजने में समझ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लेना मूर्ति भी हम उसी रामचन्द्र की पूजते हैं नतु अनत्था ऐसा सुनकर उस आदमी ने फिर पूछा कि वो रामचन्द्र जी को गुजस्यां लाखों वर्ष गुजरगये हैं तो अब उसकी मूर्ति बनाने में क्या फैदा है इस कथनका रामचन्द्र अरोड़ा उत्तर देता है। हे मित्र वो रामचन्द्र को गुजस्यां लाखो वर्ष गुजर गये हैं तो अब उसके नामका सिमरण तुमको कैसे तारेगा और जो तुम रामचन्द्र का नाम लेने से अपनी कल्याण मानते हो तो उसी रामचन्द्र का आकार जो मूर्ति है उसके पूजने से भी तुम कल्याण मानो और उसी रामचन्द्र का आकार तेरे हृदय में भासणहै तब तो उस का नाम तेरे को तारने वाला है और जो उनका आकार और गुण तेरे हृदय में भासण नही है तो यह तेरा जाप राम राम

रूप निष्फल होनेसे कभी तार नही सकता इस लिये मूर्ति में दो चीजे हैं नाम थापना यह मूर्ति रामचन्द्रकी इसकी सेवासे कल्याण जान ऐसे ही जैन मत में श्री जिनेंद्रदेव की मूर्ति का पूजन मानते हैं और देखिये कोई लडका सोटी का घोडा बनाकर खेल रहा था वहां साधुके लंघणेको रस्ता नही है तब उस लड़के को जैन मुनी ऐसे कहे हे लड़के अपने घोड़ेको इक तरफ कर मुझे लंघ जाणे दे ऐसे कथन करने में मुनी को झूठ नही लगता परंतु जो उस लड़के को मुनी कहै हे लडके तूं इस सोटीको परां कर ऐसा कथन करणे से मुनी को झूठ लगता है ऐसा लेख ढूंढक भाईयों के माने बत्तीस सूत्रों में है तो फिर मूर्ती का मानणा कैसे सिद्ध न हुआ अपितु सिद्ध है ॥ इति ॥ ४१ ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ४२—ढूंढक लोकों ने कौनसे बत्तीस सूत्र माने हैं। उतर—ग्यारा अङ्ग सूत्र और बारां उपांग सूत्र चार बेद और चार मूल सूत्र यह इकत्तीस ऊये और बत्तीसवां आवश्यक सूत्र सो तो नही माना क्योंकि आवश्यक सूत्रके मानणेसे ढूंढकमतको बऊत पीड़ाहोती थी और उसआवश्यकसूत्रको दूरकर मनकल्पत नवीन आवश्यकजोड़करमानाहै,तर्क—तुमने ढूंढकोंका आवश्यक नवाजोड़ा कैसेसही किया उत्तर—श्रीअनुयोगद्वारके कथनसे तथा श्री भगवती सूत्र में आवश्यक सूत्रकी भुलामण है कि यहबात श्री आवश्यकसूत्रसे देखलेनी ऐसा लेख जहां आवस्सए यह अक्षर भगवती सूत्र में है अब बिचार कर देखो भगवती सूत्रको कही वार्त्ता जिस आवश्यक सूत्र में हो सो आवश्यक सूत्र सुद्ध मानणा चाहिये दूसरा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

प्रमाण यह है ढूंढक लोकों का जब से मत निकला उससे पीछेका लिखा हुआ आवश्यक सूत्र तो निकालेंगे परंतु उससे पहिला का लिखा हुआ नही निकालसकते इससे साबत है ढूंढक लोको ने अपने मत की रक्षा के लिये नवीन आवश्यक जोड़कर माना हैं और जिस आवश्यकको हम मानतेहैं वो आवश्यक ताड़ पत्रों पर संवत् विक्रमादित्य के छठी मे सैकड़े का लिखा दिखला सकते हैं और ढूंढकों का आवश्यक संवत् विक्रमादित्य के पन्दरवें सैकड़ेसे पहिलेका लिखा हुआ कभी नही निकल सकता इससे साबत है ढूंढकों के ऐसे ऐसे छल करने से आत्मार्थी पुरुष ढूंढक मतको छोड़कर जैन मतकों अङ्गीकार करते हैं। इति बत्तीस सूत्रोंके नाम यह हैं। आचारङ्ग १ सूयगडांग२ ठाणांग ३ समवायांग

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपाशकदिशा ७ अन्तगढदशा ८ अणुत्तरोववाई ९ प्रश्न व्याकरण १० विपाकसूत्र ११ उववाई १२ राय प्रसेणी १३ जीवाभिगम १४ पन्नवणा १५ जंबूद्वीप पन्नत्ती १६ सूर पन्नत्ती १७ चन्द पन्नत्ती १८ निरयालिका १९ कप्पवडंसिया २० पुफका २१ पुफचूलिका २२ वन्हीदशा २३ नसीत २४ वृहत्कल्प २५ व्यवहार २६ दशाश्रुत स्कंध २७ दशवोंकालिक २८ उत्तराध्ययण २९ नन्दीसूत्र ३० अनुयोगद्वार ३१ मणकल्पत आवश्यक ३२ यह बत्तीससूत्र ढूंढक मतवाले मानते हैं ॥ इति ॥ ४२ ॥

प्रश्न ४३—नन्दी सूत्र के मानने से लाखो जैन पुस्तक कैसे माने जाते हैं सो नन्दी सूत्र का लेख लिख दिखलाओ उत्तर—नन्दीसूत्र में जो जो सूत्रोंके नाम लिखे हैं वो तो हम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लिख दिखलाते हैं परंतु वहां सूत्रों का नाम कथन करके एवमाईयाइं ऐसा पाठ है इस लेख से कुछ जैन शास्त्र मानने सही होते हैं पूर्वपक्ष कुछ जैन सिद्धान्तो का नाम क्यों न लिखा उत्तर—एक कोटि जैन पुस्तक उस वक्त दिवर्द्धीगणीजीने लिखकर बाकी के छोड़ दिये थे और एक कोटि पुस्तकका नाम लिखने से नन्दी सूत्र बड़ा भारी हो जाता था इस भय से कुछक नाम लिख कर आगे एवमाइयाइं क०। इसथी लेकर और भी बहुत जैन पुस्तक है उनकी आज्ञा को मानना ऐसा हुकम जिताने के लिये एवमाइयाइं यह पाठ कथन किया है, सो नन्दी सूत्र का यह पाठ है॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

॥ यतः ॥ दसवेयालियं १ कप्पा-
कप्पियं २ चुलकप्पसुयं३ महाकप्प-
सुयं ४ उववाईयं ५ रायप्रसेणेयं ६
जीवाभिगमो ७ पन्नवणा ८ महाप-
न्नवणा ९ पमायप्पमायं १० नंदी११
अणुउगदाराइ १२ देवेंदथ्थउ १३
तंदुलवेयालियं १४ चंदगाविशयं १५
सूरपन्नत्ती १६ पोरसी मंडल १७
मंडलपाविसो १८ विज्जाचरणविणि
थ्थिउ १९ गणिविज्जा २० शाणवि
भत्ती २१ शाणविसोही २२ मरण
विभत्ती २३ मरणविसोही २४ आय

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विभत्ती २५ आयविसोहि २६ नरग विभत्ती २७ नरगविसोहि २८ बीय रागसूयं २९ संलेहणसूयं ३० विहा रकप्पो ३१ चरणविहि ३२ आउर पच्चरूखाण ३३ महापच्चरूखाण ३४ एवमाइयाईसेतंउकालियं सेकिंतंका लियं अणेगविहं पन्नत्ता उत्तरज्झयणाइं ३५ दसाउ ३६ कप्पो ३७ ववहारो ३८ निसीयं ३९ महानिसीयं ४० इसिभासियाइं ४१ जंबूदीवपन्नत्ती ४२ दीवसागरपन्नत्ती ४३ चंदपन्नत्ती ४४ महलियाविमाणविभत्ती ४५ खुडिया

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विमानविभत्ती ४६ अंगचूलिया ४७
बंगचूलिया ४८ विवाहचूलिया ४९
अरुणोववाए ५० वरुणोववाए ५१
गुरुलोववाए ५२ धरणोववाए ५३
वेसमणोववाए ५४ वेलधरोववाए ५५
देविंदोववाए ५६ उठाणसुए ५७
समुठाणसुए५८नागपरियावणिउ५९
निरयावलियाउ६० कप्पियाउ ६१ क
प्पवडंसीयाउ ६२ पुप्फियाउ ६३
पुप्फचूलियाउ ६४ वन्हीदसाउ ६५
वहियाए ६६ आसिविसंभावणाणं
६७ दिठ्ठिविसभावणणं ६८ चारण

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भावणाणं ६९ महासुमिणभावणाणं ७० तेयगिनिसग्गो ७१ एवमाइयाई चउरासीइं पइन्नगसहस्साणि भगवउ अरहउ उसहसामिस्स अहवाजस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाउ विणइया एकम्मियाए पारिणामियाए चउव्वि हाए बुद्धीएउववेया तस्स आइतिछय रस्स तहासंखिज्जाइंपइन्नगसहस्साइं माशिमगाणं जिणवराणं चोदसपइन्नगं सहस्साणि भगवउबद्धमाणसामिस्स अहवाजस्सजत्तिया सीसा उप्पत्ति याए वेणइयाए कम्मियाए पारिणा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मियाए चउव्विहाए बुद्दीए उववेया तसतात्तियाइं पइन्नगसहस्साई पत्तेय बुद्दावि तत्तियाचेवसेतं कालियं ।

इस थो आगे बारा अङ्ग सूत्र आयारो जावदिट्ठिवाउ ७१उपरले में१२ अङ्गमिलाने से ८३ ऊए और आवश्यकसूत्र एह ८४नाम नन्दी सूत्र में हैं और ८४००० पइन्ना ऋषभ देवजी के मुनियों का किया और संख्या ते हजार पइन्ना बावीस तीर्थंकरोंके मुनियों का किया और चौदा हजार पइन्ना महावीर स्वामी के मुनियों का किया और जितने प्रतेयक बुद्दि चौवीस तीर्थंकरों के ऊए हैं उतने ही पयन्ने प्रतेयक बुद्दियों के करे एह सब मूल सूत्र नन्दी के पाठ में कालिक

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्र कथन करे हैं सो पाठ एह उपर मजूद हैं जो आत्मार्थी और संसार के घोर दुखों से डरने वाला जीव होगा वो तो इस नन्दी सूत्र के लेख को वाच कर कुल जैन सिद्धान्त भगवन्त की वाणीरूप जानकर मानेगा और एह भी खयाल करेगा कि नन्दीसूत्र के मानने से करोडा पुस्तक भगवानकी वानीरूपमानने चाहिये इति ॥ ४३ ॥

प्रश्न ४४—व्याख्यान याने धर्मोपदेश करना कैसे मुनि को आज्ञा है। उत्तर—जो जैन सिद्धान्तों की स्याद्वाद शैली को समझता है और गीतार्थ है उसी को व्याख्यान करनेकी आज्ञा है, समान मुनि को आज्ञा नहीं।

॥ यतः ॥ गीतार्थजयणावंत भव भीरूजेहमहंत तसवयणे लोकेतरीये

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जिमपरवहणभर दरीये ॥ १ ॥

तथा श्रीमहानिसीथ तीसरा अध्ययने—

सावज्जणवज्जाणं वयणाणं जो न जाणइविसेसं वुत्ते पितसनखमं किमग देसणंकाउ ॥ १ ॥ अस्यभावार्थः—

सावद्य तथा निरवद्य वचनके भेद को जो नही जानता उस को वचन मात्र उचारण करने की जिनेन्द्रदेव की आज्ञा नहीं तो आम लोकों में धर्मोपदेश का करना उसका क्या ही कहनाहै अर्थात धर्मोपदेश का करना अयुक्त है अब बुद्धिमान को सावद्य और निरवद्य वचनकी परीक्षा को समझना चाहिए सावद्य वचन के मर्म को जानने से निरवद्य वचन का भेद स्वयमेवही बुद्धिमान जान जो-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यगे इस लिये सावद्य बचन किसको कहते हैं सोई दिखाते हैं जिस वचन के कहने से गुरों के कथन पर श्रोता को शक आवे सो सावद्य वचन है १ दूसरा जिस वचन के कहने में पूर्वाचार्यों का कथन खण्डन होए उसको भी सावद्य वचन कहते हैं २ तीसरा सूत्र की अपेक्षा का अज्ञात जोव्याख्यानादि करताहै सो भी सावद्य वचन है ३ चतुर्था अपेक्षा रहित व्यवहारिक भाषा वोलने से भी सावद्य भाषा होती है ४ पञ्चमी क्रोधादिक षायों के वश वा इन्द्रियों की विषय निमित्त वा किसी द्रव्यादि के लालचसे जो उपदेशादि का करना है सो भी सावद्य भाषा है ५ छठी श्रोताकी परषदा के मर्म का अज्ञात जो उपदेशादि करता है सो भी सावद्य भाषा है ६ सातमी जिस उपदेशादि के करने से श्रोताजन को

निसूगता हो अर्थात पाप करने में नडरपना हो उस को भी सावद्य भाषा कहते हैं ७ ॥ आठमी जो जैन सिद्धान्तों में भाषा के भेद कथन करे हैं तिस के अज्ञात की भाषा भी सावद्य भाषा होती है ८ नौमी जैसे मुनिको व्याख्यान करने की आज्ञा है उस प्रकारकी योगता के अभाव वाले का कथन भी सावद्य भाषा है ९। इत्यादि बहुत भेद सावद्यभाषा के हैं सो गीतार्थ गुरों की कृपा से और अपनी बुद्धि की योग्यतासेही समझेजातेहैं और जो अगीतार्थ है उस को प्रथम तो सूत्र की आशातना होती है और वो श्रोता को भी स्याद्वाद जैनशैली प्राप्ति नहीं कर सकता क्यों कि वो तो आपही अगीतार्थहोने से स्याद्वाद रूप तत्व का अज्ञात है परन्तु इतना विशेष है कोई कथानक रूप व्याख्यान गुरोपदिष्ट

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सामान्य मुनि करे तो मनाही मालूम नहीं होती इति ॥ ४४ ॥

प्रश्न ४५—उत्सर्गापवादजोजैन सिद्धांतो में कथन करा है उसको हमको कोई समझ नही आती कोई कहते हैं उत्सर्ग में आज्ञा है और कोई कहते हैं अपवादमार्ग आज्ञा का मूल है इस लिये अपवाद विना उत्सर्ग कभी हो नही सकता इसका निश्चेतुमे गुरू गम से जैसे धारण करा हो, ऐसे लिख दिखलाओ उत्तर—जैनशास्त्रानुसार गुरू मुख से जैसे हमने सुना है वैसेही हम लिख दिखलाते हैं एतले शास्त्रानुसार बिना जो गुरू उपदेश देते हैं वो गुरू नही किन्तु कुगुरू हैं गुरू तो उसी महाराज को जानणा जो ऐसे कहे कि अमुक सिद्धांत के अनुसार यह बात कहिता हौं अब आप सुनिये जैन शास्त्रों में

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उत्सर्गापवाद दोनों ही साधारण विधिवाद कथन करे हैं सो साधारण विधिवाद उसको कहते हैं जिस संयमकी रक्षा निमित्त उत्सर्ग मार्ग अङ्गीकार किया था उसी संयम की रक्षा निमित्त अपवादमार्ग को अङ्गीकार करना इसको साधारण विधिवाद कहते हैं जैसे तपस्या का करना भी संयम के लिये है और आहारादि का करना भी संयम के लिये है जैसे वस्त्रादि का त्यागना भी संयमी के लिये है और वस्त्रादि का रखना भी संयम के लिये है और जैसे महानिसीथ सूत्र में कहा है कि दमतइन्द्रीसुनी एक क्षेत्रे सौ वर्ष बैठा रहे तो दोष नही यह भी संयमके लिये है और देसालु देस विहार करना भी संयम के लिये है क्रोधका त्यागना भी संयम के लिये है और किसी चेले को सिक्षा देने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

के वक्त क्रोध करना पड़े यह भी संयम के लिये है और जो प्रथम महाव्रत में किसी जीवको न हणुंगा मन बचन काया करके यह अभिग्रह किया था यह भी संयमके लिये है और जो देसानु देस विहार करना पडि-लेहणा करनी नदी उतरनी वर्षा में दिशा मात्रा जाना यह प्रत्यक्ष छकाय की हिंसा होती है यह अपवाद है सो भी संयमके लिये है झूठका न बोलना भी संमय के लिये है और मृग पृछादि कारने झूठ बोलना भी संयम के लिये है और चोरी का त्याग भी संयमके लिये है और संयम पालता अनन्त जीव मारे जाते हैं वो जीव अदित है सो भी संयम के लिये है और परिग्रह तन्द मात्र लोममात्र भी नही रखूंगा ये पांचमे महाव्रत में प्रतज्ञा करी थी सो भी संयम के लिये है

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

और वस्त्र पात्र पोथी आदि जो प्रगट रखता है यह भी संयमके लिये है ऐसे बहुत वार्त्ता है सो निर्मल बुद्धी शास्त्रानुसार होनेसे समझी जाती है और इसी तरह के कथन को जैन मत में स्याद्वाद उत्सर्गापवाद रूप विधिवाद कथन करा है जैसे बनिया हजारां रुपैये सौदे पर लगाता है वो भी लाभके लिये और सौदे का भाड़ा मासूल मजूरी देता है वो भी लाभकेलिये और घरमें रोज खरच करताहै वो भी लाभ के लिये है। तर्क—घरमें खरच करना लाभके लिये कौन मानेगा उत्तर— जिसपुरुषकी बुद्धि अतिशय निर्मल होयगी वो ही मानेगा सोई दिखाते हैं जिस आदमी ने लोभी होकर घरका खर्च बन्ध कर दिया तो भूषके न सहने से घरकी स्त्री तो कहीं जाकर कुकर्म करने लग गई और आप भी कुछ न

खाने से सरीर निर्बल होगया तब उस लोभी पुरुष का सरीर रोगी होगया गाहक आया पर सौदा देने की ताकत न रही तब तो बहुत लाचार होकर प्राण देनेको त्यार था उसका एक मित्र था वो उसको बहुत लाचार देखकर पूछा तुमारी यह व्यवस्था किस कारण से हुई तब उस लोभी पुरुष ने कहा कि सौदे पर रुपैये लगना तो लाभके लिये है परंतु दो रुपैया रोज घरमें खर्च लगताहै इसमें तो लाभ नही है यह विचार कर घर का खरच और अपना खाना कुछ बन्ध किया तब से यह अवस्था हुई है यह बात सुनकर उस मित्रने मथे पर हाथ मारकर कहा अरे मूर्ख घर का खर्च ही लाभ का कारण तूं समझ जब तूं घरमें खर्च करेंगा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तो कबीला सुखी होयगा और तूं भी जब अपने शरीरके लिये खर्च करेगा तो निरोग होयगा तबही लाभ को पैदा करेगा अन्यथा तूं मर जावेगा तो लाभ कौण पैदा करेगा इस लिये युक्ति से समझ कर अपने घर में खरच करना वोही मूल कारण लाभका है ऐसी हित सिक्षा मित्र की सुनकर वो क्रपण पुरुष ने मनकल्पत जो लाभ का उपाय बिचारा था वो तो दुखदाई जानकर छोड़ दिया और उस मित्रका कहणा मानकर दस बीस रुपैये खरच करके दिवाई करने से निरोग हुआ और स्त्री को भी अपने घर में बुला लिया स्त्रीसे तो पुत्र उत्पन्न हुआ और निरोगता से धन को पैदा किया तब तो वो बहुत सुखी हुआ तैसे हे मित्र खर्च जो है सोई तूं अपवादमार्ग जान तिस अपवाद से

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

विनाकभीउतसर्ग मार्गरूप लाभनहो कमाय सकता। तर्क—चार महाव्रतों पर आपने स्याद्वाद उतसर्गापवाद लगाया परंतु बीच में चौथा महाव्रत क्यों छोड़ गये उत्तर—श्री महानिसीथ सूत्र में ऐसे कथन करा है तीन वस्तु में स्याद्वाद उतसर्गापवाद नही है चौथे महाव्रत में १ कच्चे पानीके पीने में २ अग्नि के बालने में ३ शेष सर्व वस्तु में स्याद्वाद है और कुछ जैन शास्त्रों का कथन स्याद्वाद में है और इन तीनों चीजों पर किसी सूरत स्याद्वाद न लगाना इस लिये चौथा महाव्रत हम छोड़ गये हैं परंतु हे मित्र हम तेरे को पूछते हैं तेरे ढूंढक तो स्याद्वाद को जहेर कहते हैं और उपरले लेखमें जो उतसर्गापवाद हम कथन कर आए हैं वो सब ढूंढक मानते हैं तो उनका कहना बांझनी के पुत्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

व्रत न हुआ तो और क्या हुआ और एक बात तेरे को हम और भी पूछते हैं कि जैसे संयम निर्वाह के लिये सीत टालने को वस्त्र राखते हैं और क्षुद्या टालने के लिये रोटी खाते हैं वैसे काम की पीड़ा टालने के लिये एक काणी कुरूपा स्त्री क्यों नही राखते ढूंढकों को शास्त्र न्याय से स्त्री राखने में कोई दूषण नही क्योंकि पांचवे महाव्रत को भन्नकर संयम निर्वाहकेलिये वस्त्रादि राखते हैं तो चौथे महाव्रत को भन्नकर संयम निर्वाह वास्ते विकार टालने के लिये एक स्त्री क्यों नही राखते। पूर्वपक्ष—तुमारे संवेगी मुनि विकार टालने के लिये स्त्री क्यों नही राखते उत्तर पक्ष—हमारे पूर्वाचार्य तो इस बात में खूब जन्दरे अर्थात् ताले लगा गये हैं बलकि महानिसीथ सूत्र में ऐसा कथन है कि

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भेष में जो साधु चौथा महाव्रत भन्ने एतले कुशील सेवे वो साधु अनन्त संसारी और अनन्त तीर्थ करो की आशातना के करने वाला है और अनन्त काल तक उसको जैन धर्म की प्राप्ती न होगी इस कथन से हमारे संवेगी मुनि स्त्री नहीं राखते। पूर्वपक्षी—हमारे भी बत्तीस सूत्रों में स्त्री रखनी मने करी है।

उत्तरपक्ष— कहां मने करी है। पूर्वपक्ष आचारंग दशवैकालिक आदि सूत्रोंमें। उत्तरपक्ष—वे तो उत्सर्गमार्ग में बन्ध है जैसे पांचमें महाव्रत में तंद मात्र नहीं रखूंगा। और फिर अपवाद में लोई कपड़ा पाता प्रमुख रखता है तैसे स्त्री का रखना तुम को निर्दोष ठहरता है। पूर्वपक्षी—स्त्री भोगने वाले साधु को दण्ड कथनकराहै। उत्तर—

बस स्त्री के भोगी साधु की दण्ड ही हुआ परन्तु मूल से संयम तो न गया खैर तबभी हम आगे चलते हैं। उत्तरपक्षी—कहांदण्ड कथन करा है। पूर्वपक्ष—हहत्कल्प सूत्र में तीन गुरू प्राश्चित्त याने मोटे प्राश्चित्त हैं। हस्तकर्म१ मैथुन २ रात्री भोजन३ उत्तरपक्ष तुमारे मानेबत्तीस सूत्रों में गाढ़ेकारणेरात्री भोजन करनेकी आज्ञा तुम को दिखला देवें तो गाढ़े कारणे स्त्री का भोग निर्दोषआप को मानना पड़ेगा। पूर्वपक्ष—रात्रि को भोजन साधु करे एह गप्पां तुमारे ग्रन्थों में होंगी। परन्तु हमारे माने बत्तीस सूत्रों में नहीं। उत्तरपक्ष—हे मित्र हमारेमाने ग्रन्थोंमें तो नहीं हैं आप का माना हहत्कल्प में पञ्चमाध्ययने सूत्र ४७ में ऐसा कथन है। यतः—

नोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथणि
वा पारियासियाए भोयणजाय जाव
तयप्पमाणमेतंवा विंदुपमाणमेतंवाभू
इप्पमाणमेतंवा आहारमाहारित्तएवा
णणथ्थगाडेहिंरोगायंकेहिं ॥ इति ॥

इस का भावार्थ एह है, रात को बासी भोजन को जातबिन्द, प्रमाण भी बासी साधु न रखे परन्तु, गाढ़ा ,रोगादि कारणे रखे और खावे इसको आज्ञा है ऐसीही साधुको अतिशय काम पीड़ाकरे तो स्त्रीके भोग की आज्ञा होनी चाहिये क्योंकि तिनेगुरूप्रायश्चित्त एक जैसे है। पूर्वपक्ष—दशाश्रुत स्कन्ध में भी इक्कीस सबले कथन करे हैं उस में मैथुनदूसरा सबला दोष कथन करा है। उत्तर—वहांतो

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आधाकर्मी आहार के करने वाले साधु को चौथा सबला दोष कथन करा है। इस मूजब तो जैसा आधा कर्मी आहार का करणा, जैसे मैथुन का सेवना दोनों सबले हुए। अब आधा कर्मी आहार में कर्म्मबन्ध का एकान्त नहीं है एतले आधा कर्मी आहार करतां साधु कर्म बान्धता है और कोई साधु कर्म नहीं बाँधता एसे साबत होनेपर एहमतलब निकलेगा कि आधाकर्मीआहारवत जोसाधु स्त्री को भोगे वो कर्मोंसे लिपाए तथा कोई नाभि लिपाए एह सिद्ध होता है। पूर्वपक्ष—आधाकर्मी आहार करने से तो जिनाज्ञासे बाहिर साधुहोता है तो आधाकर्मी आहार करने में कर्मों से न लिपाए कहां कथन करा है। उत्तर—श्रीसूयगडांग सूत्र में। यतः—

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आहागडाइं भुंजंतिअणेमणसकम्मु-णाउवलितेवियाणिज्जा अणुवलितेतिवापुणो ॥ १ ॥ एतेहिंदोहिंठाणेहिंववहारोणज्जिइ एतेहिंदोहिंठाणेहिं अणायारंतुजाणए ॥ २ ॥

पूर्वपक्ष—बृहत्कल्प व्यवहारादि सूत्रों में स्त्री के भोगी का दण्ड लिखा है। उत्तर—हे मित्र आधाकर्मी आहार करने का भी तो दण्ड लिखा है और आधाकर्मी आहार करने से जो मुनि कर्मों से नहीं लिपाया उस को दण्ड नहीं है दण्ड तो कर्मोंसे लिपाने वाले साधु को है तैसे स्त्रीके भोग में जो साधुकर्मों से नहीं लिपाया उस को दण्ड काहे का है।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूर्वपक्ष—जिस साधु को अतिशय काम पीड़ा करे वो गल फा सी लेकर मर जावे परन्तु स्त्रीसे भोग न करे। उत्तरपक्ष—हे मित्र एह तेराकथन अयुक्त है क्योंकि सील रखनेकेलिए सब मुनियों को मरने की आज्ञा थी तो सूत्रों में ठाम२कुशील सेवनेसे एतले जो साधु कुशील सेवे उसको चौमासी प्रायछित आता है एह कथन किन मुनियोंके लियेहै एतले जिस साधु का स्त्री से भोग करने का दिल किया वो भोग करके चौमासी प्रायछित ले कर शुद्ध हो सकता है तो मरने की साधु को क्या जरूरत है एक और भी बात है एकमहीने में तीन दफा नदी उत्तरे तो साधु को सबला दोष गिनतीमें नौमा है और जो साधु महीने में एक वा दो दफा नदी उत्तरे उस को तो दोष न ठहरा तैसेही सुन्दर स्त्री से भोग तो

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

तिन नदी उतरने तुल्य हुआ और कानी कुरूपा स्त्री से विकार टालने रूप भोग एह तो एकदफा नदीउतरनेतुल्य निर्दोष ठहरता है अरे मित्र चाहे कितनी युक्ति से चर्चाकरो परन्तु बत्तीस सूत्र के न्यायसे तो स्त्रीके भोग से साधु का मूल से संयम गया, यह वार्ता कभी सिद्ध न होगी और इन छेद ग्रन्थों का अर्थ भी कुछ और तरहसे है वो विगैर टीकादि कभी यथार्थ भाषण नही हो सकता, इस लिये, हे जिनाज्ञा की रुचि वाले। मित्र जैन पञ्चांगी और सुविहित उपदिष्ट ग्रन्थ प्रकरणादि कुलके माननेसे ही जैन सम्प्रदाय की प्राप्ति होगी अन्यथा कभी नही ॥ इति प्रश्न ॥ ४५ ॥

प्रश्न ४६—धर्म हिंसामें कि दया में। उत्तर हे मित्र यह तेरा किया प्रश्न कुयुक्तिरूप होने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

से हम ऐसा ही उत्तर देतेहैं धर्म श्रीजिनेन्द्र देवकी आज्ञा में है। पूर्वपक्ष—तुमने दया में धर्म ऐसे क्यौं नही कथन करा । उत्तर— जिनेन्द्रदेवकी आज्ञा संयुक्त जो व्यवहारदया है उस को भी हम धर्म का एक अङ्ग मानते हैं संपूर्ण धर्म हम उस को नही कहे सकते, आपने जो दया में धर्म मानाहै तो हम आप को पूछते हैं जमाली प्रमुख निन्हवों ने क्या हिंसाकरी थी? अपितु कोई हिंसा नही करी एक जिन वचन उथापने से और संपूर्ण दया पालनेसे वो अनन्तसंसार रुलनेरूप अधर्मीक्यौं कथनकरायेहुसलिये धर्मआज्ञामें माननाठीक है जिनेंद्रदेवकीआज्ञासे विनादया कुछ चीज नही और तुमारे जेठमल्लने जो तेरां पन्थीयों पर चर्चा बनाईहै तहां तेरां पन्थी तो एकांत दयामें धर्म थापन करके ढूंढक मतको दूषन

देते थे तब जेठमल्लजी ने चर्चा की आदमेही ऐसा लिखा कि प्रथम तो श्री जिनेंद्रदेव की आज्ञा मांही मुक्ति नो हेतुछइ एकंतव्रत छै मुक्ति नो कारणछे ते मांही बीजो कोई पच्च नही यह लेख तुमारे जेठमल्लजी का है और सूत्रों से भी आप ख्याल करिये कि दया में धर्म कभी सिद्ध नही हो सकता। पूर्वपच्ची— सूत्रों में ठाम २ दया को ही धर्म कथन करा है। उत्तर सूत्र में जिस तौर कथन करा है उसका मतलब आप नही समझते आपका द्वेष तो सिरफ जैन मन्दिरसे और द्रव्यपूजा से है परंतु हे भाई जैसे साधु के एक ठिकाने रहने में बहुत दया मालूम होती है क्योंकि जोनवकल्पी विहार नही करेगा तो नदी में जलचर पंचेन्द्री जीव और निगोदादी पृथ्वी कायप्रमुख और टुरने फिरने में जो बहुत

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जीवों की हिंसा होनी थी सो न होने से कितनीक दया पलती है इस लिये तुम को एकही ठिकाने पड़ा रहना ठीक है और तुमएक ठिकाने रहने वाले साधु को आज्ञासे बाहिर और पसत्था मानते हो तैसे ही द्रव्यपूजा जो श्रावक न करे तो दया तो जरूर होई एक ठिकाने मुनि के रहने वत परन्तु जैसे मुनि एक ठिकानेनही रहिता तैसे श्रावकभी द्रव्य पूजा करणेसे नही हटता जैसे मुनिने हिंसा का अधिकरण नवकल्पी विहार करके अपने आप को धन्यमाना तैसे श्रावकभी द्रव्य पूजा करके अपने आप को धन्य मानता है, और मुनी ने नवकल्पी विहार करनेमेहिंसा की तरफ ख्यालनही किया परन्तु जिनेन्द्रदेव की एक ठिकाने रहनेकी आज्ञा नही एतले आज्ञा की तरफ खयाल किया तैसे श्रावक

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भी जिनेन्द्रदेव की आज्ञा की तरफ खयाल करता है और हिंसा की तरफ खयाल नही करता साधुवत और श्रीउत्तराध्ययन की निर्युक्ति में विष्णुकुमार मुनि ने नमुञ्चीमहाबल नाम जो चक्रवर्ती की पदवी पर था उस को जान से मार दिया तो वहां विष्णुकुमारजी मुनि की दया कहां गई थी ॥

पूर्वपक्ष—ऐसे ऐसे अनर्थ मुनियों ने किये निर्युक्तिमें कहेहैं तबही तो हम निर्युक्ति नही मानते उत्तर—हे मित्र अपने घरमें जोतेरी मरजी चाहेसो तू मान परंतु सभामें विद्वानों के समक्ष तूं निर्युक्ति नही मानेगातो हमनन्दी सूत्र समवायांग सूत्र भगवती सूत्र अनुयोग द्वार सूत्रादिके मूल पाठ में निर्युक्ति माननी दिखावेंगे तब तूं कहेगा कि हम बत्तीस सूत्र का मूल पाठ मानते हैं तब आपको फेर हम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहेंगे तुमारा माना बत्तीस सूत्रों का मूल पाठ यह हुकम देता है टीका निर्युक्ति द्वारा जो अर्थ है सोई मानना एतले मूलपाठ पुकार कर कहता है कि मेरा अर्थ सूत्र के अक्षरों पर नहीं करना किंतु जो परंपराय से टीका निर्युक्ति अर्थ रूप आगम चले आये हैं उसी द्वारा अर्थ करना और मानना जब आप पर्षदा में यह बत्तीस सूत्रों के मूल पाठ का हुकम नहीं मानोगे तो जौनसे विद्वान साखी होवेंगे वो तो तुमारे मुखपर थप्पड़ जरूर मारेंगे और तुमको कहेंगे तुमारा माना मूल पाठ तिसका हुकम तुमें नहीं माननाथा तो विद्वानों में चर्चा काहेको मनजूर करी थी इस लिये हे मित्र निर्युक्ति के न मानने से तुझको कठोर बचन सहने पड़ेंगे और जगत में अन्याई नामसे कहना पड़ेगा खैर हे मित्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तूं निर्युक्ति का वचन भला हो न मान हम तुझे तेरे माने सूत्रका दृष्टांत दिखाते हैं श्री भगवती सूत्र में सुमङ्गल मुनि विमलवाहन राजा को तेजूलेश्यासे समेत रथ समेत घोड़े फूक देवगा। और वो सुमङ्गल मुनि जिन आज्ञाका आराधिक होनेसे अनुत्तरविमान में देवता एकाभवावतारी होवेगा, यह तो तुम ठीक २ मानते हो तो उससुमङ्गल मुनि की दया कहां गई और समवायांग तथा दशाश्रुत स्कंध सूत्र में राजा की घात मनमें चिंते तो महा मोहनी कर्म बांधे ऐसा कथन है और सुमङ्गल मुनीं तो एक भवकी अन्तरे मोक्ष जावेगा और निरा पराधी जीव को तो श्रावक भी नही मारता तो उनघोड़ोंने क्या मुनी का अपराध किया था जो मुनी ने विचारे घोड़ों को मार दिया यह मुनी की

सुन्दर दया तुमारे मतको कैसी पुष्टी देती है और देखिये श्रीउत्तराध्ययनमें हरकेशीमुनी जी ने ब्राह्मणो प्रति ऐसा कथन करा।

॥ यतः ॥ पुव्विंच इणिच अणाग यंचमणप्पदोसोनमेअत्थिकोई जरका हुवेयावडियं करंति तंमाहुए एनि हयाकुमारा। अस्य भावार्थः—

१—ब्राह्मणों प्रति हरकेशी मुनी ऐसे कहते हैं हे ब्राह्मणो तुमारे पुत्रों को हनकर एतले मारकर यक्षने मेरी विया वच करी है अब सोचो वो हरकेशी मुनि महर्षि उत्तम थे जिनकी महिमा सुधर्मास्वामीजी मूलपाठ में विस्तार से कथन करते हैं उनका यह कथन है तुमारे पुत्रोंको मारकर यक्षने मेरी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

वेयावृत्त करी है अर्थात् मेरी टहल भगती करी है और देखिये श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र के चौथे उद्देसे यह पाठ है।

अवणवाईपडिहणित्ताभवई ।

इसमें श्री गणधरदेव हुकम देते हैं जो अवर्णवादी एतले जैन मार्ग का निन्दक हो उसके हनने से जैन मत की विनय होती है अब अपने हिरदे में विचार कर देखो जिन गणधरो ने ठाम ठाम दया करनी कही है उन गणधरों का यह हुकम है जो ऊपर लिख आये है तो हे मित्र यही मर्म समझना मुशकल है असल बात तो यह है जहेर तो जरूर मारने वाली थी परंतु हकीम ने उस जहिर में बूटी मिलाय कर रसायण करली

तब वो बज्जत फैदा करनेवाली ज्जई ऐसे ही हिंसा तो जरूर जहर थी, परंतु सम्यक दिष्टी रूप बूटी से बोही हिंसा रसायण ज्जई एतले धर्म ज्जत करता जो हिंसा होती है वो दुख दाई नही संसारमें रुलानेवाली नही संसार में रुलानेवाली हिंसा मिथ्या दृष्टीको है और सूत्रों में भी जहां जहां हिंसा का महा दुख रूप फल वनर्ण करा है वहां भी मिथ्या दृष्टी की हिंसा का वर्णन जानणा ॥ इति ॥ ४६ ॥

प्रश्न ४७—जिन प्रतिमा का और जिन प्रतिमा की पूजा का अधिकार खुलासा पाठ कौन से सूत्र में है। उत्तर—हे मित्र जिन प्रतिमाका और जैनमन्दिरका और तिसकी पूजाके पाठ कुल्ल सूत्रोंमें श्रावकों के अधिकार में ठाम २ थे वो सूत्र अबकी समयमें रहे नही तदपि श्री समवायांग सूत्र तथा नन्दी सूत्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

में ग्यारा अङ्ग सूत्रों को ढूंडी जाने तत्कारा कथन करा है तहां ऐसा पाठ है ।

॥ यतः ॥ सेकिंतंउवासगदसाउं उवासगदसासुणं उवासयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं बणसंडाइं राया अम्मा पियरो धम्मायरिया ।

अस्यार्थः—उपाशकदशासूत्र किसको कहतेहो ऐसे पूछा गुरू उत्तर देते हैं उपादशक दशा सूत्र विषे श्रावकों के नगर उद्यान चैत्य जैन मन्दिर बणखंड राजा माता पिता धर्माचार्यादि कथन होने से उपाशकदशा नाम है यह पाठ कुल्ल श्रावकों का है सो काल दोष से संखेपमात्र पाठ रहगया है और खुलासा अधिकार अब की उपाशकदशा सूत्र में नही

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है तो क्या नन्दी सूत्र तथा समवायांग सूत्र का पाठ खरा है या नही है मित्र खराही मानना पड़ेगा और श्रीमहानिसीथ सूत्र में तथा श्रीभद्रबाहुस्वामीकृत आवश्यक निर्युक्ति में खुलासा पाठ है और अब के बत्तीस सूत्रों में भी बहुत पाठ है सो सम्यक्त्व शल्योद्धारग्रन्थ से देख लेना आत्मार्थी को तो सूत्र का थोड़ा सा कथन भी ढूंढक मत श्रद्धाणरूप रोगको दूर करने वाला है परंतु जो ढूंढकमत रूप भङ्ग के नशे में आये हुये हैं उनको सुद्धिबुद्धि सब मारीगईहै उनको तो सीमन्धरस्वामी भी आनकर कहे कि ढूंढकमत जिन आज्ञा से विरुद्ध हैं इसकोत्यागो और जैनमत अङ्गीकार करो तबभी नही मानेंगे परंतु सीमन्धरस्वामी को भी ऐसा प्रत्युत्तर जरूर देवेंगे कि तूं झूठा है और तूं सीमन्धरस्वामी भी नही

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.	Jin Gun Aaradhak Trust

ढूं तो कोई पुजेरा हमको ठगने के लिये आया है हे मित्र ऐसे मत जङ्गी पुरुषों को कोई समझाने समर्थ नही क्योंकि उन जीवों की भवस्थिति प्रपक्व नही हुई अबी संसार में रहना उनका बहुत है और जो निकट भवी भव्य है वो तो सुलेखे में निन्हव मतको जैन मत करके मान रहे थे जिस वक्त सूत्र का अक्षर देखा उसी वक्त झूठको त्यागकर सांचको अङ्गीकार करतेहैं और संयम तथा श्रावकव्रत भी उनही को मुक्ति का कारण होता है जो सूत्रों की आशा तना करने से डरते हैं जो सूत्रों की आशातना से नही डरते उनका तप संयम रूप कष्ट सभ अनन्त संसार रुलनेका कारण है ऐसेही श्रीसूयडांग भगवती आदि सूत्रोंमें ठाम२कथन कराहै॥४७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रश्न ४८—महानिशीथ सूत्र में पूजा का कौनसा पाठ है। उत्तर—हे मित्र पाठ तो बहुत है परन्तु थोड़ा सा आप को दिखाने के लिये यहां लिखताहूं ॥ यतः—

करकमलमउलसोहं जलिपुडेणं सिरिउसभादएवरावरधम्मतित्थयरेप डिमाबिंबविणावसिय नयणामाणसेग गूतगायशवसाएणं समयंनदिठ इति

इस का भावार्थ यह है श्रीऋषभादि तीर्थ करों की प्रतिमा का सम्यग प्रकार दर्शन न करने से ही यह जीव संसार में रुलताऔर दुख को प्राप्त होता रहाहै तथा और पाठ।

तित्थयरे पुज्जयरे तिन्नियपावंपणा संत्तित,सियतिलोगमहियाण धम्मती

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्थंकराणजगगुरुणो भावच्चणदव्वच्चणं
भेदणदुहचंणभणियंभावच्चणचारित्ताणु
ठाणकठुग्गघोरतवचरणंदव्वच्चण विर-
याविरयसीलपूयासक्कारदाणादितो गो
यमाणंएसत्थेथपरमत्थे तंजहाभावच्चणमु
ग्ग विहारयाएदव्वच्चणंतुजिणपूयापढ
माजईणदोनणिवि गिहीण पढमच्चिय
पसथ्था ॥

अस्यार्थ:—तीर्थंकरदेव तीन लोक में पू-
जनीक हैं तिन तीर्थंकरों को पूजा के करने
वाले भगत जन अपने पापों का नाश करते
हैं सो जो तीर्थंकर देव तीन लोक में महत
बड़े हैं धर्म तीर्थंकर और जगत के गुरू हैं

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिन को भाव पूजा और द्रव्य पूजा इस भेद से दुहचणं दो प्रकार की अर्चा अर्थात पूजा भणियं श्रीजिनेन्द्रदेवों ने कथन करी है भाव पूजा सो है जो चारित्रानुष्टान कठिन उग्र और अल्प सत्वी प्राणी को करना दुष्कर इस लिये घोर तप और चारित्र इसको भावपूजा श्रीगणधर देव कहते हैं अर्थात मुनि के धर्म को भाव पूजा में दाखल करते हैं (दव्वचण) द्रव्य पूजा विरता विरती अर्थात श्रावक के धर्म को कहते हैं सो शील का पालणा और फूलादि से श्रीजिनेन्द्रदेव की पूजाका करना और अधिक गुणी श्रावक तथा मुनि महाराज को आदर सत्कार का करना और। दाणादि। दान शील तप भावना एह चतुर प्रकार का धर्म इतरादि श्रावक का व्रत कुल

द्रव्य पूजा के नामसे कथन करा है तो गोयमा
हे गोतम एहो दो प्रकार का धर्म सुख के
इच्छक पुरुषों को अर्थ और परमार्थ है। त
जहा। फिर सूत्रकार कहते हैं भाव पूजा
सोइ है जो उग्र विहार तपसंयमादि मुनियों
का धर्म है और द्रव्य पूजा सोई है जो श्री-
जिनेन्द्रदेव की फूल चन्दनादि से द्रव्य पूजा
करणी तिस को ही द्रव्य पूजा सूत्रकारकहते
हैं और प्रथम जो तप संयमादि मुनिका व्रत
है सो भाव पूजा पढमा प्रथम भेद भाव पूजा
नाम से जईण यती को अर्थात मुनिको होती
है और फूल चन्दनादि जो द्रव्यपूजा है और
प्रभु के गुण ग्रामादादि का उचारण करना
सो श्रावक के भावों की अपेक्षा श्रावक की
भावपूजा है इणदोय प्रकार की श्रावक की
पूजा से पढमच्चिय पसत्था हे गोतम मुनियों

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

का संयमरूप भाव पूजा प्रशस्त याने श्रेष्ट है अर्थात गृहस्थ में रहकर श्रावक का धर्म पालने से मुनि बन कर मुनि का धर्म पालना बहुत अच्छा है इति। इस थी आगे सर्व हत्ति मुनि होकर जो द्रव्य पूजा फूल धूपादि करते हैं उन को बहुत दूषण कथन करके आगे ऐसा कथन है वो मुनि जिस द्रव्य पूजा करने से निन्दनीक और दूषण वाला हुआ था वो द्रव्य पूजा श्रावक को निश्चय करनी युक्त है और जो सपूर्ण संयमी मुनि हैं, उन को पुष्पादि द्रव्य पूजा नहीं कल्पती सो एह पाठ है।

अकसिणपवत्तगाणंविरया।विरयाण एस खलुजुत्तोजेकसिणसंयमविउ पुप्फादियंनकप्पएतेसिंतु गोयमा॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

अस्यार्थः—अकसिणा पवत्तगाणं असम्पूर्ण संयम में प्रवर्तने वाले विरया विरयाण एस खलु जुत्तो विरता विरती क०) श्रावक को निश्चय द्रव्यपूजा फूल चन्दनादि करनी युक्त है जे कसिणसंजमविउ' जो सम्पूर्ण संयममें वर्तने वाले मुनि हैं तिन को पुफादियं न कप्प एते सिंतु गोयमा, हे गोतम फूलादि द्रव्य पूजा करनी नहीं कल्पती अर्थात गोतमजी को भगवान कहते हैं हे गोतम मुनिको फूल चन्दनादि द्रव्य पूजा करनेकी मेरी आज्ञा नहीं और श्रावक को फूल चन्दन धूप दीपादि द्रव्य पूजा करणे की मेरी आज्ञा है।

पूर्वपक्षी—द्रव्य पूजा करने की श्रावक को आज्ञा है तो तिस द्रव्य पूजा के करने से मुनि को महत आशातना क्यों कथन करी।

उत्तरपक्ष—हे मित्र जैसे विनय वेयावच प-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लिहणा धर्मोपदेशादि कुछ धर्मकृत्य मुनि को करने लायक भी है तो भी पादोपगमन संथारे वाला मुनि नहीं करता और करे तो महत आशातना के करने वाला होता है, तैसे ही द्रव्यपूजा श्रावक को संसार सागर से तारने वाली है परन्तु मुनि करेतो महत आशातना के करने वालाहै जैसे वो पादोपगमन संथारे वाला मुनि कुछ मुनियों का धर्म विनय वेयावच धर्मोपदेशादि अच्छा जानता है परन्तु आप नहीं करता अगर करे तो निन्दनीक होता है तैसे द्रव्य पूजा श्रावक का धर्म है और श्रावक को अच्छा जानता है परन्तु मुनि आप नहीं करता अगर करे तो निन्दनीक होताहै इस रीति से महानिसीथ सूत्र का कथन है और इसी महानिसीथ सूत्र में जिन मन्दिरादि श्रावक

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्षत के करने से फल बारवां देवलोक कथन करा है एह महानिसीथ के तीसरे अध्ययन के पाठ लिखे हैं इत्यादि और भी पाठ बहुत हैं सोहम कितनेक लिखे । हे मित्र यह मनुष्य जन्म पाणा बहुतसु शकल था जो अपने को अब पुन्ययोग से प्राप्त हुआ है अब इसमनुष्य जन्म को श्रीजिनेन्द्रदेव की आज्ञा के आरा-धने से सफल कर, नहीं तो फिर वो ही चतुर्गत रूप संसार का दुख आगे खड़ा है।

यतः—

चत्तारिपरमंगाणि दुलहाणी हजं तुणो माणुसत्तसूई सद्धासंजमं मिय वीरियं ।

१ इसका भावार्थ यह है—चार अङ्ग जो मोक्ष प्राप्तीके हैं वो इस जीवको पाने दुष्कर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हैं प्रथम आर्य कुल में मनुष होना दुष्कर है दूसरा जिनेंद्रभाषित सिद्धांत का सुनना दुष्कर है तीसरा जो जिनेंद्रकथित सिद्धांत में संपूर्ण कथन है उसपर अनन्तर प्रीति से श्रद्धाण का आवना दुष्कर है चौथा जिनेंद्र-कथित सिद्धांतानुसार तप संयम का करणा दुष्कर है इन चारो में सुद्ध श्रद्धा होनी दुष्कर है क्योंकि सूत्रोंके गंभीर आशय अपनी तुक्ष बुद्धी होने से समझ में तो आता नही और झट कहदेते हैं यह सूत्र तो हमनही मानते इसमें यह विरोध है परंतु अपनी बुद्धी की न्यूनता नही विचारते और यह भी नही विचारते कि जिन प्रतिमा उथापने के लिये जो जो सूत्र हमने नही माने और उनके मानने वाले जैनियों के बिना और कौन थे और देवर्द्धीगणिक्षमा श्रमणजी महाराज

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जो ने जिनको वास्ते लिखे थे और मित्र जो सूत्र का एकाक्षर न माने वो तो अनन्त संसारी है और जो हजारां लाखां सूत्र पयन्ने ग्रन्थ न माने उन के संसार का क्या कहना है आत्मार्थी होयगा सोई इस बातको विचारेगा किंबहुना ॥ इति ॥ ४८ ॥

प्रश्न ४९—आपने ४८ अठतालीस में प्रश्न में कहा कि तप संयम का करना दुष्कर है तो उसमें जैनमन्दिर का बनाना और जिन प्रतिमा की पूजा का करना यह भी तो अन्यदर्शनीयां को मुष्कल है और मोक्ष की करनी थी तो सूत्रकारने इसको दुष्कर कृत्य क्यों नहीं कह्या । उत्तर—हे मित्र यहां मुख्य पणे मुनी धर्म कथन करा है सोई दिखाते हैं जैसे चित्त मुनी ने ब्रह्मदत्त को

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बऊत उपदेश दिया कि हे राजन शीघ्र तूं इस संसार के असार सुखों को त्याग और सर्व सुख का मूल कारण सुनी पणां ले ऐसा सुनी का उपदेश सुनकर ब्रह्मदत्तने संयम लेने से इनकार किया तब चित्तमुनी तिस ब्रह्मदत्तको ऐसे कहते हैं।

॥ जइतं सिभोगे चइउ असत्तो अज्जाइं कम्माई करेहिरायं धम्मेठिउ सव्वपयाणुकंपी तोहोहिसि देवोईउ विउव्वी ।

१—इसका भावार्थ यह है कि हे राजा भोगों को त्यागकर संयम लेणे में जो तूं असमर्थ है तो आर्य कर्म श्रावक धर्म रूपकर इस करणी से तूं देवता वैक्रिय शरीर का

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

धणी होवेगा इस कथन से यह मतलब निकला कि प्रथम तो ग्रहस्थी को मुनी धर्म का उपदेश देना जब वो मुनी धर्म के अङ्गीकार करने में इनकार करे तो फिर उसको श्रावक धर्म में स्थिर करे जब वो कहै मैं श्रावक व्रत भी अङ्गीकार नही कर सकता तदानंतर उस पुरुष को सम्यग् दृष्टीके धर्म में स्थापत करे ऐसे श्रीदशाश्रुत स्कंध में चतुर्थोद्देशके से कितं निखेवणा विणएचउविहे पन्नत्ता इसके वर्णन में कथन करा है और श्रावक का ये मुख्य धर्म देव पूजादि है सो महा निसीत का पाठ ऊपर लिख आये हैं और तिस द्रव्य पूजा को ही आर्य कर्म कहते हैं ॥ इति ॥ ४९ ॥

प्रश्न ५०—तुम भी तो ढूंढक ही थे तो तुमारे को संवेग धर्म कैसे प्रापत हुआ उत्तर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है मित्र वार्त्ता तो बक्तत सारी है परंतु संक्षेप
से तुझे लिख दिखलाते हैं हम तीन वर्ष के
थे जब हमारा पिता नानकचन्द काल कर
गया था और हमारे नानके अम्बतसर में थे
वो ढूंढक धर्मी थे कन्हीयालालजी जौहरी
प्रसिद्ध थे अमरसिंहजी के शरीके से भाई थे
अमरसिंहजी साधु ढूंढकमत में नामी क्तए
हैं और उनकी संगति से मैंने भी जाना के
यही जैनी साधु है जिस वक्त हम गुजरांवाल
में आने लगे तब अमरसिंह जी ने मुझको
कहा तुम गुजरांवाले में चले हो वहां एक
बूटेराय साधु है वो हिंसा में धर्म परूपदा
है उसकी संगति नही करनी और ऐसा एक
जादु उस बूटेराय के पास है जो उसके पास
जाता है वो कभी सबूत हटकर नही आया
ऐसी अमरसिंहजी की हित सिक्षाकी धारणा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

करके गुजरांवाले में जब हम आये कितनांक काल व्यतिक्रम हुआ तब दादा हमारा अमीरचन्दजी वो भोले और भव्यजीव थे और बूटेरायजीके परम भगत थे और मेरा ताया गुलाबराय जी ने मेरे को कहा कि बूटेराय जी पपनाखेमें हैं तूं एक दफा उनको मिल और जैसे तूं बत्तीस सूत्र मानता है वैसे बूटेराय जी बत्तीस सूत्र मानते हैं और तेरे को योरसे कोई पुजेरा नही बनाता परंतु एक दफा पपनाखे में तूं जरूर बूटेराय जी को मिल तब मैने कहा हिंसामें धर्म परूपने वालेको मिलना नही चाहता परन्तु तुमारा बचन रखने के लिये चलो मैं मिल आता हूं जब मैं पपनाखेमें गया तब नाल मेरे गुलाबराय जी था मैं चुपकरके बूटेरायजी के पास

बैठ गया जब करीब एक घंटे का हुआ तब बूटेरायजी ने मुझको बुलाया और ऐसा कहा भाई क्या तेरा नाम है और क्या तेरा सिद्वांत है तब उनके बचन मेरेको ऐसे मीठे लगे जैसे ग्रीष्मकी तपत में तृषातुर पुरुषको अमृत का पानी, तब मैंने यह जबाब दिया मेरा नाम जयद्याल है और बाईसटोले के साधु को मैं गुरू मानता हूं और बत्तीस सूत्र का मूल पाठ मेरा सिद्वांत है तब उन्होंने मुझको कहा हे भाई जो बत्तीस सूत्र के मूल पाठ में लिखा हुआ तुझको बतलावेंगे तब तो मेरे साथ वार्त्ता करेगा कि नही तब मैंने अपने हृदे में विचारा कि यह तो आपही न्यायसे बोलते हैं तो इनके साथ डींगा चलना अच्छा नही मैंने कहा महाराज सवेरे सूर्य चढे आपने मूल पाठमें जहां मन्दिर लिखा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

है और जहां हिंसा में धर्म कह्या है वो दिखलाय देना मेरे को प्रमाण है और मैं सूत्रों से सूत्र मिला लूंगाक्योंकि अपने मतके जङ्गी क्या २ काम नही करते अपितु सूत्रोंमें भी कम बेश पाठ करदेतेहैं उन्होंने मुझे यह फरमाया कि भाई तूं कुछ शास्त्री अक्षर भी जानताहै मैंने कह्या मैंशास्त्री अक्षरजानता हूं जब रात तो व्यतीत हुई और सूर्य चढे व्याख्यान पीछे रोटी खायकर अर्थात रसोई जीम कर मैं बूटेरायजी के पास गया तब जो वार्त्ता हुईहै, सो मेरी तरफ से पूर्वपक्ष, और महाराज जी की तरफ से उत्तर पक्ष में समझ लेनी ।

पूर्वपक्ष—मैं बत्तीस सूत्र मानता हों जो बतालीसमें प्रश्न में लिख आये हैं । उत्तरपक्ष बत्तीस सूत्रका मूल पाठ मानते हो वा टबा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

टीका भी मानते हो। पूर्वपक्ष—मूल सूत्र में विरुद्धटीका और टबा नहीं मानता। उत्तरपक्ष—बत्तीस सूत्रका मूल पाठ किस की वाणी मानते हो एतले बत्तीस सूत्र किस के कथन करे मानते हो। पूर्वपक्ष—भगवान की वाणी से गणधरों के रचे मानते हैं एतले भगवान की वाणी मानते हैं। उत्तरपक्ष—क्या सन्देह सहित भगवान की वाणी मानते हो कि निःसन्देह बत्तीस सूत्र को भगवान की वाणी मानते हो। पूर्वपक्ष—सन्देह तो बहुत रहते हैं सो हमारी समझ का कसूर है परन्तु बत्तीस सूत्र को निःसन्देह भगवान की वाणी मानते हैं। उत्तरपक्ष—तिस बत्तीस सूत्ररूप भगवान की वाणी का एक अक्षर एक पंक्ति वा एक पत्रा वा दस वीस पत्रे वा सम्पूर्ण सूत्र इनको जो न माने उस को तुम क्या समझते

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हो। पूर्वपक्ष—बत्तीस सूत्रों का एक अक्षर यावत सम्पूर्ण सूत्र जो न माने उस को हम निन्हव और अनन्त संसारी मानते हैं। उत्तरपक्ष—एह देखो नन्दीसूत्र का मूल पाठ क्या कहता है और कितने पुस्तक याने सूत्र मानने लिखे हैं। पूर्वपक्ष—एह तो नन्दीसूत्र में बहुत सूत्रोंका नामलिखा है जिन को तवसील नन्दी सूत्र के पाठ सहित ऊपर तरतालीसमें प्रश्न में लिख आये हैं इतने सूत्रोंके नाम नन्दी सूत्र के मूल पाठ में लिखे हुए अपनी आंखों से वाचे तब उस लेख को झूठ तो न कहि सक्यां परन्तु एक तर्क करी। पूर्वपक्ष—इस नन्दी सूत्रमें तो जैसे अन्यमत के शास्त्रों की गिनती लिखी है ऐसे हीजैनसूत्रों की गिनती कही है परन्तु इन को जैन का साधु पढ़े और इन के कथन की आज्ञाको

प्रमाण करे ऐसा लेख तो इस नन्दी सूत्र में नहीं है उत्तरपक्ष—देखो व्यवहार सूत्रमें इन सर्व सूत्रों के पढ़ने की विधि मुनि को लिखी है तीन बर्षका दीक्षित साधु आचारङ्ग सूत्र पढ़े इतयादि सर्वसूत्र पढ़नेमें दीक्षा का प्रमाण कथन करके अखीर ऐसालेख है वोस वर्ष का दीक्षतसाधु सर्वसूत्रपढ़े एह पाठ व्यवहारसूत्र का जब मैंने बाचा और देखा तो फिर एक तर्क करी। पूर्वपक्ष—एह तो मुनि को पढ़ने लिखे हैं जैसे नन्दी सूत्र में कथन है कि अन्य मत के शास्त्र सम्यक्त्व दृष्टि पढ़े तो सम सूत्र और समसूत्रको मिथ्या दृष्टिपढ़ें तो मिथ्यासूत्र ऐसेही व्यवहारसूत्रकी लेखमें पढ़ने तो कहे परंतु जैसे अन्यमत के शास्त्र पढ़ताहै तैसे जैन के पढताहै जैसे अन्यमतके शास्त्रोंको भगवानकी बाणी नहीं जानता तैसे बत्तीस सूत्र थी उप-

रान्त सूत्रोंको भगवानकीबाणी नही जानता और न उन सूत्रों पर शरद्धा प्रतीत करता है। उत्तरपक्ष—यह देखो नन्दीसूत्रका मूल पाठ क्या कहता है जैसे द्वादशांगसूत्रके चार बोल ऐसे ही सर्वसूत्र पयन्ने ग्रन्थों के चार बोल हैं सो यह हैं ॥

उद्देशो १ समुद्देशो २ अणुणा ३ अणुउगोय पवत्तई ४ ॥

अस्यार्थः—सर्व सूत्र पयन्ने आदि जो नन्दी सूत्र में कथन करे हैं उन में एक जैसे चार बोल कथन करने इन ही सर्व सूत्रों का उद्दे शो क०) उपदेश करना समुद्देस क० । सम्यक प्रकारे उपदेश करना अणुणा क०) इन ही सर्व सूत्रोंको आज्ञा की प्रमाणकरना

अनुउंगो क०) इन हो सर्व सूत्रों के अर्थ का वाख्यान करनाएतलेआपपढने और शिष्यों को पढाना यह सर्व समसूत्र हैं यह लेख जब मैंने देखा और वाचा तब मैं तो ला जबाव हुआ और मन में जाना इन का कथन सच्चा है परन्तु फिर भी एक तर्क करी। पूर्वपच्च नन्दी सूत्र का लेख तो निसन्देह सच्चा माना परन्तु बत्तीससूत्र थी उपरान्त जो सूत्र हैं, उन में कुछ अदल बदल जतीयोंकि करने से बो बत्तीस सूत्र के साथ बाकी के सूत्र मिलते नहीं इस वास्ते मैं बत्तीस सूत्र ही मानूंगा, क्योंकि जिस वकत नन्दी सूत्र लिखा गयाथा उस वकत तो सर्वसूत्र शुद्ध मानने लायक थे परन्तु पीछे से यतियों ने खराब कर दिए तो फिर हम खराब होए हुए सूत्रों को कैसे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध मानें। उत्तरपक्ष—तुम को कोई ज्ञान है जिस से बत्तीस सूत्र तो न बिगड़े और बाकी के बिगड़ गये जाणें। पूर्वपक्ष—हमको कोई ज्ञान तो नहीं परन्तु चिन्हों से जानते हैं। उत्तरपक्ष—कौनसे चिन्ह हैं। पूर्वपक्ष बत्तीस सूत्रों में इस काल में छय संघयण कथन करी है औरों में इस काल में छय वट्टा संघयण कही है ठाणांगे सनतकुमार को अन्तक्रिया मोक्ष कही है औरों में तीसरे देवलोक गया कहा इत्यादि बहुत फरक हैं उत्तरपक्ष—बत्तीस सूत्रों में पांचों ज्ञान इस काल में कहे हैं तो आप इस काल में केवल ज्ञान भी मानते हो और जो ठाणांग में सनतकुमार को अन्त क्रिया कही है सो जो मोक्ष गया था तो सूत्रोंमें तो सिद्धि पत्ताणुतरं अथवा जाव सिद्धे बुद्धे मुत्ते सव्वदुक्खपहीणे

ऐसा साफ पाठ होता है ऐसे साफ पाठ को छोड़ कर सूत्रकारने अन्त क्रिया ऐसा शब्द मोक्ष अर्थ में भ्रान्तकारी क्यौं ग्रहण करा। अरे भाई अन्त क्रिया का अर्थ एकान्त मोक्ष नहीं इस लिये तीसरे देवलोक गया निर्युक्ति का कथन ठीक है। पूर्वपक्ष—बत्तीस सूत्रोंमें कोई फरक और विरोध नही है औरों में बड़े २ फरक हैं इस लिये बत्तीस सूत्रमानने ठीक हैं। उत्तरपक्ष—जो तुमारे मानेबत्तीस सूत्रों में बड़े२ फरक तुमको दिखलायदेवेंगे तो क्याआप जैसेविरोधहोनेसेऔरसूत्रत्यागे हैं वैसे बत्तीसभी त्यागदेवेंगे कि जैसे बत्तीस सूत्रमें फरक याने विरोध होनेसेभी भगवान की वाणी मानी है ऐसे ही और सूत्र भी भगवानकीवाणीमानोंगे। पूर्वपक्ष—जबबत्तीस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्रोंमे भी विरोध औरफरकहोवेंगे तो बत्तीस सूत्रों की तरह भगवान की बाणी सर्व सूत्र मानेंगे या विरोध होने से जैसे और सूत्र मानने छोड़ दिये हैं ऐसे बतीस सूत्र का मानना छोड़ देवेंगे।

उत्तरपक्ष—यह देखो ज्ञाता सूत्र कहता है मल्लीनाथ जी ने ३०० पुरुष। ३०० स्त्री। ८ ज्ञातीकुमार। एतले ६०८से दीक्षा लीनी और यह देखो ठाणांग सूत्र क्या कहता है मल्लीनाथजीने ६ छय पुरुष साथ दीक्षा लीनी एतले दीक्षा लेनें के वक्त मल्लीनाथ जी आप सात वे थे और यह देखो ज्ञाता सूत्र कहता है कि मल्लीनाथ जी दीक्षा ले चुके थे पीछेसे छय मित्र पुरुषों दीक्षा लीनी और यह देखो ठाणांग सूत्र कहता है कि मल्लीनाथ जी के

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साथ ही छय मिचां दीचा लीनी इत्यादि सौ १००। फर्क बत्तीस सूत्रोंमें दिखलाया मैं देख कर घवराय गया और मैंने यह सोचा अमरसिंह जी बत्तीस सूत्रों से उपरांत नहीं मानते इसमें मतलब तो जिन प्रतिमा के न मानने का है और जो औरों सूत्रों में विरोध दिखाते हैं यह एक बहान्ना है जैसे दुराचा-रणी स्त्री का यार मर गया तो उसको रोने के लिये एक गहना उतार कर गेर दिया और ऊंचे २ स्वर से रोने लग गई जब कुटुम्ब ने पूछा तूं ऐसे क्यों रोती है तब वो कुटला स्त्री रोती तो यारको है परंतु गहने का नाम लेकर एक बहान्ना जाहिर करती है तैसे इनढूंढकोंका मतलब तो जिन प्रतिमा उथापणे का है और बत्तीस सूत्रों से और

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

सूत्र मिलते नही यह कुटिला स्त्रीवत बहाना बनाया हुआ है अब मैं श्री बूटेरायजी को सत्यवादी जानकर परम भगत हुआ परंतु अन्तशकर्ण से हुआ अभी वाहिर से नही फिर मैंने तर्क करी कि महाराज जो आपने मुझे पाठ दिखाये हैं यह सूत्र किसके हाथ के लिखे हुये हैं ऐसा पूछा तब उनोंने सूत्र मेरे हाथ में दिये तब मैंने साल सम्बत् तारीक और ढूंढक साधुओं के हाथ के लिखे वांच कर सही किया कि इसमें कोई छल नही है फिर मैंने कहा। पूर्वपक्ष—मूल सूत्र तो सभी माने परंतु अर्थ नही मानता। उत्तरपक्ष—जब तूं अर्थ नही मानता तो मूल सूत्र कैसे माना गया। पूर्वपक्ष—कौन से मूल सूत्र के पाठसे अर्थ मानना पड़ता है। उत्तरपक्ष—

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्रीअनुयोगद्वार सूत्र से तथा ठाणांग सूत्र से पूर्वपक्ष—मैं जवान की वार्त्ता नही मानता आप सूत्र के अक्षर दिखाओ। उत्तरपक्ष—

यह देखो श्रीअनुयोगद्वार का पाठ।

आगमेतिविहेपन्नत्ता सुत्तागमेय१ अत्थागमेय २ तदुभयागमेय ।

अस्यार्थः—सूत्र रूप आगम १ सूत्र विना अर्थ रूप आगम २ तदुभया आगम जिसमें सूत्र अर्थ दोनों होए ३ और यह देखो ठाणांग सूत्र का पाठ।

सुयंपडुचतउपडिणिया पन्नत्ता सुत्तपडिणिए अत्थपडिणिए तदुभ-यपडिणिए।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　　Jin Gun Aaradhak Trust

अस्यार्थः—सूत्र आश्रीतीन अवनीत कथन करे हैं सूत्रको न माने तो सूत्र की अविनय होती है और अर्थ को न माने तो अर्थ का अविनीत होता है और सूत्र अर्थ रूप जो आगम है उसके न मानने से तदुभयप्रत्यनीक एतले अविनीत होता है यह जब पाठ मैंने देखा तब फिरऐसेकह्या। पूर्वपक्ष—टबारूप अर्थ मानता हूं परंतु निर्युक्ति टीका रूप अर्थ नही मानता। उत्तरपक्ष—टबा कहां से बना। पूर्वपक्ष—टबा श्री पासचन्दजी ने बनाया है। उत्तरपक्ष—पासचन्दजी को कोई ज्ञान था जिससे उसका करा अर्थरूप टबा आपमनजूर करतेहो या उस पासचन्द जी ने किसी पुराचीण अर्थ के अनुसारे टबा बनाया मानते हो। पूर्वपक्ष—मेरेको इस बात की खबर नही आप के पास कोई पासचन्द

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्षत वाला बोध है तो मुझे दिखलाओ।

उत्तरपक्ष—यह देखो पासचन्दक्षत वाला बोध जिसकी आदमें ऐसा लेख था यह बालाबोध रूप भाषा अभयदेव सूरी क्षत टीका के अनुसार करता हूं और तिसके अन्त में भी ऐसा लेख था श्री अभयदेव सूरी क्षत टीका से कोई विरुद्ध अर्थ बालाबोध में मेरे से लिखा गया होतो तसमिच्छामिदुक्कडं यह लेख जब मैंने पासचन्द क्षत बालाबोध में अपनी आंखो से देखा तब तो ढूंढक मत की श्रद्धाण मेरे अन्दर से उठ गई तब श्री बूटेरायजीके चर्णोपर हाथ जोड़कर बन्दना करी और कहा एक दफा अम्रतसरमें जाय कर अमरसिंहजीको मिलूंगा तब जो वार्त्ता अमरसिंहजीके साथ होगी सो आपके आगे निवेदन करूंगा तदानंतर में अमरसिंहजी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

के पास अम्रतसर में गया और मिला तब अमरसिंह जी ने मेरे को पूछा, कि तुमारा मेल कभी बूटेराय जी से हुआ था नही मैंने कहा महाराज आपने मेरेको दूध के दूवज छास पिलायकर कहा कि यह दूध है मेरे को आप ऊपर बड़ा यकीन जाने इतबार था और आगे मैंने कभी सच्चा दूध पीया छोड़ा देखा भी नही था इस लिये आपकी छास को ही दूध जाना था परंतु अब मैं सच्चा दूध बूटेरायजीसे पीया है और परीक्षा भी ऐसी करी है शास्त्रानुसार निर-पक्ष का होना यही तद्रूप अग्नि भई तिस अग्नि पर अपनी बुद्धीरूप वर्तन में प्रथम तो आपकी अज्ञानरूप दूध की परीक्षा करी सो तो छास होनेसे कुछ सड़गई परंतु खोए की रती भी प्राप्त न हुई और जो बूटेराय

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जो की अज्ञान थी उसकी तिसी तरां परीक्षा
करी तब वो सच्चा दूध होने से खोया बन
गया इसलिये मैं आपके साथ दोवार्ता करने
के लिये आया हूं और मैं आपका सेवक हूं.
आप शास्त्रानुसार मुझे समझाय लेवें जिस
वक्त यह बात मैं कर चुका था तब अमरसिंह
जी बोले तेरे को हमने मने किया था तूं
बूटेरायजी के पास न जांई उसकी संगति न
करीं तूं बूटेरायके पास क्यों गया और जो
तूं गया है तो हमारी आज्ञा से बाहिर है
हम तेरे साथ बात भी नही करेंगे तब मैंने
फिर कहा महाराज मैं भूलगया फेर नही
जाउंगा परंतु एक दफा तो शास्त्रानुसार
चार बातें मेरे साथ करो तब दूसरी दफा
भी मुझको अमरसिंह जी ने ऐसाही जबाब
दिया तब मैंने पक्का निश्चय किया कि इस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अमरसिंह जी के पल्ले हाथ कुछ नही इसने संसार का सुख एतले गृहस्थका सुख इयाही छोड़ा क्योंकि फकीरी प्राप्त हो जाती तो गृहस्थ का छोड़ना भी सफल होता है मित्र मेरे को तो इस तरां जैन धर्म की प्राप्ती हुई है सोई तुझे लिख दिखलाई है ॥ ५० ॥

प्रश्न ५१—ज्ञानदीपिका ग्रन्थ जो पार्बती जी साधवी ढूंढक मतकी ने बनाया है, वो आप ने देखा है या नहीं। उत्तर—आदि से अन्त तक सम्पूर्ण देखा है। पूर्वपक्ष—वो ज्ञानदीपिका ग्रन्थ कैसाक है। उत्तरपक्ष—हे मित्र खू की आड में जो पाणी आता है वैसा ही खू में होता है तैसे पारबतीजी का बनाया ग्रन्थ देख कर हम को यह मालूम हुआ कि पारवतीजी तो बिलकुलजैनसिद्धांत

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शैली की अज्ञात है । पूर्वपक्ष—वे। तो बड़ी भारी पण्डित सुनी जाती है तुमने तत्व की अज्ञात कैसे कथन करी । उत्तरपक्ष—उस का ग्रन्थरूप छतके देखने से । पूर्वपक्ष—क्या उसकी छत अशुद्ध है । उत्तरपक्ष—हां उस की छत अशुद्ध है । पूर्वपक्ष—जो पारबतीजी का करा ग्रन्थ अशुद्ध है तो तुमारी जबानकी कही वात कैसे मानी जावे तुम कोई ज्ञान-दीपिका ग्रन्थका प्रत्युत्तर बना कर दिखावो जिस से ज्ञानदीपिका की अशुद्धता मालूमहो उतरपक्ष—भाई प्रत्युत्तर तो हम जरूर ब-नाय कर दिखाते परन्तु जैसे सहस्त्र किरण सूर्य के आगे टटाणा क्या उद्योत कर सकता है तैसे श्रीमतआत्मरामजी के आगे हम क्या चीज हैं एतले ज्ञानदीपिका ग्रन्थ उन महा-राज को भेजा गया हैं उनके शिष्य हो इस

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

ज्ञानदीपिका ग्रन्थ का प्रत्युत्तर बनाय कर प्रसिद्ध करेंगे। पूर्वपक्ष—भला प्रत्युत्तर तो वोही बनायेंगे सो देखा जावेगा परन्तु कुछक तो ज्ञानदीपिका ग्रन्थ का रहस्यतुमभी प्रगट करो। उत्तरपक्ष—ज्ञानदीपिका ग्रन्थ में पारबतीजी ने ऐसा लिखा है कोई हम को पूछेगा यह अधिकार कहां से लिखा है उस को उत्तर आचारंगादि सूत्रोंसे फिर वो पूछे उहां तो इस रीतिसे कथननही है, फिर उस को यह उत्तर है सूत्रमें सामान्य है और मैंने कुछिक विस्तार करके लिखा है जब फिरपूछे कि उहांतोइसतौरविस्तारनही तो फिरउसको ऐसा उत्तरहै भला मैंने अपनी मतिकल्पनासे ही लिखाहै तो भी अपनी जानमें कोई सावद्य वचन तो नहीं लिखा यह लेख कैसाक मूर्पता का सूचिक है क्योंकि गणधरदेव तो हर एक ग्रन्थ के आदि में ऐसा कहते हैं।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुयंमेआउसंतेण भगवया एवम-क्खाइंक० ।

मेरे कहता प्रतेसुण हे आउषावन्त जम्बू भगवन्त ने मेरे प्रते ऐसा कथन करा था इस में गणधरदेव जम्बूस्वामी प्रति कहते हैं। हे जम्बू मैं अपनी मति कल्पना से नही कहता किन्तु जैसे भगवन्त से श्रवण किया है तैसा ही तुझ प्रति कथन करता हौं तो आप देखिये पारबतीजी तो गणधरों से भी लंघगई जिस ने अपने लेख को आप ही मतिकल्पना से कथन करा ठहराय कर, फिर उस को निर्दोष ठहराया परन्तु ऐसा सीधा नही लिखा जैनतत्वादर्शादि ग्रन्थान्तरों से यह श्रावक ब्रतादि किञ्चित लिखेहैं। तर्क—क्या बत्तीस सूत्रों में ऐसा कथन नही है। उत्तर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　Jin Gun Aaradhak Trust

बत्तीस सूत्रों में ऐसा कथन नही है, कुछिक ग्रन्थान्तरों से कुछिक मन कल्पित पारवती जी ने लिखा है। पूर्वपक्ष—ऐसे लिखने में क्या दोषहै। उत्तरपक्ष—ज्ञानावर्णी कर्मबन्ध जाता है सूत्र दशाश्रुत स्कन्धादि में कहा है, जिस गुरू की कृपा से ज्ञानकी प्राप्ति ऊई हो उस का नाम लोप जाने से ज्ञानावर्णी कर्म बान्धताहै। तर्क—क्या आत्मारामजी से कुछ ज्ञान पारवतीजी ने पढा है। उत्तरपक्ष—आत्मारामजीके करे ग्रन्थोंसेपढकर महत्वता को प्राप्त ऊई है, करता और तिस की कृत्य में भेद नही होता एतले जिस के किये ग्रन्थ से ज्ञान की प्राप्ति ऊईहो उसका नाम लोप जाने से ज्ञानावर्णी तथा मोहनी कर्म जीव बांधता है बसइतना ही दोष है। उत्तर पक्ष और भी बऊत दोष हैं सोई दिखाते हैं

जिस की कृपा से पण्डित ऊआ था उस का नाम लोपने से दगेबाजी अर्थात माया का दोष ऊआ जब माया ऊई तब बऊत दोषऊए देखो सूयडांग सूच क्या कहता है।

जइविय णिगिणेकिसेचरे जइविभुजियमासमंतसो जेइहमायातिमज्जंति अगंतागभायणंतसो ॥

अस्यार्थः—दुर्बल नग्नमास उपवासी जो छै मयारंग तोपिणगरभ अणंता ले से बोले बीजुं अंग इति ॥ १ ॥ और देखिये इसी ज्ञानपीपिका ग्रन्थ में ऐसा लिखाकि निषेध्यों का ज्ञान आत्माराम को रञ्चक भी नही। क्योंकि हम तो भगवान का नाम जो सिमरण करते हैं वो तो भाव गुणों का सि-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

मरण है, ऐसा लेख पृष्ट ८२ पर है। और ज्ञानदीपिका पृष्ट ४७ पर ऐसा लेख है हम भौ तो भाव निक्षेपे में सीमन्धरस्वामी अर्थात वर्तमान तीर्थंकर अतिशय संयुक्त विचरते हैं उनहीको भावतीर्थंकर मानतेहैं अबबुद्धिवान को विचारना चाहिये भाव गुनोका स्मिरण ऐसा लेख किसी जैन सूत्र में नही है और हर एक वस्तु के कमसे कम चार निक्षेपे होते हैं ऐसा कथन श्री अनुयोग द्वार सूत्र में है भगवंतके नामगोत्रकेश्रवण करनेसे महाफल श्रीउववाई सूत्रमें कथनकरा प्रगटपाठ है और पृष्ट९८पर देखो कैसा मूर्खताका लेखहै सो एह हैं मूर्ति के मण्डन करने को भी अनेक राह हैं और खण्डन करने को भी अनेक राह हैं परन्तु असल में तो यौं है कि मूर्ति का मण्डन भी हठ है और खण्डन भी हठहै तत्व

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

केवली जानते हैं और जो पाटावली लिखी है सो सिरफ झूठ और मन कल्पित लिखी है क्योंकि जो झूठ होता है वो अवश्य जाहिर होजाताहै सो इन ढूंढकों की पटावली जो कि अभी बहुत लोगों के पास मजूद है और मेरे पास भी मजूद है उससे मुकाबला किया पारवतीजी का लेख निरोल झूठा जाहिर होता है इत्यादि, ज्ञानदीपिका ग्रन्थ का लेख देख कर, हे मित्र पारवतीजी को जैन रहस्यकी अज्ञात कथनकरी है किंबहुना

तर्क—इस ग्रन्थ बनाने का आपका क्या प्रयोजन है। उतर—हे मित्र जौनसे ज्ञानवान और गीतार्थ हैं उनको यह मेरा बनाया ग्रन्थ ढूंढक मत समिच्छारूप प्रश्नोत्तर पंचास का कुछ उपकार नही कर सकता जैसे समुद्र

में एक जल बिंदुको गेरकर समुद्र पर उप-
गार करे वो पुरुष मूर्ख है क्योंकि वो तो आगे
ही समुद्र है वा एक बून्दको क्या गिनती है
और जो मतरूप भंगके नशेमें आये हुयेमत
जंगी है उनको भी यह मेरा बनाया ग्रन्थ
कुछ उपगार नही करसकता क्योंकि उनको
तो आगे ही सुद्ध बुद्ध मारी हुई है और जो
अतिशे मूर्ख हैं उनको भी यह ग्रन्थ उपगारी
नही क्योंकि ग्रन्थ करता का आशयन समझ
ने से वो अपना फैदा क्योंकर उठावेंगे इस
लिये जौणसे भव्यजीव जिन आज्ञा रुची है
वो तो इसग्रन्थको आदिसे अन्तपर्यंत सुनकर
और वाचकर जरूर तत्वको प्राप्त होवेंगे
और मेरी ग्रन्थ बनाने की महनत तब ही
सफलता को प्राप्त होवेगी इस ग्रन्थके वाचने
वाले सज्जणों से ग्रन्थकर्ता नम्रत होकर यह

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्जकरता है कि मेरेको प्रथम तो शब्दशास्त्र का किंचित भी बल नही है और दूसरा पूर्वाचार्यों के ग्रन्थ न पढ़ने से और न सुनने से संपूर्ण जैन संप्रदाय का भी मैं आज्ञातहूं इस लिये जो लिपीदोष हो सो सुद्धार कर वाचना और जो जैन पंचांगी से कोई कथन विरुद्ध हो वो भी गीतार्थों से निर्णय करके सुद्धार लेना यह काम मेरे पर कृपा नजर से करणा और सर्व धर्म का मूल जैन शास्त्रोंमें सम्यक्त कथन करा है सम्यक्त तब हो प्राप्त होती है जब सिद्धांत में कहे कथनको अभिमान से रद्द न करे जब सिद्धांत का अक्षर देखे तब हो झूठ कदाग्रहको छोड़कर शास्त्रानुसार कथन को कबूल करे ऐसी निर्मल बुद्धी वाला प्राणी जिन आज्ञा की आराधिकर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अपना जन्म सुफल करता है और इस ग्रन्थ में जहां जहां हे भाई अथवा हे मित्र ऐसा संबोधन दिया है तिसका यह मतलब है कि जिस भाई की अपेक्षा यह ग्रन्थ की रचना हुई है तिस ढूण्ढक भाई को ही पूर्वोक्त संबधोन दिये हैं

॥ दोहा ॥

१ । ८ । ४ । ६
केवल निधि गति दरब के उत्तममासगुणमास
शुक्लपक्षदुतीयादिने गुजरवालविख्यात ॥

॥ सोरठा ॥

१ श्रीगुरू बूटेराय श्रीआनन्द विजय गुरू तासचरण सुपसाय मुझ मननी आसा फली २ ओसवाल जयद्याल बरड जात है जेहनी गुरू किरपा थी आज यहग्रन्थ संपूर्ण

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कियो ३ जिन आगम थी जेह वचन विरुद्ध
में भाषी या मिच्छा दुक्कडतेह अरिहंत सिद्ध
छे साखीया ४ विनती मोरी एह किरपाकर
इस ग्रन्थ को शुद्ध करो गुण गेह मुझपर
किरपा कीजिये ५ इति श्री ढूंढक समिच्छा
ग्रन्थ समाप्त सम्बत १९४७ मासोत्तमे मासे
ज्येष्ट शुक्ल दशम्यां वृहस्पति वासरे लिपी कृतं
बेलीराम शर्मणः गुजरांवालेमध्ये जैन मन्दिरे
श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रसादात् यादा शुभंभूयात्

६ । ४ । ९ । १ ।
दरब गती निद्र केवलं १ ९ ४ ६ दोहे के
प्रथमपद का पाठांतर है । इति ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.　　　　Jin Gun Aaradhak Trust